f'k[kd dh dye l

सफर अणुव्रत संकल्पों का

(अणुव्रत कविता-कहानी-नाटक संकलन)

प्रकाशक

vf[ky Hkkjrh; v.kqor U;kl] ubZ fnYyh

© अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

lLdj.k% 2017
vk'khoZpu% महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण

lEiknd e.My% सम्पतमल नाहाटा
विजय वर्धन डागा
सुशील बोथरा

dk;Zdkjh lEiknd% महेन्द्र शर्मा

l;qDr lEiknd% रमेश काण्डपाल

ewY;% ₹100.00

çdk'kd% अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110002

eqæ.k% इंद्रप्रस्था प्रैस (सी.बी.टी.)
4 बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–110002

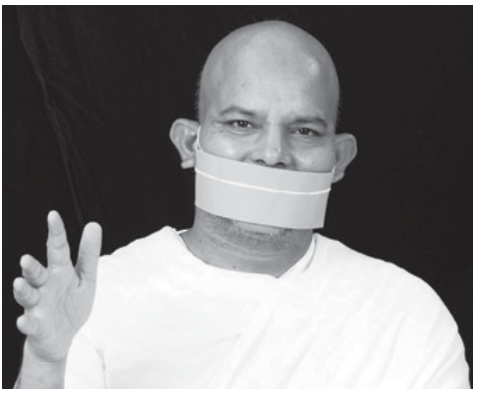

vkpk;l Jh egkJe.k

।। अर्हम् ।।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी बीसवीं सदी के एक महापुरुष थे। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन के रूप में मानवजाति को एक महान अवदान दिया। अणुव्रत संयम, नैतिकता और चरित्रनिष्ठा से जुड़ा आन्दोलन है। उसे स्वीकार कर आदमी अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

'अणुव्रत न्यास' गत अनेक वर्षों से शिक्षा जगत् में अणुव्रत के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से प्रयत्नशील है। प्रस्तुत पुस्तक उसी प्रयत्न का प्रतिफल है। इसका रसास्वादन कर जनता आध्यात्मिक पोषण को प्राप्त हो। शुभाशंसा।

पावापुरी, बिहार

vkpk;l egkJe.k

अध्यापक विद्यार्थियों के जीवन–निर्माता

lEirey ukgkVk

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी 20वीं सदी के एक विशिष्ट महापुरुष थे, उनका कर्तृत्व बहुमुखी था। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से उन्होंने सफल धर्मक्रांति की। नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की पुनःप्रतिष्ठा के लिए भगीरथ प्रयत्न किया। शिक्षा के क्षेत्र में उनका महान अवदान है। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में एक बार कहा था कि आज राष्ट्र के समक्ष अनेक करणीय कार्य हैं। उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक करणीय कार्य है राष्ट्र के भावी कर्णधारों का जीवन निर्माण करना। विनय, नम्रता, सदाचार आदि गुणों से जब तक वह संपन्न नहीं होगा, तब तक राष्ट्र विकास की राह पर अग्रसर नहीं हो सकेगा।

विद्यार्थियों के जीवन निर्माण की जिम्मेदारी किसकी है ? यों तो माता–पिता, घर–परिवार और पास–पड़ोस सभी की यह जिम्मेदारी है, पर सर्वाधिक जिम्मेदारी है अध्यापकों की। वे ही वस्तुतः उनके जीवन–निर्माता हैं। इस स्थिति में उनके लिए आवश्यक है कि उनका जीवन विद्यार्थियों के लिए एक बोलता चित्र हो। सैकड़ों पुस्तकें पढ़ लेने पर भी एक विद्यार्थी को उतना ज्ञान नहीं हो सकता, जितना उसे अध्यापकों के जीवन एवं जीवन–व्यवहार से हो सकता है।

इसका कारण बहुत स्पष्ट है विद्यार्थियों का मानस अनुकरण प्रधान होता है। वे जैसा आचरण और व्यवहार दूसरों को करते हुए देखते हैं, वैसा ही आचरण स्वयं भी करने लगते हैं। इसलिए अध्यापक अपनी इस जिम्मेदारी के प्रति गंभीर बनते हुए सबसे पहले स्वयं का जीवन निर्मित

करें। जिसका स्वयं का जीवन निर्मित नहीं है, वह दूसरों का निर्माण कैसे कर सकेगा? निर्मित ही दूसरों का निर्माण कर सकता है। अध्यापक यह व्याप्ति हृदयंगम करें कि उनका अपना निर्माण ही विद्यार्थियों का निर्माण है और विद्यार्थियों का निर्माण ही समाज और राष्ट्र का निर्माण है।

कई बार यह प्रश्न भी सामने आता है कि विद्या का सही उद्देश्य क्या है। विद्या का सही उद्देश्य है आत्मज्ञान की उपलब्धि। प्राचीन ऋषि–महर्षियों ने उस विद्या को विद्या नहीं माना है, जो आत्म–संवेदन से परे हो, आस्तिकता से परे हो। यह कितने गंभीर चिंतन की बात है कि आज विद्या के स्थान पर अविद्या तथा आस्तिकता के स्थान पर नास्तिकता पनप रही है, व्यापक फैलाव पा रही है। जिज्ञासा की जा सकती है कि इसका मुख्य कारण है शिक्षा–प्रणाली का दोषपूर्ण होना।

आज की शिक्षा विद्यार्थियों को विनय, नम्रता, अनुशासन, सत्य, नीति–निष्ठा, प्रामाणिकता जैसी बातों का पाठ नहीं पढ़ाती। इसी का यह दुष्परिणाम है कि विद्यार्थी आगे चलकर उच्छृंखल और उदंड बन जाते हैं। झूठ, फरेब, चोरी जैसी दुष्प्रवृत्तियों में फंसकर अपना जीवन बर्बाद करते हैं। इसलिए इस बिंदु पर गंभीरता से चिंतन आवश्यक है ताकि शिक्षा प्रणाली दोषमुक्त बनाई जा सके।

अध्यापकों व विद्यार्थियों में भावनात्मक संबंध होना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि अध्यापक की पढ़ाने की शैली जितनी सरल व आत्मीयता लिए होगी विद्यार्थी–हृदय में वह उतनी ही उतरती चली जायेगी। सिर्फ पढ़ाना ही यदि कोई अध्यापक अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ले तो वह शिक्षा जैसे पवित्र कार्य के लिए न्यायसंगत नहीं होगा। इससे न विद्यार्थी का भला होगा न ही अध्यापक संतुष्ट हो पायेगा। इसलिए जरूरी है दोनों पक्षों का भावनात्मकता विकास हो।

भावनात्मक विकास व साहित्य लेखन में परस्पर गहरा संबंध है। चूंकि साहित्य–सृजन भावनाओं व संवेदनाओं के ऊपर टिका हुआ है। जहां संवेदनाएं नहीं वहां लेखक नहीं, जहां भावनाएं नहीं वहां लेखन नहीं।

इसलिए जो अध्यापक अध्यापन ही नहीं लेखन भी करता है वह सोने में सुहागे के समान है। कविता, नाटक, कहानी के माध्यम से जो शिक्षक विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं उसे विद्यार्थी जल्दी हृदयंगम करते हैं और शिक्षक की बात उनके सीधे गले उतर जाती है। शिक्षक हेतु भी यह आवश्यक है कि वह अपने विषय को रूचिकर बनाने हेतु कहानी, कविता का सहयोग ले।

कविता, कहानी, नाटक लेखन एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कवि–लेखक समाज की नब्ज पकड़ कर उसे नैतिकता, संस्कारों के पुष्पों से सुसज्जित कर सकता है। आज अणुव्रत की विचारधारा को अपनाकर कितने ही अध्यापक अपने विद्यार्थियों को जोड़कर उनमें नैतिकता के साथ–साथ सद्गुणों का विकास कर रहे हैं। यह एक रचनात्मक कदम आने वाले समय में विद्यार्थियों में भी रचनाधर्मिता के अंकुर प्रस्फुटित करेगा।

अध्यापकों एवं विद्यार्थियों से एक बात विशेष रूप से कहना चाहता हूं कि वे अपने जीवन में श्रद्धा को प्रश्रय दें। श्रद्धा में अद्भुत शक्ति होती है, पर इस शक्ति का अनुभव वे तभी कर पायेंगे जब वे स्वयं श्रद्धाशील बनेंगे। मैं आशा करता हूं कि अध्यापक और विद्यार्थी दोनों ही इस बिंदु पर अपना ध्यान केंद्रित करके श्रद्धा एवं तर्क का संतुलन कायम करेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक 'सफर अणुव्रत संकल्पों का' भाग–7 शिक्षकों द्वारा लिखित कहानी, कविता, नाटक लेखन कौशल का उत्कृष्ट नमूना है। मैं इस पुस्तक में संकलित शिक्षक लेखकों, पुस्तक में अपना श्रम लगाने वाले अणुव्रत कार्यकर्ताओं का हृदय से धन्यवाद करता हूं कि हम सब मिलकर आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के सपनों को साकार करने में अपना सहयोग दें एवं पुनः भारत को सर्वोच्च स्थान पर आसीन करें।

lEirey ukgkVk
प्रबंध न्यासी
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

शिक्षक चरित्र निर्माण का प्रहरी

lq'khy ckFkjk

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी भारतीय संत परंपरा के मूर्धन्य संत थे, उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा था कि विकास की विभिन्न योजनाएं बनती रही हैं। आज भी बन रही हैं, पर यह बात दिन के उजाले की तरह बिल्कुल स्पष्ट है कि उनका अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आ रहा है। इसका क्या कारण है? कारण बहुत स्पष्ट है। आज राष्ट्र में चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। जब मानव अपना मानवीय एवं नैतिक धरातल भी सुरक्षित नहीं रख पाता है, तब कोई अच्छी से अच्छी योजना भी सफल कैसे हो सकेगी? आखिर किसी योजना की सफलता विफलता उसी पर तो निर्भर करती है। इसलिए आज की सबसे पहली अपेक्षा यह है कि हम अन्य सभी बातें गौण करके मानव को मानव बनाने की योजना को कार्यरूप दें। उसके जीवन को सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता, चरित्रनिष्ठा, सदाचार जैसे तत्वों से भावित करने का अभियान चलाएं।

अणुव्रत–आंदोलन एक ऐसी ही योजना है, जो जन–जन को मानवीय धरातल प्रदान करती है। दूसरे शब्दों में अणुव्रत आंदोलन अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह आदि पर आधारित छोटे–छोटे नियमों की एक ऐसी संकलना है, जो व्यक्ति को दुष्प्रवृत्तियों से दूर रखती हुई उसे सदाचार के सांचे में ढालती है, उसके लिए पवित्र, नैतिक एवं प्रामाणिक जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करती है। जब तक यह योजना जन–जन में व्यापक रूप में नहीं फैलेगी, लोग इसे अपने जीवन का अंग नहीं बनाएंगे, तब तक कितनी ही योजनाएं क्यों न बन जायें, राष्ट्र का सही विकास नहीं हो सकेगा।

लोग इस आंदोलन को समझें और इसकी आचार–संहिता स्वीकर करें। निश्चय ही सच्चे मानव बनने का गौरव प्राप्त कर सकेंगे। इस श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए 'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' राष्ट्र स्तर पर वृहद रूप से नैतिक मूल्यों पर आधारित रचनात्मक कार्यक्रम संपादित कर रहा है। जहां विद्यार्थी वर्ग में अणुव्रत का वृहद कार्य हो रहा है वहीं शिक्षक वर्ग में व्यापक स्तर पर चरित्र –निर्माण हेतु कार्य हो रहा है। अणुव्रत संकल्पों के माध्यम से शिक्षक वर्ग जहां कविता, कहानी व नाटक के माध्यम से अणुव्रत को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करता है वहीं इस आंदोलन के साथ जुड़कर विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण के लिए न्यास के साथ कंधे से कंधा मिलाकर इस नैतिक कार्य में संलग्न है।

'सफर अणुव्रत संकल्पों का' भाग–7 पुस्तक में जहां शिक्षक वर्ग ने रोचक कविताएं, कहानियां व नाटक प्रस्तुत किये हैं वहीं हमारे न्यास के कर्मठ कार्यकताओं ने इसको सुन्दर रूप देने में अथक श्रम किया है। मैं संलग्न कार्यकताओं व शिक्षक वर्ग को बहुत शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूं कि आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित एवं वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के कुशल मार्गदर्शन में अणुव्रत रूपी मंत्र को जीवन में उतारकर अणुव्रत के इस सफर में सतत् अग्रसर रहेंगे।

l|'khy ckFkjk
राष्ट्रीय संयोजक
अणुव्रत कविता, कहानी, नाटक लेखन प्रतियोगिता

अनुक्रमणिका

Øe l[;k	'kh"kd	y[kd@yf[kdk dk uke	i"B l[;k
1.	दुख में नित हर्षाया कर	रामदत्त मिश्र	3
2.	हिम्मत न हार	अनुभूति जैन	5
3.	सद्भावना	सुभाष कुमार	7
4.	नशे की भयप्रद छाया	सुषमा शर्मा	9
5.	निर्मल बनें मन	उर्मिला	11
6.	मानवता रही पुकार	सोनिया बुद्धिराजा	12
7.	यही तो है सद्भावना	मदन कौशिक	14
8.	गूँजे आदर्शों की सरगम	वी. सुजाता	15
9.	निज–गौरव बढ़ाइये	सीमा सिंह	17
10.	समन्वय में ही सार	चित्रा जैन	18
11.	मोहक जलवे	सुलभा मिश्रा	20
12.	कहाँ खो गया मेरा भारत?	मंजू दूबे	21
13.	दिशाहीन मूल्य	अलका शर्मा	23
14.	मेरा यह पंजाब	प्रीतपाल सिंह	24
15.	नशा करो देशप्रेम का	दीपा पांडे	26
16.	अमन की आशा	श्यामा शर्मा नाग	28
17.	जहाँ–जहाँ अच्छाई हो	अनीता शर्मा	29

Øe l[;k	'kh"kd	y[kd@yf[kdk dk uke	i"B l[;k
18.	नैतिकता के दोहे	सिम्मी बिंद्रा	31
19.	काश! ऐसा हो जाए...	जैनेट पॉल	32
20.	नैतिकता ही धर्म हमारा	ममता वर्मा	34
21.	मुस्कराना धर्म है	अन्विता वर्मा	36
22.	चलें सत्य की ओर	कौशलेंद्र गोस्वामी	37
23.	मेरा रास्ता	मनीषा बर्थवाल	38
24.	नशे से बचाएँगे	रेखा राव	40
25.	सद्भावना है सुंदरता	शिल्पा रा. जोगलेकर	41
26.	सेवा–गंगा	किरण शर्मा	42
27.	यह कैसी खामोशी?	दीपक	43
28.	सद्भावना रैली	सुमिता श्रीवास्तव	45
29.	कामना है मेरी	राघवेंद्र पांडेय	46
30.	...यह दोबारा हो	कविता वत्स	48
31.	थी मैं अकेली	ज्योति संजय बालापूरे	49
32.	नशे का उपचार करो	अजीत कुमार मोदी	51
33.	नैतिक मूल्य	दीपमाला	53
34.	भटके हुए राही	ज्योति सेतिया	54
35.	व्यसन से दूर रहो	मनीष सोनी	56
36.	संस्कारों के फल	संतोष माली	57
	dgkuh		
37.	पुण्यतिथि	रीता आग्रे	59
38.	इच्छा–शक्ति	पूजा चुघ	64

Øe l[;k	'kh"kd	y[kd@yf[kdk dk uke	i"B l[;k
39.	समय बड़ा निष्ठुर है	तृष्णा दत्ता	68
40.	अनछुए पल	संगीता शर्मा	72
41.	डोर	नीतू लांबा	77
42.	मायाजाल	मेघना श्रीनिवास सावंत	82
43.	...यह कैसा साथ?	मनीषा यादव	86
44.	पिता की सीख	सरिता बांसल	92
45.	घटता–बढ़ता चाँद	संतोष माली	95
46.	सच्चा कलाकार	आकांक्षा शर्मा	100
47.	मजदूरी बनाम मजबूरी	श्रद्धा पांडेय	108
48.	नया अध्याय	मधु कौशिक	113
49.	सुनहरी आशा	निशा त्यागी	117
50.	दृढ़–संकल्प	कृष्णा बनर्जी	120
	ukVd		
51.	तीन हिस्से	विनोद नायक	125
52.	संदेश	मनीष सोनी	153
53.	निराश न हो मन	मंजू बक्शी	158
54.	नव प्रभात	विनीत कुमार उपाध्याय	168
55.	अथश्री दिल्ली कथा	प्रणीता	176
56.	समय : एक मूकदर्शक	भरत नरूले	183
57.	जरा सोच–समझकर	मीनू शर्मा	189

भाग-1

कविता

दुख में नित हर्षाया कर

◈ **jkenÙk feJ**
जैन समनोपासक सी.सै. स्कूल
सदर बाजार, दिल्ली

दुख में नित हर्षाया कर,
सुख के गीत सुनाया कर।
खेला है तू जिस वसुधा पर,
उसके भी गुण गाया कर।

शोषित–पीड़ित देखे न्यारे,
वे सब हैं वसुधा को प्यारे।
तन–मन से वे सेवा करते,
बनकर के जग के रखवारे।
जिस घर में हो भूख–वेदना,
उस घर में भी जाया कर।

दुर्दिन जब आता है जग में,
विपद–वेदना होती पग में।
देख सफलता भी मुर्झाती,
स्वजन, मीत धोखे बतलाती।
हिम्मत, श्रम को भुज में भरकर,
साथ में अपना साया कर।

केवल सुख मिलता कब किसको,
भाग्य उसी का, श्रम है जिसको।
सुख–दुख सबको अपना मानो,

जग के कंटक इनको जानो।
मिलें तुझे दुख जग में आकर,
उनको भी अपनाया कर।

सेवा, पर उपकार सहारे,
दीन–दुखी जग के सब तारे।
भाव–निराशा मन से छोड़ो,
द्वेष–कपट से नाता तोड़ो।
बनकर के 'अनमोल' रतन–सा,
निर्मल अपनी काया कर। ◈

हिम्मत न हार

◈ **vuHkfr tu**
सेक्रेड हार्ट कान्वेंट स्कूल
सराभा नगर, लुधियाना, पंजाब

किताबों के पन्नों में सिमट गई
नैतिकता की बातें,
आधुनिकता की दौड़ में खोखले
तमाम रिश्ते–नाते।
आज–
दया भीख माँग रही है,
सच्चाई सरेआम बिक रही है।
बस छल और स्वार्थ
चारों तरफ हैं लहराते,
ईमान रोता है तब
जब बेईमान उसे ठेंगा दिखाते।

हैवानियत के चक्रव्यूह में
अपने ही अपनों को फँसाते
सिर्फ भ्रष्टाचार से ही
हम अपना वजूद बनाते।
न्याय अंधा हो चुका है,
अपराध कमाई का धंधा हो चुका है।
पाश्चात्य संस्कृति को
को युवा से दिखाते
और हम प्रगतिशील होने का
ढोल हैं बजाते।

ऐसे में...ऐसे में ऐ दिल
किताबों के पन्नों को खोल जरा,
हर लफ्ज़ का मौल तोल जरा।
कह गए थे जो बुजुर्ग हमारे
नैतिकता के पाठ वो सारे,
हवाओं का रुख कैसा भी हो
ज़मीर जिंदा रख सच बोल जरा।

हे मानव! उठ, हिम्मत न हार,
न कर अपनी परवरिश बेकार।
भर दे बच्चों में प्रेम, दया और
करुणा के संस्कार,
कर दे भावी पीढ़ियों पर उपकार।

जाग जाए वो मानवता
मिटा दे सारे भेदभाव,
खोल दे समानता के द्वार,
जहाँ से ऐसी रोशनी आए
हर शख्स को यह दुनिया भाए।
हर कोई एक–दूसरे को
नैतिकता का पाठ पढ़ाए।

राग–द्वेष की मैल को
मन से निकाल कर,
सदियों की नैतिक धरोहर
को संभाल कर,
आओ! देश–दुनिया को
एक नया रूप दें,
आधुनिकता की दौड़ में
खुद को
नए इंसान का स्वरूप दें। ◈

सद्भावना

◈ lHkk"k dekj
ओ.पी. जिंदल स्कूल, रायगढ़
छत्तीसगढ़

सद्भावना की आँच धीमी पड़ गई है,
इस पर पकते हुए गुलगुले
स्वाद में खरे नहीं हो रहे।
देश के चूल्हे में भाईचारा, एकता और मानवता
की लकड़ियों का ताप मंद पड़ गया है।
सांप्रदायिकता और वैमनस्यता की तेज हवा
कानून के ढकने को ढकेलकर
सद्भावना की आँच को बुझाने पर तुली हुई है।
सोचता हूँ, माँ ने तो कहा था–
यह गांधी, गौतम और महावीर का देश है।

कितना भोला था मैं,
लगता था कि दुनिया का यह अनूठा देश
अपने पुरखों की थाती पर
किसी की नजर नहीं लगने देगा
पर यहाँ तो
भगवा, हरा, पीला और सफेद रंग
संप्रदायों से पहचाना जाने लगा,
व्यर्थ की संसद में बहसें होने लगीं।

मास्टर जी ने भी पढ़ाया था

हमारा वतन–हमारी पहचान,
हमारी सद्भावना कभी
नष्ट नहीं होगी।

अब मास्टर जी रहे नहीं,
माँ भी चल बसीं,
पर अभी भी समझ नहीं पा रहा कि
झूठे वे लोग थे या कच्चे हम निकले?

बहरहाल,
सद्भावना की धीमी आँच के
अधपके गुलगुले
खाए नहीं गए।
चौराहे के कोने में बैठे भिखारी को
देते समय बरबस पूछ बैठा–
बाबा! किस बिरादरी के हो?
बूढ़ा ऊपर से नीचे तक
निहारकर बोला–
'भूखा हूँ'। ◈

नशे की भयप्रद छाया

◈ l"kek 'kek
जे.के. पब्लिक स्कूल, कुंजवानी
जम्मू, जम्मू–कश्मीर

क्या बतलाऊँ अपनी व्यथा,
युवा वर्ग भारत का
क्यों कर रहा नशा।
तूफानों–भूचालों की भयप्रद
छाया में
क्यों अकेला विचरण कर रहा।

क्यों साथी तुमने नशे को बनाया है,
क्यों माँ की कोख को
जीते जी इस दर्दनाक जहर
से जलाया है।
तुम्हें क्यों नहीं पता नशे से
जीवन हो जाता है बेकार,
पान–पत्ती छोड़ कर तू क्यों
नहीं खाता सेब–अनार।

माँ के आँचल में खिले...
पिता ने वार दिया
तुम पर सब कुछ,
अध्यापकों ने नैतिकता का मंत्र
तुम्हें ऐसा रटाया,
फिर क्यों तू

यूँ जीवन से घबराया
जो नशे को अपना साथी बनाया।

दासत्व तुमने क्यों इस नशे
का स्वीकार किया,
नैतिकता का दामन तुमसे
इस दानव ने कैसे छीन लिया?

यह एक असाध्य रोग है,
तुझे इससे लड़ना होगा
इस लत को अपने जीवन से
दूर करना होगा।

मेरे प्यारे नौजवान!
नवीन भारत का तुम कैसे करोगे निर्माण
जब तुम्हारी ही न रहेगी
अपनी कोई पहचान!
नशे की आदत तुम्हें हर मोड़ पर
करती रहेगी परेशान,
तुम्हारा लुट जाएगा सारा सम्मान।

प्रभु के इस अनमोल मानव जीवन को
नशे की भेंट मत चढ़ा,
दूसरों के प्रति कुछ करने की आस तू जगा,
उसमें ही परम सुख है
उस सुख का आनंद तो उठा। ◈

निर्मल बनें मन

◈ **mfe!yk**
दयावती मोदी अकादमी–I
मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश

शांति हो, सद्भावना हो, भाईचारा हो,
हे प्रभु! मेरे वतन में यह दुबारा हो।
द्वेष की दलदल से बाहर कर हमें भगवन,
हर कलह की कालिमा, निर्मल बनें सब मन।
फिर धरा पर वह सुधामय प्रेमधारा हो,
हे प्रभु! मेरे वतन में यह दुबारा हो।

बुद्धि दे इतनी असत्–सत् जान जाएँ हम,
और बल इतना कि शोषित हो न पाएँ हम।
प्राण से बढ़कर हमें कर्तव्य प्यारा हो,
हे प्रभु! मेरे वतन में यह दुबारा हो।

नशे को मानव समझने है लगा अधिकार,
और नशे से हो रहा जीवन बड़ा बेकार।
दूर व्यसनों से सदा जीवन हमारा हो,
हे प्रभु! मेरे वतन में यह दुबारा हो। ◈

मानवता रही पुकार

◈ lkfu;k cf) jkt k
नेशनल विक्टर पब्लिक स्कूल
पटपड़गंज, दिल्ली

समुद्र के किनारे
बैठी मैं
अकिंचन।
देखती रही उसका धैर्य
अथाह जलराशि...
किंतु
अहंकार नहीं।
आश्रय देता है वह
थकी–हारी सरिताओं को,
पहुँचाता है मंज़िल पर वह
जाने कितने राहगीरों को।

उसका विशाल अस्तित्व
सीमित नहीं,
असीम है...।
खारा कहती दुनिया
उसके जल को,
किंतु
जीवन में
लवण की पूर्ति
उसी से है होती।

देखकर उसकी सद्भावना
किया मैंने उसे नमन।

सहती रही है
मानव के दुष्कर्मों को,
करती है विलाप,
जब बढ़ जाता दुराचारी का पाप।
आह! क्यों नहीं सीखता
पतित माता से
सद्भाव का आचार।

सोचती रही मैं घंटों,
हे प्रभु! हे सृष्टि के रचयिता!
रच दिया इतना बड़ा संसार,
प्रकृति के
कण–कण में डाले प्राण,
दिया उसे सद्भावना का दान।
फिर क्यूँ भूल गए तुम
इस मानव को, बना नादान।

विश्व–शांति की है आवश्यकता
इस धरा को,
विश्व–बंधुत्व के सद्भाव
अब पल्लवित हों!
हो चहुँओर प्रेम का प्रसार,
मानव को मानवता
अब रही पुकार।
आओ, विश्व में हो अब
सद्भावना का विकास। ◈

यही तो है सद्भावना

◈ **enu dkf'kd**
वैश्य मॉडल सी.सै. स्कूल
भिवानी, हरियाणा

पर–हित की हो कामना,
मिलो प्रेम से जब हो सामना।
नहीं रखनी हमें दुर्भावना,
यही तो है सद्भावना।

मन में अच्छे विचारों को स्थान दें,
अपने कर्मों को ऊँचा उत्थान दें।
हम सब भारत माँ के बेटे हैं,
जाति–बंधन से मुक्त रहें।
आपस में विश्वास करें,
सद्भावना से युक्त रहें।

लड़ाई बिल्कुल नहीं कल और आज हो,
एकता से युक्त हमारा समाज हो।
ना जात–पात का नारा हो,
सर्व समाज हमारा हो।
कोई नहीं हो न्यारा–न्यारा,
आपस में हो भाईचारा।

जिस जीवन में संयम वो खास है,
अणुव्रत के बिना जीवन सूखी घास है।
कट्टरता नहीं आती किसी को भी रास है,
सद्भावना की कमी से समाज निराश है। ◈

गूँजे आदर्शों की सरगम

◈ oh- l|tkrk
दिल्ली पब्लिक स्कूल
विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

उन्नति की आड़ में
हो गया नैतिकता का पतन,
आदर्शों का गला घोंट
इंसान कर रहा कमाने का जतन।
असीमित आकांक्षाओं के गगन में
भर रहा है उड़ान,
भूल गया इस दौड़ में
छिन गई उसकी मुस्कान।
दौलत की होड़ में
इतना हो गया व्यस्त,
कि अपने रिश्तों को
कर रहा क्षतिग्रस्त।

इतना हो गया है कठोर
कि माता–पिता हैं बोझ,
इन रिश्तों को समझने के लिए
बालक करे शोध।
नहीं सुनाई देते आजकल
घरों में नैतिकता के मूलमंत्र,
आधुनिकता की चकाचौंध ने
कर दिया वशीकरण।

खत्म हो गए संयुक्त परिवार के
चलन और परिवेश,
अब कहाँ मिलेगा बालक को
नैतिकता का समावेश।

नैतिकता का ज्ञान भी
विद्यालय से हो गया लुप्त,
'मोरल साइंस' भी संग्रहालयों
से हो गए विमुक्त।
मिले जो धरोहर में
महापुरुषों के आदर्श और उसूल,
इनका रहा न मोल
महज पन्नों में रह गया वजूद।
हे भविष्य के निर्माता
कर ऐसी वसुंधरा का निर्माण,
जहाँ नैतिकता का स्रोत हो
जो करे जगत–कल्याण।
फिर से धरती पर गूँजे
आदर्शों की सरगम,
सच्चाई, उदारता और नैतिकता
का हो फिर से संगम। ◈

निज–गौरव बढ़ाइये

◈ **lhek flg**
कार्मेल कॉन्वेंट स्कूल
सेक्टर–9 बी, चंडीगढ़

नानक, पैगंबर, जीसस, बुद्ध, महावीर, कृष्ण
दे गए संदेश सद्भाव अपनाइए,
दया भाव रख, प्रेम दीपक जला करके
मानव कल्याण, विश्वशांति फैलाइए।

जातिवाद, धर्मवाद और संप्रदायवाद
वाद के विवाद को, विवाद न बनाइए,
भाषा, रंगरूप और जाति के विवाद बहुत
तोड़ सब विवाद, एकरूपता बनाइए।

हो चुके विवाद बहुत, मंदिर और मस्जिदों के
त्याग सब विवाद, मन श्रेष्ठ भाव लाइए,
सत्य व अहिंसा–भाव मन में उतारकर
भारत की एकता–अखंडता बचाइए।

नेकी कर कुएँ में डाल, युग–पुरुषों के समान
कर मनुज–रक्षा, न्याय–पताका फहराइए।
हार–जीत क्या, सफलता और असफलता क्या
जीत हर हृदय को निज–गौरव बढ़ाइए। ◈

समन्वय में ही सार

◈ **fp=k t|u**
सेठ तोलाराम बाफना अकादमी
गंगाशहर, बीकानेर, राजस्थान

जीवन वैमनस्य का नाम नहीं,
समन्वय में ही सार है।
छल–झूठ, फूट–कपट नहीं,
सहिष्णुता ही जीवन का आधार है।

समरसता और सरसता तो
जीवन की धारा है,
'जिओ और जीने दो'
भी क्या किसी से हारा है।
'सर्वे भवंतु सुखिनः' को
सभी ने स्वीकारा है,
'परस्परोग्रहजीवानाम्' पर तो टिका
अस्तित्व हमारा है।

मैत्री, करुणा और प्रेम के आगे
सारा जग भी हारा है,
पर आज भी इस तथ्य को
नहीं हमने स्वीकारा है।

क्यों कुछ आज भी
लाचार और बेसहारा हैं,
चहुँ ओर आतंक और असहिष्णुता ने
फिर क्यूँ पैर पसारा है?

निःस्वार्थता, निश्छलता और
सद्भावना बसी है
मूक प्रकृति के कण–कण में,
फिर चेतन होकर भी मनुज
क्यों न धरे इन्हें अंतर्मन में। ◈

मोहक जलवे

◈ lyHkk feJk
नचिकेता सीनियर सेकेंडरी स्कूल
विजयनगर, जबलपुर, मध्य प्रदेश

शब्दों के कितने लिबास हैं,
पता नहीं है कौन खास हैं।

भौतिकता के मोहक जलवे,
नैतिकता के स्वर उदास हैं।

हम सहमे हैं क्योंकि अब तो,
दोस्त हमारे आसपास हैं।

लोग विरोधाभासी लेकिन,
बाहर से सब अनुप्रास हैं।

स्वार्थ साधना की आँधी में,
क्यों समाज यह बदहवास है।

अधिकारों के लिए लड़ रहे,
कर्तव्यों का हुआ ह्रास है।

मानवता अब लुप्त हो रही,
दानवता आ रही रास है।

नैतिकता ही उन्नति–पथ है,
यह मेरा दृढ़–विश्वास है। ◈

कहाँ खो गया मेरा भारत?

◈ et nc
माउंट कार्मेल स्कूल
सेक्टर–22, द्वारका, फेज–1, दिल्ली

भारत जिसे कभी सोने की चिड़िया कहते थे,
माँ का सम्मान, वीरों की शान समझते थे,
आज उसकी जर्जर और बेबस दशा पर हँसी आती है,
दिल में उठती है पीड़ा, आँखों में नमी छा जाती है।
जिस घर में नारी को पूजा जाता था,
वह हँसता और खिलखिलाता था,
आज अस्मत उसकी बेची जाती है
सरेआम नुमाइशें की जाती हैं।
बेटी नाम सुनते ही कलेजा धड़कता है,
शायद ये मेरा भारत नहीं
कोई दूसरा ही भारत लगता है।

बच्चे, जो देश का उज्ज्वल भविष्य बनाते हैं,
खिलाकर कुछ ऐसा घर के चिराग ही बुझा देते हैं।
कलेजों के टुकड़ों का मरना भी आम नज़र आता है,
अपनी अंगुली में हुआ दर्द भी खास–सा बन जाता है।
किसी के मन में किसी के लिए कोई पीड़ा नहीं,
मन को जो उमंग से भर दे ऐसी कोई वीणा नहीं।
सुरक्षा के नाम पर असुरक्षा को सींचा जाता है,
शायद ये मेरा भारत नहीं
किसी और का ही चेहरा नजर आता है।

सच तो यह है कि
आतंकवाद, भ्रष्टाचार, महँगाई, नारी का अपमान
भारत के माथे पर कलंक लगाते हैं,
इन्हीं में लिप्त लोग ऊँचा पद और सम्मान पाते हैं।
सच्चाई, देश–प्रेम, सत्य की राह पर जो चलता है,
सड़कों पर नारे लगाता या सलाखों में नज़र आता है।
शायद ये मेरे भारत की नहीं
किसी और की कहानी लगती है।

जीवन के मूल्य को जानकर जीवन को जीना सीखो,
दुश्मन को गले लगाकर दुख में भी जीना सीखो।
हो सबके प्रति सद्भावना, हो सबके प्रति प्यार
जियो हर दिन ऐसे जैसे हर दिन हो त्यौहार। ◈

दिशाहीन मूल्य

◈ **vydk 'kekl**
श्रीमती एल.पी. सवाणी विद्या भवन
हनीपार्क रोड, सूरत, गुजरात

निकल आया है एक भयावह जंगल
जिसमें खो गए हमारे मूल्य,
समय का पढ़ाया पाठ
पढ़ा उजालों ने,
पर चुप होकर रह गया।

कहाँ गई वह सद्भावना
अंधकार के उठे हाथ
गुम हो गई रोशनी
आगे फैला है दलदल
मिटा दिए पूर्वजों के पद्चिह्न
खो गई है भीड़ में नैतिकता।

दिशाहीन हुआ है जनसमूह
भीतर ही भीतर बिल बनाते
जहरीले जीव–जंतुओं ने छोड़ा
और मानव ने अपनाया विष,
मद्यपान हो गया है अमृतपान।

कहाँ ले जाएगी यह चिन्गारी
कहाँ तक जाएँगे रथी रथ पर अपने
और कोलाहल में खोजने को सपने। ◈

मेरा यह पंजाब

◈ **ihriky flg**
डी.ए.वी. इंटरनेशनल स्कूल
बाईपास रोड, वर्का चौक, अमृतसर, पंजाब

नशों में डूब गया
मेरा यह पंजाब।
लाश कंधे पर ले जा रहा
देखा मैंने बाप।

आज उठाया नहीं जाता,
जिसे गोद में खिलाया था।
लाखों मन्नतों से
भगवान से जो पाया था।
आज कब्र में सो गए
बाप के सब ख़्वाब।
नशों में डूब गया
मेरा यह पंजाब।

राखी जब आई,
बहन पगलाई जा रही।
बैठ फोटो के वो आगे,
भैया को बुला रही।
भाई–बहन के प्यार का
कैसा ये हिसाब।
नशों में डूब गया
मेरा यह पंजाब।

माँ की कोख में
रहा जो नौ महीने।
आज जला गया आग वो
अंदर माँ के सीने।
लाश बेटे की वो देखकर
रोई बेहिसाब।
नशों में डूब गया,
मेरा यह पंजाब।

भारत देश की बगिया में,
जो ज्यादा था सबसे महकता।
दिन–ब–दिन अब यह,
सूख रहा है गुलाब।
नशों में डूब गया,
मेरा यह पंजाब। ◈

नशा करो देशप्रेम का

◈ nhik ikM
गुरुकुल इंटरनेशनल स्कूल
हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड

चारों ओर मच रहा हाहाकार,
नशे का बढ़ रहा देखो कारोबार।
इसकी लत जिसको लग जाए,
जग उसको फिर कभी न भाए।
अपनो से वो दूर हो जाए,
खुद को भी वह जान न पाए।

ईश्वर की दी हुई इस देह को
मानव कर रहा बर्बाद,
हो रहा है वह इस नशे का शिकार,
खुशी हो या गम में लोग इसे गले लगाते हैं,
पर वे हैं नादान उन्हें क्या पता
वे मौत की राह पर आगे बढ़ते जाते हैं।

देख कर ऐसे कोहराम को
दुखी हो रहा मेरा मन,
क्या कोई ऐसा उपाय है, या कोई
युक्ति जिससे मिल जाए मानव को
इन नशे से मुक्ति।

सबक सीख लो ओ पीने वालो
गम को तुम दोस्त बना लो,

नशे को तुम दुश्मन।
गम तुम्हें आगे ले जाएगा,
ठोकर तुम्हें राह दिखाएगी,
मंजिल भी फिर तुम्हें गले लगाएगी।

नशा करना ही है,
तो देशप्रेम का करो,
वतन पर मर मिटो कुर्बान हो जाओ,
अपने देश प्रेम के नशे से
पूरे जहान में ऐसा प्रकाश फैलाओ
नशे की इस गंदगी को दूर भगाओ। ◈

अमन की आशा

◈ ';kek 'kekl ukx
एहल्कॉन इंटरनेशनल स्कूल
मयूर विहार, फेज–1, दिल्ली

गैर भी हो जाएँगे अपने तुम्हारे,
एक पल शिकवों को मिटा कर तो देखो।
तसव्वुर देगा यह अहसास ज़िंदगी भर,
एक पल हमारी तरफ मुस्कुराकर तो देखो।

मुस्कराहटें लाती हैं असीम खुशियाँ,
अपनी कायनात को रोशन करती है दुनिया।
औरों के आँगन में दीये जला कर तो देखो,
एक ऐसी दीवाली मना कर तो देखो।

अहसान मानते हैं उसके रहमो–करम का,
हर कदम पर पाते हैं उसकी दुआएँ।
औरों पर दुआ बरसा कर तो देखो,
एक ऐसा जीवन बिता कर तो देखो।

चंदन और तुलसी की खुशबू लिए तुम,
खाक कर दो अपने विकारों की महफिल।
दुआ पर अगर कोई बंदिश नहीं तो,
बढ़ते फ़ासलों को मिटा कर तो देखो। ◈

जहाँ–जहाँ अच्छाई हो

◈ **vuhrk 'kek**
रेड रोज स्कूल, लाम्बाखेड़ा
भोपाल, मध्य प्रदेश

सद्भावों के लिए भावना, रहे सदा कल्याणी,
चाहे हों आयतें कुरान की, या पवित्र गुरुवाणी।

चाहे इक ओंकार जपें हम या हों आर्यसमाजी,
किसी मंत्र के हम साधक हों या हों पूर्ण नमाजी।
सामूहिक प्रार्थना चाहे, गिरजाघर में गाएँ,
किंतु भाव में सदा भरी हों, केवल यही दुआएँ।
सबको सद्बुद्धि पाएँ, हो स्वस्थ–सुखी हर प्राणी,
सद्भावों के लिए भावना, रहे सदा कल्याणी।

जहाँ–जहाँ अच्छाई हो, हम उसका करें समर्थन,
नेक सोच वालों से होगा, इस युग का परिवर्तन।
इन्हीं पुरुषों को कल समाज की, करनी है अगुआई,
हिंदू हों या बौद्ध, पारसी, सिख, मुस्लिम, ईसाई।
हर संप्रदाय में फैलें अच्छो–सच्चे युग निर्माणी।
सद्भावों के लिए भावना, रहे सदा कल्याणी।

सब अपने नैतिक मूल्यों को ही आधार बनाएँ,
कोई नहीं लाँघें धर्म–पंथों की अपनी सीमाएँ।
रहे परस्पर चाहे सबकी, अलग कार्यशैली,
पर न कहीं हो घृणा–द्वेष की, बहती हवा विषैली।
आहत हो सिद्धांत न हिंदू का या उसूल कुरआनी।
सद्भावों के लिए भावना, रहे सदा कल्याणी।

सबके सद्‌विचार मिल कर फिर शुभ प्रकाश बाँटेंगे,
प्रेम–न्याय से वे आपस की हर दूरी पाटेंगे।
स्वीकारेंगे एक–दूसरे की जब सब अच्छाई,
सज्जन जन निर्मूल करेंगे, मिलकर स्वयं बुराई।
तब होगा सतयुगी दौर और होगी हवाएँ रुहानी।
सद्‌भावों के लिए भावना, रहे सदा कल्याणी। ◈

नैतिकता के दोहे

◈ f l Eeh fcæk
यू.एस.पी.सी. जैन पब्लिक स्कूल
चंडीगढ़ रोड, जमालपुर, लुधियाना, पंजाब

बच्चों में गुण बहुत हैं, छू सकते आकाश,
नैतिक शिक्षा से करें, इनका स्वस्थ विकास।

नैतिक शिक्षा के समय, रखिए इसका ध्यान,
बच्चे भी अनुभव करें, मान और सम्मान।

पशुवत बच्चा जन्म ले, पशु जैसा व्यवहार,
नैतिक शिक्षा से करें, इसमें नित्य सुधार।

नैतिकता से परवरिश, बहुत कठिन यह काम,
चूक जरा सी भी करे, सबका काम तमाम।

बच्चे नैतिक चाहिए, मॉडल बनिए आप,
देख–देख कर आपको, बच्चे बनते आप।

धीरे–धीरे दीजिए, बच्चों को यह ज्ञान,
नैतिकता से बनेंगे, आप सफल इंसान।

सबसे पहले समझिये, इनके सरल स्वभाव,
फिर इस शिक्षा का पड़े, गहरा बहुत प्रभाव।

भोजन पानी जिस तरह, लेते नियमित नित्य,
नैतिक शिक्षा के लिए, आवश्यक साहित्य।

बच्चे नैतिक बन गए, सफल हो गए आप,
मिट जाएँगे आपके, जीवन के अभिशाप। ◈

काश! ऐसा हो जाए...

◈ **tuV iky**
सेंट गेब्रियल्स सीनियर सेकेंड्री स्कूल
राँझी, जबलपुर, मध्य प्रदेश

आज एक अजीब–सी बात हुई,
सारे शहर में दंगे की शुरुआत हुई।
हर तरफ जाति–पाति को लेकर
आरक्षण के नाम पर शोरगुल है,
जो, मेरे कानों में सुनाई पड़ी।
कहीं कोई आरक्षण माँग रहा है,
तो कहीं कोई जाति–पाति के नाम पर सीटें।
कहीं कोई धार्मिक आस्थाओं
को चोट पहुँचा रहा है,
तो कहीं कोई पाखंड व ढोंग रचा कर
जनता को लूट रहा है।

बहुत सोचने पर भी मुझे
इस दंगे की वजह समझ नहीं आई।
क्यों? आदमी ही आदमी का
दुश्मन बन बैठा है आज,
क्यों धर्म के नाम पर
आस्थाओं का ह्रास कर रहा है आज?
बहुत सोचने पर एक वजह मेरे सामने आई,
क्या नशा इसकी वजह है?
क्या नशे में इंसान इंसानियत भूल रहा है?

क्या नशा ही ऐसा जहर है
जो समाज को खोखला कर रहा है?

नशे में इंसान हैवान बन रहा है
और सारी नैतिकताओं का हनन कर रहा है।
काश! मेरे देश से नशा हट जाए,
तो सारे दंगे की वजह ही मिट जाए।
काश! मेरा देश नशामुक्त,
नैतिकता व सद्भावना से भर जाए। ◈

नैतिकता ही धर्म हमारा

◈ **eerk oek**
ब्राइट एंजल्स सी. सै. स्कूल
चकराता रोड, विकास नगर, देहरादून, उत्तराखंड

प्रेम–अमन का दीप जलाएँ
घर–घर में उजियारा हो,
नैतिकता ही धर्म हमारा,
नैतिकता ही नारा हो।

प्रेम का सागर मन बन जाए
प्रेम ही आँखों में बस जाए,
प्रेम ही बोले, प्रेम ही तोले
प्रेम का सबको पाठ पढ़ाएँ।
आज समय की माँग यही है
प्रेम में विश्वास यह सारा हो।
मानवता ही धर्म हमारा
नैतिकता ही नारा हो।

मानव को ही मानव जोड़े
संकीर्णता को हम छोड़ें,
निर्माण करें हम प्रेम–पुलों का
नफरत की दीवारें तोड़ें।
समदृष्टि से सबको देखें,
हर कोई आँख का तारा हो।
मानवता ही धर्म हमारा
मानवता ही नारा हो।

ऐसा हो जीवन यह सुहाना
ना कोई बेरी ना बेगाना,
हम संतानें एक पिता की,
आ जाए बस प्रेम निभाना।

प्रेम में डूबा, प्रेम से महका
अपना जीवन सारा हो,
नैतिकता ही धर्म हमारा
नैतिकता ही नारा हो। ◈

मुस्कराना धर्म है

◈ **vfUork oek**
रिचमंड ग्लोबल स्कूल
पश्चिम विहार, दिल्ली

उन कष्टों में मुस्कराना धर्म है,
जिन कष्टों में मुस्कराना हो मना।

जिस समय जीवन हमारा बोझ–सा हमको लगे,
उस समय जीवन बचाना कर्तव्य है इंसान का।

लहरों के साथ हँसी–ठिठोली तब करनी चाहिए,
जब समुंदर पर हो नशा तूफान का।

जिस पवन का दीप बुझाना लक्ष्य हो,
उस पवन में दीप जलाना धर्म है इंसान का।

हो दूर मंजिल देख लो जिस राह की,
उस राह चलना चाहिए संसार को।

जिस त्याग को है पूजता संसार ये,
वह त्याग करना चाहिए इंसान को।

दूसरों के हितार्थ ये जीवन कटे,
यही विश्वास होना चाहिए इंसान को। ◈

चलें सत्य की ओर

◈ dk'kyæ xkLokeh
राजकीय आदर्श उ. माध्य. विद्यालय, शिशोदा
राजसमंद, राजस्थान

चलो चलें हम सत्य की ओर,
अज्ञान त्याग कर ज्ञान की ओर।
चुनें विजयी अहिंसा पथ को,
स्वाध्याय, साधना, सेवा को,
परहित जीवन जीने को,
फिर देखो होगी नई भोर।
चलो चलें हम सत्य की ओर।

तन–मन–आत्म साधना को,
नियमित चिंतन आनंद को,
अभ्यास ज्ञान का नियमित हो,
तब नाचेगा मन का मोर।
चलो चलें हम सत्य की ओर।

चुनें स्फूर्ति, तत्परता को,
तमस त्याग ज्योतिर्पथ को,
ज्ञानालोकित शिव पथ को,
सुख–शांति का ओर न छोर।
चलो चलें हम सत्य की ओर।

अथाह, असीम, आनंद पथ को,
श्रम साध्य जीवन पथ को,
सत्यं–शिवं–सुंदरं पथ को,
तभी मिले परमानंद–ठौर।
चलो चलें हम सत्य की ओर। ◈

मेरा रास्ता

◈ **euh"kk cFkkoky**
आर्मी पब्लिक स्कूल
महू, इंदौर, मध्य प्रदेश

मैं छूना चाहती हूँ आकाश,
पहुँचना चाहती हूँ शिखर पर।
मैं चाहती हूँ उस तत्त्व को,
मैं जान पाऊँ, उसे अपनाऊँ।
वो कुछ सबसे अलग हो,
वो सब जो सबमें ना हो।

करती हूँ प्रयास पर असफल,
खुद को देकर हौंसला
बढ़ाती हूँ कदम
पर फिर निष्प्राण
होती हूँ।

मैं मैली पन्नियाँ बटोरते हाथों में
कलम थमाना चाहती हूँ,
बूढ़ी आँखों में उम्मीद जगाना
चाहती हूँ,
लड़खड़ाते कदमों का सहारा
बनना चाहती हूँ।

मैं जब–जब परहित के
लिए कुछ बनना चाहती हूँ

तो न जाने कहाँ से
शक्ति आ जाती है।
अभाग्य सौभाग्य बन जाता है।
बेचारगी दबंगई का आवरण
बन खड़ी होती है।
नियति स्वयं प्रशस्त करती है
मेरा रास्ता,
जब–जब जोड़ती हूँ मैं
परकल्याण से अपनी मंजिल
का वास्ता। ◈

नशे से बचाएँगे

◈ j[kk jko
रवींद्र विद्या निकेतन
केंदुसरगढ़, उड़ीसा

कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैला जिसका जहान,
अपनी अनुपम सुंदरता से बनाई जिसने पहचान।

ऐसे भारत देश का परचम विश्व में फैलाएँगे,
भारत के कण–कण को नशे से बचाएँगे।

हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई की जहाँ है माला,
विभिन्न धर्म और संस्कृति का जहाँ है बोलबाला।

आपसी सद्भाव से रहकर विश्व को दिखाएँगे,
भारत के कण–कण को नशे से बचाएँगे।

राम और रहीम की भूमि है जहाँ प्यारी,
नानक और जीसेस कथाएँ हैं जहाँ न्यारी।

महापुरुषों के आदर्शों को जीवन में अपनाएँगे,
भारत के कण–कण को नशे से बचाएँगे।

गांधी, गोखले ने जहाँ पढ़ाया अहिंसा का पाठ,
सुभाष और भगत ने लड़ना सिखाया अन्याय के खिलाफ।

उनके नाम को कभी न दिलों से मिटाएँगे,
भारत के कण–कण को नशे से बचाएँगे। ◈

सद्भावना है सुंदरता

◈ **f'kYik jk- tkxydj**
सिटी प्राईड स्कूल
प्राधिकरण निगदी, पुणे, महाराष्ट्र

सद्भावना एक ऐसी सवारी है
जो अपने सवार को भी
कभी गिरने नहीं देती,
न किसी के कदमों में और न नजरों से।
ऐ मनुष्य!
पैमाने के धोखे में न आना,
नशे–सागर में न डूब जाना।
नैतिकता और सद्भावना है
आत्मा की सुंदरता।
अगर प्रवृत्तियों में सद्भावना की रफ्तार हो
और संयम से प्यार हो,
तभी होगा नशे से परे।
पाएगा चिंता और अवसाद से मुक्ति,
हर ओर गूँजते रहेंगे नारे,
अतः स्वयं को कभी
कमजोर साबित मत होने देना,
क्योंकि लोग डूबते सूरज को
देख दरवाजे बंद करते हैं। ◈

सेवा–गंगा

◈ **fdj.k 'kekZ**
केन्टरबरी मॉडल पब्लिक स्कूल
विजय पार्क, मौजपुर, दिल्ली

सेवा गंगा पावन धारा करती जीवन का शृंगार,
जो जन अवलोकन करते हैं, हो जाते भवसागर पार।

सेवारस देता अनुरक्ति, दुर्व्यसनों से पूर्ण विरक्ति,
सेवा सत्य सनातन भक्ति अद्‌भुत अनुपम इसकी शक्ति।
निश्छल सेवा के बल से ही स्वामी पर होता अधिकार,
सेवा गंगा पावन धारा करती जीवन का शृंगार।

तन–मन–धन के दोष हैं कितने नभमंडल के तारे जितने,
उन सबको धो पावन करती सेवा में सद्‌गुण हैं इतने।
सेवा पूजा सद्य संवारो, कर लो खुद का खुद उपकार,
सेवा गंगा पावन धारा करती जीवन का शृंगार।

रामदूत हनुमान सरीखे सेवा भक्ति उनसे सीखें,
विपुल शक्ति बुद्धि के आश्रय उनसा जग में और न दीखे।
सेवा के बल से हनुमत ने पाया प्रभु का दिव्य दुलार,
सेवा गंगा पावन धारा करती जीवन का शृंगार। ◈

यह कैसी खामोशी?

◈ **nhid**
विवेकानंद विद्या निकेतन
असंध, करनाल, हरियाणा

हुआ लड़का घर में
खुशी में इकट्ठे हो सब
पी लेते हैं लोग।

हुई जो लड़की
टेंशन में
पी लेते हैं लोग।

मिली–भग आई कपास में
पत्ता लपेट जीरी (धान) में
कोस भगवान को
पी लेते हैं लोग।

फसलें पिट गई मंडी में
कमाई चली गई स्कूल फीस में।
गाली दे सरकार को
पी लेते हैं लोग।

ब्याह कर लिया लड़की ने
अपने पसंद के लड़के से
छोड़ दिया बहू ने पर्दा करना
इसी अगन में जल
पी लेते हैं लोग।

बच्चे कुढ़ते जाते, मरते–पिसती
औरत भार ढोते कुनबे का,
गालियाँ, रुदन रोज ड्रामा रात को
क्योंकि
पी लेते हैं दारू लोग।

यह कैसी खामोशी है बस्ती में
ये सुरसा–मुख सा छेद कैसे हुआ किश्ती में
अब कहाँ बची है रोनक इस हस्ती में
ये कैसा वहसीपन है
कि पीते ही जाते हैं लोग। ◈

सद्भावना रैली

◈ Iferk JhokLro
भवंस बी.पी. विद्या मंदिर
नागपुर, महाराष्ट्र

राह में देख सद्भावना रैली
मजदूर माँ से बेटी बोली–
माँ, ये सद्भावना क्या होती है?
माँ कुछ उत्तर दे पाती
वह तपाक से बोली–
क्या ये रोटी जैसी होती है?
न–न बेटा जो रोटी हम
मिल–बाँटकर खा लेते हैं
सद्भावना होती है, माँ बोली।

बापू जब किसी बीमार
की सेवा कर देते हैं दवाई–गोली
वह सद्भावना ही होती है,
पर बेटा यह तो बस कुछ
लोगों के इलाके में ही पलती है।

बेटी ने समझ से गर्दन हिलाई
ये रैली क्यों निकलती है,
माँ बोली–शायद सद्भावना
शीशे के घरों में सो रही है कैद,
लगती है, तभी उसे जगाने,
उसे छुड़ाने ये सद्भावना रैली
निकलती है। ◈

कामना है मेरी

◈ jk?koæ ikM;
श्रीवेंकटेश्वर इंटरनेशनल स्कूल
सैक्टर 18, द्वारका, दिल्ली

कामना है मेरी, विश्व समृद्ध हो,
मार्ग नैतिक बनाकर स्वयं शुद्ध हो।

एक परिवार में प्रेम धारा बहे,
वृद्ध माता–पिता का सहारा रहे।

द्रव्य–अर्जन ही केवल न उद्देश्य हो,
शुद्ध जीवन–कला न निरुद्देश्य हो।

भावना का उदारीकरण खो गया,
शांति–प्रियता का वैभव कहाँ मिट गया।

अहं की भावना महासंकट बनी,
छोटी बातों में लड़ना विकट की घड़ी।

समायोजन की शिक्षा न दे पा रहे,
ज्ञान–मंदिर न जाने कहाँ जा रहे।

इस चकाचौंध से मिल रही अंधता,
बुद्धि के दिग्भ्रमण से बढ़ी मंदता।

क्या यही नीति है, धर्म का रूप है,
या मनुष्यों की सबसे बड़ी चूक है।

विश्व–परिवार की भावना का उदय,
कैसे होगा जहाँ नित्य कलुषित हृदय। ◈

पाठ इंसानियत का पढ़ाते सभी,
धर्म नफ़रत का न बीज बोते कभी।

फिर ये हिंसा ख़तरनाक क्यों हो रही,
निरपराधी को ऐसे निगल क्यों रही।

विश्व भर के मनुष्यों से विनती मेरी,
अपने अस्तित्व में कर लो गिनती मेरी।

नीति के मार्ग पर चलो भाइयो मेरे,
सही क्या है गलत समझो भाइयो मेरे। ◈

...यह दोबारा हो

◈ **dfork oRl**
रेनबो इंग्लिश सी.सै. स्कूल
सी–3, जनकपुरी, दिल्ली

शांति हो, सद्भावना हो, भाईचारा हो,
नैतिकता हो, नशे से मुक्त देश हमारा हो।
हे प्रभो! मेरे वतन में यह दोबारा हो।

दूध की नदियाँ भले ही न बहें,
फिर से स्वर्ण महलों में भले हम न रहें,
लेकिन कोई भूखा न रहे,
न ही उधारा हो,
हे प्रभो! मेरे वतन में यह दोबारा हो।

नशा जीवन का नाश है,
समाज का विनाश है।
नशा देश की उन्नति में बाधा है,
समाज में इसकी पकड़ ज्यादा है।
नशे से युवाओं का किनारा हो,
हे प्रभो! मेरे देश में यह दोबारा हो।

नैतिकता का हो विकास,
बच्चे नैतिक चाहिए
तो दृष्टांत बनिए आप।
खुद को संवारों तो बच्चे संवर जाएँगे,
जहाँ ले जाओगे, वे उधर जाएँगे।
दूर नहीं एक–दूसरे का सहारा हो,
हे प्रभो! मेरे वतन में यह दोबारा हो। ◈

थी मैं अकेली

◈ **T;ksfr lat; ckykiqjs**
द स्वामिनारायण स्कूल
245, पूर्व वर्धमान नगर, नागपुर, महाराष्ट्र

कल रात सपने में
स्वर्ग लोक से आए जन्मदाता मेरे,
कहने लगे मुझे–
किसी कारणवश तुम्हें
प्यार न दे सका।
जिसके हकदार थे तुम सभी
फिर भी कभी न बात मन की कही
था स्वभाव कड़ा,
मैं था अनुशासित
और अनुशासित रखना
था मुझे।

मैंने भी दो बात कही
कहीं न कमी आपने रखी
जरूरी था जो भी
उसे न कम किया कभी
पढ़ाया, लिखाया, कर्तव्य
सिखाया
किया अपने–अपने पैरों पर खड़े।

जन्मदाता कह पड़े
स्मरण हो आता मुझे

कर्तव्य तुमने बहुत निभाया
मृत देह मेरा छोड़,
किया अपना कर्तव्य पूर्ण,
गर्व उस दिन हुआ,
तुम्हें जन्म दिया मैंने।

मैं भी कह पड़ी आज हूँ
फिर मैं अकेली,
फिर भी मैंने न हार मानी।
हँसकर और हँसाकर,
जिंदगी की राह पर निकल पड़ी,
लिए साथ अपनों का
बढ़ चली आगे,
क्योंकि कर्तव्य थे और भी
निभाना था उसे भी।
नज़र थी लोगों की तीखी
मुझ पर,
मुझे तो अपनों ने भी
छोड़ा नहीं।

पीठ न दिखा सकती थी,
कर्तव्यों को, जो मिले मुझे
बस, बढ़ चली सद्भावना लेते हुए,
सद्भाव देते हुए। ◈

नशे का उपचार करो

◈ **vthr d|ekj eknh**
राजकीय चौपड़ा उ.मा. विद्यालय
गंगाशहर, बीकानेर, राजस्थान

तेरापंथ के महाश्रमण जी का,
है ये सुंदर संदेश,
सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति का,
करो चरित्र में धारण वेश।

नशा नाश है जीवन का,
करो नशे का नाश,
तोड़ों व्यसनों की कारा को,
भर लो आत्म–विश्वास।
हर व्यसन एक जहर है,
समाज पर बरसाता ये कहर है।
नशा उन्नति में बाधा है,
समाज में इसकी पकड़ ज्यादा है।

बच्चों का बचपन छीन लिया,
युवाओं को भी लाचार किया।
नशे के वशीभूत पुरुषों ने,
अबलाओं पर अत्याचार किया।

तनिक अपने पापों पर विचार करो,
नशीले पदार्थों का तुम बहिष्कार करो।
जरा विवेक से सद्विचार करो,
दृढ़–संकल्प से तुम नशे का उपचार करो।

नैतिकता का अनुसरण कर,
नई पीढ़ी का उपकार करो।
भूत की भूलों से सीखो,
भविष्य का उद्धार करो। ◈

नैतिक मूल्य

◈ **nhiekyk**
निर्मल सागर पब्लिक स्कूल
लसाडा, फिल्लौर, जालंधर, पंजाब

हो रहा है आज
हमारे नैतिक मूल्यों का पतन,
कर रहे हैं छात्र
कम्प्यूटर शिक्षा पाने का प्रयत्न।

दे रहे हैं सीख
हर विद्यालय के अध्यापक,
प्रोजेक्ट पूरा करो अपना
गूगल पर डाउनलोड कर।

भाग रहे हैं स्कूल
जल्दी–जल्दी से अपना बस्ता टाँगे,
ना की पूजा, ना दिया आदर
लगा दिया सब सम्मान ठिकाने।

ग्रेडिंग सिस्टम बन गया है
शिक्षा का एक और बवाल,
आठवीं तक तो नहीं रहा अब
पास–फेल होने का कोई सवाल।

सिर्फ टी.वी., मोबाइल, इंटरनेट ही है
अब नैतिक मूल्य उनके,
मोरल साइंस भी होता था विषय
ऐसे विषय से वो हो रहे अछूते। ◈

भटके हुए राही

◈ T;kfr lfr;k
राजकीय उच्च. माध्य. विद्यालय
नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान

मैं भी एक मानव हूँ,
मैं नशे का आदी नहीं
पर रो लिया करता हूँ अक्सर,
जब नशे के आगोश में
कोई समाती है जिंदगी,
तीर–तम के विष से घायल
कोई लड़खड़ाती है जिंदगी।

मौत का डर नहीं
जीवन के सर्वनाश का डर
तह तक रुला देता है,
ऐ लक्ष्य से भटके हुए राही
नशा जीवन को अभिशाप
बना देता है।

तेरे साथ जीने वालों का
हर स्वप्न, हर दिन मरता है,
मर–मर कर जीने वाले राही के
साए से भी डर लगता है।
ऐ सकून तलाशते...छटपटाते परिंदे
कैसी नशे की यह माया है,
लक्ष्य हो रहे आँखों से ओझल
बस तिमिर चहुँ ओर समाया है।

उठ, कमान संभाल
ऐ आस के पंछी
और बन जा सारथी
अपनी साँसों का।
कोई मोल नहीं,
अनमोल हैं रिश्ते,
मत बन अपराधी
इन विश्वासों का।

कोई उद्धारक नहीं मैं,
कोई विचारक नहीं मैं,
बस मौत के दंश से
डर जाता हूँ,
पर–पीड़ा के आलिंगन में
कुछ पल के लिए मर जाता हूँ।
बिखरती जिंदगियों का दर्द
रुला देता है मुझे,
शायद तभी मैं मानव कहलाता हूँ। ◈

व्यसन से दूर रहो

◈ euh"k lkuh
रेड रोज स्कूल
लांबाखेड़ा, भोपाल, मध्य प्रदेश

हलाहल है, कौतुहल है, विषधर बचे, विलुप्त संदल का जंगल है,
अभिमान है, अहंकार है, शीलभंग नारी, दैत्य–दानिवी संसार है।
भय है, संशय है, मदिरालय आबाद, झंज जर–जर सा आलय है,
अखंड है, प्रचंड है, मन–भाव शेष, देह तो विभक्त खंड–खंड है।

उन्मादी उन्मुक्त गगन में, विचरण करने तरस रहा है,
निपट अकेली अबला पर वो, घोर मेघ सा बरस रहा है।
लरज रहा है खुद ही अपने कदमों से पग धरने में,
फिर भी मय मय होकर, नाहर की भाँति वो गरज रहा है।

मधुशाला, मदिरालय, मयखाने, कुछ भी तुम संज्ञा दो,
मधुसेवन, मदिरापान, मयकसी, मनमर्जी की उपमा दो।
देह, नेह, स्वमान गंवाकर, जिसने ये विषपान किया,
पशुनर सा जीवन है उसका, पाप–घड़ा ये तन समझो।

मय–मुक्त जियो, भय–मुक्त जियो, हर नशा व्यसन से दूर रहो,
सद्भावना रखो हर जाति–धर्म में, नैतिक जीवन से पूर्ण रहो।
न द्वेषभाव, न शेष राग हो, लेशमात्र तम हृदय न हो,
अनवरत, निरंतर, अथक चलो, नव–राष्ट्र धर्म की नीव गढ़ो। ◈

संस्कारों के फल

◈ **larks"k ekyh**
राजकीय सादुल उच्च माध्य. विद्यालय
बीकानेर, राजस्थान

संस्कारों की धूप से
पोषित बिरवे
जगाए रखते हैं आस कि
आने वाले कल में
नहीं होगा अभाव नैतिकता को
प्राणवायु का
और...
पड़ते रहेंगे झूले हर सावन में
प्रेम के।

आओ!
हम भी रोपें अपने 'बीज'
यही शिव संकल्प लेकर,
छाये रिश्तों में नेह की हरियाली।
झड़ जाएँ झूठ–फरेब की पत्तियाँ,
बढ़ें विश्वास की बेलें,
इन बेलों पर फल आएँगे
मीठे–मीठे।
सरसेंगी पीढ़ियाँ हमारी
सरसेंगी मानवता सारी। ◈

भाग–2
कहानी

पुण्यतिथि

◈ jhrk vkx
द स्वामिनारायण स्कूल
पूर्व वर्धमान नगर
नागपुर, महाराष्ट्र

उन्हें डर लग रहा था कि उनके भाग्य को कहीं उनकी ही नजर न लग जाए। कितने तूफानों के बाद शांति नसीब हुई है। दोनों के जाने के बाद गेट बंद करते हुए उन्होंने मन ही मन बेटे से कहा, ''तुम ठीक कहते हो, उसी आदमी ने मुझे बहुत दुख दिए, पर एक सबसे बड़ा सुख तुम जैसा होनहार और संस्कारी बेटा भी दिया है। इसलिए साल में एक बार उन्हें याद कर लेती हूँ।''

ßrk उर्मि बेटे, इस तिथि को हमेशा याद रखना। मेरे बाद तुम्हें ही यह सब करना है। मेरे बेटे से कुछ आशा मत रखना। पुरुषों को न तो ये बातें याद रहती हैं, न उन्हें इनमें रस होता है। परंपराएँ तो औरतों को ही निभानी होती हैं। तिथि कैसे देखते हैं? मुझे तो पंचांग भी समझ नहीं आता।" "कोई बात नहीं, तारीख तो याद रहेगी न! तो याद कर लो 11 जुलाई। हर साल जब नया कैलेंडर आएगा तो इस तारीख पर गोला बना देना। फिर देखने पर अपने आप याद आ जाएगा।"

तभी जूतों की आवाज सुनाई दी। भुवन सीढ़ियाँ उतर रहा था। उसके दफ्तर का समय हो गया था। उसे देख उर्मि ने टोका, "पहले प्रणाम तो की लीजिए।" भुवन ने पलटकर पूछा, "किसे?" "मम्मी ठीक कह रही थीं, आप लोगों को कुछ याद नहीं रहता। अरे आज बाबूजी की पुण्यतिथि है न।"

भुवन ने किंचित झाँककर देखा ठाकुरजी के आले के नीचे एक चौकी पर उसके पिता की बड़ी सी तस्वीर थी। तस्वीर पर हार था

और सामने अगरबत्ती जल रही थी। रसोईघर का फैलारा किसी महाभोज का ऐलान कर रहा था।

उसने आग्नेय नेत्रों से माँ को देखा। उन्होंने तुरंत नजरें नीची कर लीं और आलू छीलने लगीं। उर्मि एकटक पति को देख रही थी। वह घुटी–सी आवाज में बोला, "जूते पहने हुए हूँ, मैं बाहर से नमस्कार कर लेता हूँ।" फिर कुछ ही क्षणों में वह पलटकर जूते चटकाता हुआ बाहर निकल गया। उसने प्रणाम किया कि नहीं किया वह देख नहीं पाई। पर किया तो होगा, नहीं तो उर्मि उसे छोड़ती नहीं।

ठीक बारह बजे सास–बहू रिक्शे में सामान लदवाकर आश्रम की ओर चल पड़ीं। बहू की मदद से अपनी मर्जी का उन्होंने सब कुछ बना लिया था–पूड़ी, खीर, सब्जी और मंगोड़े। आश्रम पहुँचकर बहू को लेकर स्वामीजी के कक्ष में गई। स्वामीजी ने बहू को ढेर सारा आशीर्वाद दिया। मन प्रसन्न हो गया। घर लौटकर बहू बोली, "मम्मी जी, आप ये काम बहुत अच्छा करती हैं। इन लोगों को तृप्त करके मन को कितनी शांति मिलती है।" "वैसे तो ये काम बेटों के होते हैं। पर कभी पढ़ाई तो कभी नौकरी के लिए भुवन हमेशा बाहर रहता आया, इसलिए मैंने यही तरीका अपना लिया है।"

घर पहुँचकर दोनों ने भोजन किया और फिर आराम करने अपने–अपने कमरों में चली गई। माँ को झपकी आने को थी कि उर्मि सामने जा खड़ी हुई और बोली, "आपने तो देख ही लिया कि उन्हें बाबूजी की पुण्यतिथि भी याद नहीं, उन्होंने तो शाम के शो की टिकट बुक कर लिए थे। मैं उसके लिए मना कर देती हूँ।"

माँ बोली, "नहीं बेटा। कैंसिल क्यों करोगी। यहाँ का सब काम तो निबट गया है। शाम को तुम एकदम फ्री हो। अच्छा, अब जाओ और मुझे भी थोड़ा सोने दो।" उनकी प्यार भरी झिड़की खाकर बहू चली गई। भुवन का मन शाम को भी उखड़ा हुआ था पर माँ ने उसे फ्रेश होकर थोड़ा साथ चलने को कहा। और बहू को पिक्चर जाने के लिए तैयार रहने की हिदायत दी।

वह बेमन से गाड़ी में जाकर बैठ गया। माँ के बैठते ही रुखे स्वर

में पूछा, "कहाँ जाना है?" माँ ने बताया, "सुबह आश्रम खाना ले गए थे। बर्तन वापस लाने हैं।" आश्रम का रास्ता भुवन का देखा हुआ था। बचपन में माँ के साथ कई बार गया था। उसने गेट के पास गाड़ी ले जाकर खड़ी कर दी। माँ उतरकर अंदर गई। फिर सेवक उनके साथ बर्तन लेकर आए और डिक्की में रखा। बेटा अपनी सीट पर बैठा सब टुकुर–टुकुर देख रहा था। पर जब माँ के साथ स्वामी जी गेट पर आए तो उतरना ही पड़ा। प्रणाम भी करना पड़ा।

आशीर्वाद देते हुए स्वामी जी ने कहा, "बहन जी, आपके घर में तो साक्षात् लक्ष्मीनारायण विराज रहे हैं। आपको कभी किसी चीज की कमी नहीं होगी।" माँ ने पुनः एक बार स्वामी जी को प्रणाम किया और गाड़ी में जा बैठी। साथ ही भुवन से बात करने के लिए कहीं पाँच–दस मिनट गाड़ी रोकने के लिए कहा। कुछ दूर चलने के बाद भुवन ने एक सुनसान–सी जमीन के सामने गाड़ी खड़ी कर दी और कहा, "बोलो माँ।" "मुझे पता है आज तुम मुझसे बहुत नाराज हो।"

"फिर तो यह भी पता होगा कि क्यों नाराज हूँ? आज अचानक तुम पर ये क्या भूत सवार हो गया?" "अचानक नहीं, मैं तो सालों से करती आ रही हूँ। बस तुम्हें बताती नहीं थी। जानती थी तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा। इसीलिए चुपचाप अकेले ही सब कुछ करती रही।"

"तो फिर आज ये हंगामा करने की क्या जरूरत थी?" "आज विशेष कारण था। मैं बहू को उसके ससुर के वजूद का एहसास कराना चाहती थी। हमारे लिए तो वह अध्याय समाप्त हो गया है, पर बहू तो सोचती होगी कि कैसे लोग हैं ये, उस दिवंगत आत्मा की कभी चर्चा तक नहीं करते।" "जिसके वजूद से मुझे नफरत है, उसके लिए इतना आग्रह क्यों? पिता के रहते अनाथों की जैसी जिंदगी गुजारी है मैंने। मुझे उनके प्रति जरा भी श्रद्धा नहीं। और तुम्हें भी यह सब करने की क्या जरूरत। तुम्हें भी तो कम दुख नहीं दिए उन्होंने।"

"सिर्फ दुख ही दुख नहीं था बेटा। थोड़ा सुख भी मेरे हिस्से आया था। दुख यही है कि वह ज्यादा दिन नहीं रहा। न जाने कैसे मुट्ठी में

बंधी रेत की तरह तिजोरी रीतती चली गई। सब कुछ स्वप्नवत हो गया।" "तिजोरी अपने आप खाली नहीं हुई माताश्री। उसे आपके पतिदेव बोतल में डालकर पी गए और तुम्हें कोसते रहे कि तुम उनके लिए पनौती बनकर आई हो। छोटा था तो क्या हुआ, मैंने जो देखा, मुझे सब याद है।" "इसलिए तो तुम्हें मामा के यहाँ भेज दिया था बेटा। यह सब देखने–सुनने की उम्र नहीं थी तुम्हारी।"

"दूर था, पर तुम्हारे कष्ट मैं देख रहा था। बीए पास थी तुम, पर तुम्हें नौकरी करने की इजाजत नहीं थी। खानदान की प्रतिष्ठा आड़े आ रही थी। फिर घर का खर्च पाटने के लिए तुमने टिफिन सेवा शुरू की, तुम मोहल्ले वालों की पार्टियों के लिए लड्डू और बर्फी बनाने लगी, लोगों के लिए स्वेटर बुनने लगीं। इससे भी पूरा नहीं पड़ा तो तुमने कॉलेज के छात्रों को ऊपर के कमरे किराए पर दिए। बाप रे! तब क्या हंगामा हुआ था। उन लड़कों को लेकर तुम पर कितने लांछन लगाए गए। उफ! मैं छुट्टियों में आता तो लगता किस नरक में आ गया हूँ। सोचो कौन–सा नरक ज्यादा दुखदायी था। यहाँ वाला या मामा वाला। जिस दिन इस शख़्स की मृत्यु का समाचार मिला, वह मेरे जीवन का सबसे खुशनुमा क्षण था। जेल से छूटे कैदी की तरह मैं भागकर घर आ गया था।"

"तुमसे कभी उर्मि ने पूछा नहीं कि यहाँ शहर में सारी सुविधाएँ होते हुए भी तुम कस्बे में मामा के यहाँ पढ़ने क्यों गए थे।" "मैंने उससे कह दिया था मामा प्रोफेसर थे। उस घर में पढ़ाई का वातावरण था। यहाँ तो दुकानदारी का माहौल था, इसलिए।" "सच क्यों नहीं बताया?"

"मैं उसकी नजरों में दया का पात्र नहीं बनना चाहता था।"

"मतलब तुम पत्नी के सामने छवि खराब नहीं करना चाहते थे न।" यही तो बेटा मैं भी कर रही हूँ। यह लड़की भरे–पूरे परिवार से आई है। उसके घर में परंपराओं का निर्वाह होता है। वहाँ रिश्तों की मिठास है। संबंधों की मर्यादा है। ऐसे संस्कारों में पत्नी लड़की को अगर यह पता चला कि तुम अपने पिता का तिरस्कार करते हो, तो उसके मन में तुम्हारे प्रति

अनजाने ही एक अश्रद्धा भाव आ जाएगा और तब उसे तिरस्कार का कारण पता चलेगा तो तुम्हारे पिता के प्रति एक अनादर उत्पन्न होगा। ऐसे में उसके मन में परिवार के प्रति, घर के प्रति भी आस्था नहीं बन पाएगी। इसलिए मैं परिस्थितियों को थोड़ा सकारात्मक मोड़ देने की कोशिश कर रही हूँ। लड़की धीरे–धीरे इस घर से जुड़ने का प्रयत्न कर रही है। एक बार अच्छी तरह वह रच–बस जाए फिर कोई चिंता नहीं रहेगी। फिर सच्चाई का पता चलेगा तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। और सच्चाई तो एक दिन पता चलनी ही है। तुम्हारे मामा व चाचा पक्ष के लोग तो घात लगाए बैठे हैं कि कब बहू पकड़ में आए और कब उसे सारा कच्चा–चिट्ठा सुनाएँ। इस कारण मैं तुम दोनों को अभी कहीं भेजने के पक्ष में नहीं हूँ। सारे निमंत्रण मैंने ठंडे बस्ते में डाल दिए हैं।"

बात पूरी करते–करते माँ को थकान हुई। उन्होंने सीट की पीठ पर सिर टिका दिया और आँखें मूँद लीं। गाड़ी वापसी की यात्रा पर चल पड़ी। कब घर पहुँची, उन्हें पता ही नहीं चला उर्मि दरवाजे पर सजी–धजी खड़ी थी। पति का चेहरा देखकर बोली, "आप बहुत थके लग रहे हैं। आज पिक्चर रहने देते हैं।"

पर भुवन से पहले माँ ने जवाब दिया, "वह थका नहीं है, बस मन उदास है, इसलिए तुम्हारा बाहर जाना जरूरी है।" थोड़ी देर बाद भुवन तैयार होकर पत्नी के साथ नीचे उतरा। माँ की आँखें उन्हें देर तक निहारती रहीं। स्वामीजी के शब्द याद आए–आपके घर में तो साक्षात् लक्ष्मीनारायण विराज रहे हैं। आपके यहाँ कभी किसी चीज की कमी नहीं रहेगी।

उन्हें डर लग रहा था कि उनके भाग्य को कहीं उनकी ही नजर न लग जाए। कितने तूफानों के बाद शांति नसीब हुई है। दोनों के जाने के बाद गेट बंद करते हुए उन्होंने मन ही मन बेटे से कहा, "तुम ठीक कहते हो, उसी आदमी ने मुझे बहुत दुख दिए, पर एक सबसे बड़ा सुख तुम जैसा होनहार और संस्कारी बेटा भी दिया है। इसलिए साल में एक बार उन्हें याद कर लेती हूँ।" ◈

इच्छा-शक्ति

सुमन एक स्वाभिमानी स्त्री थी। वह चाहती तो सूरज का घर छोड़कर उससे अलग रह सकती थी या अपने माता-पिता के पास जा सकती थी। वह अपनी माँ की तरह कमजोर बनकर नहीं अपितु एक ताकत बनना चाहती थी। वह अलग ही मिट्टी की बनी थी। वह 'अबला नहीं सबला' बनकर हालात का मुकाबला करना चाहती थी।

◈ i tk p?k
विवेकानंद इंटरनेशनल
सी.सै. स्कूल
आई.पी. एक्सटेंशन
पटपड़गंज, दिल्ली

सुमन एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की थी। वह अपने दोनों भाइयों रवि और मोहन से छोटी थी। पिता की लाड़ली, माँ की दुलारी, भाइयों की प्यारी–सी बहन जिसके नखरे उठाने के लिए घर के सारे सदस्य हमेशा तत्पर रहते थे, वह परिवार में ही नहीं अपितु अपनी अध्यापिकाओं की भी बहुत चहेती थी।

वह एक योग्य और होनहार छात्रा थी। वह वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता आदि में भी सर्वश्रेष्ठ छात्रा का पुरस्कार पाती थी। वह अकसर चुपचाप रहती थी जिसका कारण थे उसके पिता। वह शराबी प्रवृत्ति के थे। सुमन की माताजी उन्हें अगर शराब पीने के लिए मना करती तो वे उनके साथ गाली–गलौच भी करते थे। जिसके कारण सुमन तथा उसके भाई उनके पिता से बहुत डरते थे।

वे अपनी माता से बहुत प्रेम करते थे जिस कारण वे अपने पिता का विरोध नहीं कर पाते थे। सुमन अपनी रोती माँ को देखकर बहुत दुःखी होती। अपने पिता को शराब न पीने की सलाह देती तो उसके

पिता उसे डाँटकर उसे वहाँ से हटा देते। इस कारण सुमन हर समय अपना ध्यान पढ़ाई पर केंद्रित करने लगी ताकि उचित समय आने पर वह इस बुराई के खिलाफ आवाज उठा सके।

समय बीतता रहा, स्कूली पढ़ाई के पश्चात् वह उचित शिक्षा प्राप्त करने के लिए कॉलेज गई। वह देखने में गजब की आकर्षक थी। उसकी आँखें, चाल सभी को अपना दीवाना बना लेती थी।

अंकित एक शांत, सामान्य स्वरूप व पढ़ाई में मध्यम छात्र था। वह एक संपन्न परिवार का इकलौता पुत्र था। वह पहली नजर में सुमन का दीवाना हो गया। सुमन भी अंकित को पसंद करती थी परंतु वह अपने पिता के स्वभाव को भी उचित प्रकार से जानती थी। उसे मालूम था कि उसके पिता, जो हर समय उसे एक ही बात पर बल देती थी कि प्रेम विवाह से बढ़कर कोई अपराध नहीं है।

उसे मालूम था कि प्रेम विवाह के कारण उन्होंने अपने बड़े पुत्र रवि से भी कोई रिश्ता नहीं रखा था। उसकी भाभी निधि ने कितने ताने, उलहाने, सामाजिक बायकॉट सहे। आखिरकार रवि परिवार से अलग रहने लगा तथा उसके पिता ने रवि को अपनी जायदाद से बेदखल कर दिया।

खैर कहावत है कि प्रेम जन्म से ही अंधा होता है। सुमन और अंकित में भी बातें होतीं व धीरे–धीरे घनिष्ठता बढ़ी और घनिष्ठता ने प्रेम का रूप ले लिया। उनका प्रेम परवान चढ़ा। सुमन के माता–पिता तक जब यह बात पहुँची तो उन्होंने उसका दिमाग ठिकाने लगाने अथवा समझाने के लिए अंकित से मिलना–जुलना बंद कराने के लिए उसका कॉलेज जाना बंद करा दिया। अंकित के माता–पिता के सामने भी यह सच्चाई आ चुकी थी। वे भी किसी मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की को अपनी बहू नहीं बनाना चाहते थे। यह उनके परिवार के शान के खिलाफ था।

अंकित उनके खिलाफ जाने का साहस नहीं जुटा पाया तथा वह

अपने पारिवारिक व्यवसाय में अपने पिता का हाथ बँटाने लगा। कुछ समय पश्चात् उसने अपने माता–पिता द्वारा पसंद की गई लड़की नेहा से विवाह कर दिया। सुमन भी अपने अरमानों का खून कर चुकी थी। समय आने पर उसका विवाह एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। सूरज अपने परिवार में बहुत लाड़ला तथा इकलौती संतान था। उसके पिता कपड़ों के व्यवसायी थे। वह तथा उसके पिता व्यापार के सिलसिले में अकसर शहर से बाहर जाते थे।

सूरज स्वभाव में बहुत अच्छा था लेकिन उसमें एक बुराई थी शराब की अति। वह शराब बहुत ज्यादा पीता था। विवाह के पश्चात् सुमन मानो अर्श से फर्श पर आ गई। उसके सपने पहले ही चूर–चूर हो गए थे लेकिन अब तो मानो उसकी किस्मत उससे रूठ गई। शादी के पश्चात् ससुराल में पहली रात ही उसे शराबी पति की दुत्कार तथा सास के तानों का शिकार बनना पड़ा।

अगले दिन सूरज ने सुमन से शराब न पीने का वायदा किया लेकिन वह अपनी आदत से मजबूर था। उसे शराब पीने की लत लग चुकी थी। जब सुमन ने इसकी शिकायत सूरज के पिता से की तो उसे बताया गया कि शराब पीना तो उच्च वर्ग के लोगों की शान है। वह तो समाज में एक स्टेटस सिंबल है। जो मद्यपान करता है समाज में उसके कार्य आसानी से हो जाते हैं। ऐसी बातें करके सूरज के पिता ने उसका मुँह बंद कर दिया तथा जबान चलाने के कारण उसका तिरस्कार किया गया।

वह सूरज के प्यार के खातिर सब सह गई और चुप रही। सुमन जानती थी कि सूरज वास्तव में इतना बुरा नहीं है जितना कि वह शराब पीने के बाद होता है। वह मानव से दानव बन जाता था, हित–अहित भूल जाता था।

ऐसा नहीं था कि सूरज शराब को पसंद करता था, वह भी सुमन के समझाने के पश्चात् शराब को बुराई मानकर उसे छोड़ना चाहता था। उसके पिता, मित्र, व्यवसायी तथा साथी उसे 'जोरू का गुलाम'

कहते थे। वह गुस्से में अपने होश खो देता था। सुमन ही उसके गुस्से का शिकार होती।

सुमन एक स्वाभिमानी स्त्री थी। वह चाहती तो सूरज का घर छोड़कर उससे अलग रह सकती थी या अपने माता–पिता के पास जा सकती थी। वह अपनी माँ की तरह कमजोर बनकर नहीं अपितु एक ताकत बनना चाहती थी। वह अलग ही मिट्टी की बनी थी। वह 'अबला नहीं सबला' बनकर हालात का मुकाबला करना चाहती थी।

उसके पिता अपनी बेटी को दुःखी नहीं देख सकते थे। आज उन्हें अपने किए पर शर्मिंदगी महसूस हो रही थी। वे कभी अच्छे पिता और अच्छे पति नहीं बन पाए उन्हें अपने किए पर बहुत पछतावा था। उन्होंने स्वयं को बदलने का प्रयास किया। सुमन के अत्याधिक प्रेमपूर्वक बर्ताव ने सुमन के पति और ससुर को भी नशा छोड़ने के लिए मजबूर किया।

सुमन उन्हें अपने साथ नशामुक्ति केंद्र लेकर गई। वहाँ लगभग दो महीने सूरज का इलाज चला। अब वह एक योग्य इंसान, अच्छा पति व पिता बना। अब वह तथा सुमन समाज के अन्य लोगों की भी मदद करने लगे तथा उन्हें नशे को दूर करने के लिए प्रेरित करने लगे।

यह सब हुआ सुमन के आत्मविश्वास, हिम्मत, लगन व उसकी इच्छा शक्ति के कारण। अगर वह सक्षम नहीं होती तो आज भी हजारों नारियों की भाँति अपने ससुराल में प्रताड़ना और हिंसा का शिकार बनती। वास्तव में हर व्यक्ति के अंदर अच्छी भावनाएँ छिपी होती हैं। जरूरत है तो उसे पहचानने की। ◈

समय बड़ा निष्ठुर है

◈ r".kk nÙkk
दिल्ली पब्लिक स्कूल
ओ.एन.जी.सी. नजीरा
शिवा सागर, असम

कुछ दिनों बाद राघव को एक चिट्ठी मिली जिसे पढ़कर वह फूट-फूटकर रोने लगा। चिट्ठी लेकर वह तुरंत अपने गाँव की ओर रवाना हो गया किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। राघव की माँ अब इस दुनिया में नहीं रही। दो दिन पहले ही उनका अंतिम संस्कार हो गया था।

fdसी ने शायद सच ही कहा है–दुनिया में 'माँ' शब्द बड़ा ही पावन और निर्मल है। इस शब्द के जुबान पर आते ही बस दिल की हर गहराइयों में जीवन का संचार हो जाता है। सच कहते हैं–"माँ तेरी ये सुंदर काया, व्यर्थ लगे दुनिया की माया"।

राघव की माँ राघव से बहुत प्यार करती थी। किंतु राघव की माँ में एक खोट था। वह एक आँख से अंधी थी। माँ राघव से बेहद प्यार करती थी। राघव जब दो साल का था तब एक सड़क दुर्घटना में उसके पिता का देहांत हो गया। राघव की माँ ने उस दिन से आज तक न जाने कितनी मुसीबतों का सामना किया था लेकिन कभी भी राघव को अभाव महसूस होने नहीं दिया।

यूँ ही दिन बीतते गए और राघव चार साल का हो गया। राघव की माँ एक छोटे से घर में रहती थी। उसकी थोड़ी–सी जमीन थी। वह दिन–भर दूसरों के कपड़े सीलती और एक–एक पैसा जमा करके राघव की हर जरूरतों को पूरा करती थी।

इस तरह दिन बीत रहे थे। माँ ने सोचा कि अब राघव को एक अच्छे से स्कूल में दाखिल कर देना चाहिए। इस तरह राघव स्कूल जाने लगा। माँ उसे हर दिन स्कूल छोड़ने जाती थी। समय बीतने लगा और वह छठी कक्षा में पहुँच गया। समय कभी किसी मोड़ पर बड़ा ही निष्ठुर हो जाता है। परिवर्तन होना स्वाभाविक है।

राघव में भी धीरे–धीरे बदलाव आने लगा था। अब उसके दोस्त उसे चिढ़ाते थे कि उसकी माँ एक आँख से नहीं देख सकती है। कुछ छात्रों ने तो उसे स्कूल में नाम ही दे डाला–'अरे अंधी माँ का बेटा'। सभी उसे ऐसे ही पुकारने लगे।

धीरे–धीरे राघव बदलने लगा। वह बड़ा ही दुखी और चिड़चिड़ा हो गया था। शायद अपने दोस्तों के डर से उसने अपनी माँ के आदर्शों को भी भुला दिया था। उसने अब माँ के साथ खुलकर बात करना भी छोड़ दिया था। पर एक दिन आया कि उसने अपनी माँ से कहा, "माँ तुम मुझे अब स्कूल छोड़ने मत आया करो।"

माँ ने पूछा, "लेकिन क्यों?" राघव ने कहा, "नहीं माँ मेरे दोस्त मुझे चिढ़ाते हैं क्योंकि तुम अंधी हो ना।" यह सुनते ही माँ स्तब्ध रह गई। माँ ने कहा, "तू चिंता मत कर, मैं कल से तुझे छोड़ने स्कूल नहीं जाऊँगी।"

दूसरे दिन से राघव अकेले ही स्कूल जाने लगा। यूँ ही समय बीतता गया और राघव ने देखते ही देखते स्कूल की शिक्षा समाप्त कर ली और वह कॉलेज में पहुँच गया। कॉलेज की डिग्री लेने के बाद जल्द ही उसे एक अच्छे ऑफिस में नौकरी भी मिल गई थी। माँ अपने बेटे को इस तरह उन्नति के पथ पर आगे बढ़ते देखकर बहुत खुश थी। वह हर दिन ईश्वर को पूजती थी कि उसका बेटा और आगे जाए। दुनिया की हर एक खुशी उसके कदम चूमे।

एक दिन राघव अपना ऑफिस का टिफिन ले जाना भूल गया। माँ का मन नहीं माना और वह जाकर ऑफिस पहुँच गई। परंतु राघव

उसे देखकर भड़क गया और घर लौट जाने को कहा। ऑफिस में एक कर्मचारी ने जब राघव से उसके बारे में पूछा तो राघव ने कहा कि वह उनके घर की आया है जो बचपन से ही उसकी देखभाल करती है। राघव अपने सम्मान को बचाने के लिए झूठ बोलने से भी नहीं कतराया।

राघव को एक साल बाद उसकी कठोर मेहनत और अच्छे काम के लिए नौकरी में पदोन्नति भी मिल गई थी। राघव ने देखते ही देखते शादी कर ली और उसका तबादला मुंबई हो गया। बूढ़ी माँ को घर पर छोड़ कर वह मुंबई अपनी पत्नी के साथ चला गया।

दिन बीतते गए और वह अपने घर के बारे में भी भूल गया था। माँ को सिर्फ दो–तीन हजार रुपये भेज देता था। राघव की माँ बहुत कमजोर हो गई थी। उसके शरीर में अब उतनी ताकत भी नहीं बची कि वह कुछ काम कर सके। राघव को एक सुंदर बेटा पैदा हुआ। वह अपनी पत्नी के साथ खुश था।

राघव की माँ एक बार अपने पोते को देखना चाहती थी। अपनी बेकार पड़ी जमीन को बेचकर उसने थोड़ा पैसा जमा कर लिया। अब वह सिर्फ बेटे के पास जाने के लिए बेकाबू हो गई। अपने दूर के रिश्ते के भाई के साथ वह मुंबई चली गई।

बेटे के घर पहुँचकर वह बहुत ही खुश थी। राघव माँ को देखकर भड़क गया। उसने पूछा, "माँ तुम यहाँ क्यों आई हो?" माँ ने कहा, "बेटा, मैं शायद और ज्यादा दिन नहीं रहूँगी। मैं अपने नाती को एक बार देखना चाहती हूँ।"

राघव ने अपनी माँ को झूठ बोला कि उसकी पत्नी अपने माँ के घर गई है। राघव ने कहा कि वह भी आज दिल्ली ऑफिस के काम से जा रहा है। उसने अपनी माँ को घर लौट जाने को कहा। माँ मन मारकर, दिल पर पत्थर रखकर वापस लौट आई।

कुछ दिनों बाद राघव को एक चिट्ठी मिली जिसे पढ़कर वह

फूट–फूटकर रोने लगा। चिट्ठी लेकर वह तुरंत अपने गाँव की ओर रवाना हो गया किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। राघव की माँ अब इस दुनिया में नहीं रही। दो दिन पहले ही उनका अंतिम संस्कार हो गया था।

चिट्ठी को राघव बार–बार पलटने लगा और अपनी किस्मत पर रोने लगा। पत्र में लिखा था, "बेटा, जिस माँ को अंधी मानकर तू हमेशा उससे दूर रहा, उस माँ को कोई गम नहीं। आज इस दुनिया को तू जिस आँख से देख रहा है वह मेरी ही है। क्योंकि बेटा जब तू पैदा हुआ था तो तेरी एक आँख खराब थी लेकिन डॉक्टर ने भरोसा दिया था कि नई आँख अगर मिल जाए तो वह फिर देख सकेगा। आज मैं नहीं हूँ बेटा लेकिन मेरे दिए संस्कार कभी व्यर्थ नहीं जाएँगे। तू एक दिन जरूर समझेगा। बेटा तू खुश रह और अच्छे कर्मों और अपनी नैतिक शिक्षा को मत भूल, उसका सही प्रयोग कर।" राघव अपनी गलती पर बहुत पछताया। ◈

अनछुए पल

जब तलाक के कागज मनु के हाथ में आए तो न जाने कहाँ से उसमें ताकत आ गई और वह दुखी होने के बजाय खुश हो गई। उसे लगा वो एक ऐसी गठरी के भार से मुक्त हो रही है जिसे वह एक बोझ की तरह उठा रही थी। मनु ने सूटकेस उठाया और रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ गई।

◈ lxhrk 'kekZ
बसावा इंटरनेशनल स्कूल
सेक्टर–23, द्वारका, दिल्ली

vkज मनु बहुत खुश है। उसे लग रहा है जैसे वह बंधन मुक्त हो गई है। वह आज उड़ना चाहती है, आसमान को छूना चाहती है। कुछ ऐसा करने की फिराक में है जिससे वह खुशियों की अपार सीमाओं को पार कर जाए।

अचानक उसकी आँखें छलछला गईं। सोचने लगी की बंधन मुक्त होकर क्या वह सारी खुशियों का भरपूर मजा ले पाएगी? क्या वह वाकई में बेड़ियों से छूटना चाहती थी? उसने तो रवि से प्यार किया था, सच्चा प्यार। उसके प्यार में इतनी अंधी हो गई थी कि अपनी लाचार बूढ़ी माँ को बेसहारा छोड़कर रवि के पास दौड़ी चली आई थी।

रवि की माँ की शर्त थी, "शादी करनी है तो उसे हमारे पास आकर रहना पड़ेगा। तुम कहीं नहीं जाओगे, समझे।" माँ चिल्लाती हुई अंदर चली गई थी।

शादी के दिन दुल्हन के लिबास में मनु बहुत सुंदर लग रही थी। उसे 'चौदहवीं के चाँद' की उपाधि मिल चुकी थी। मनु माँ को ढूँढ़ रही

है। किसी से पूछने पर पता चला कि घर की कोठरी में बैठी रो रही है। मनु दौड़कर माँ के पास पहुँची और उसकी गोदी में सिर रखकर सिसकने लगी।

उसकी माँ हमेशा से उसकी प्रेरणा का स्रोत रही। हमेशा उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती रही। मनु पढ़–लिखकर इंजीनियर बनना चाहती थी। माँ की हैसियत न थी कि उसे इंजीनियर बनाए। पिताजी मजदूरी करते थे। जितना भी पैसा कमाते थे शराब में उड़ा देते।

रोज शाम को दारू पीकर आते। माँ शालीनता से खाना पिताजी के आगे रखती तो थाली में लात मार देते। बुरी–बुरी गालियों की बौछार कर देते। माँ रोज रात को रोकर ही सोती थी। खुद रोती थी और मनु दिलासा देती रहती। एक दिन मनु ने माँ को कहा, "मैं कोई नौकरी कर लेती हूँ ताकि घर का खर्चा चले।" माँ ने चिल्लाकर कहा था, "खबरदार! ऐसी बात दोबारा मत कहना।"

"माँ लोगों के घरों में बर्तन माँजती, सफाई करती। आज न जाने क्यों जज साहब की याद आ रही है जिन्होंने माँ को बैंक से लोन दिलवाने में मदद की थी। उस लोन से माँ ने मनु की इंजीनियरिंग कॉलेज की फीस भरी थी।

कॉलेज के पहले दिन सभी बच्चे बहुत खुशी–खुशी से आ रहे थे। क्लास में घुसते ही अचानक पीछे से आवाज आई, "हेलो मनु।" पीछे मुड़कर देखा तो रवि था। उसे देखते ही लगा कि आज भगवान से कुछ और माँगती तो मिल जाता।"

रवि जज साहब का बेटा था। माँ जब उनके यहाँ काम करती थी तो मनु भी कभी–कभी उनके घर जाती थी। माँ जब कमरों की सफाई करती थी तब रवि की इंजीनियरिंग की ऐनट्रेंस की किताबें मनु को आकर्षित करती थी। सच कहूँ मनु ने ऐनट्रेंस की तैयारी रवि की किताबें पढ़कर की।

मनु चुपचाप उसकी किताबें लेकर कोने में बैठकर पढ़ती रहती।

एक दिन जब मनु माँ के साथ उनके यहाँ गई तो रोने की आवाज सुनी। पता चला दिल के दौरे से जज साहब गुजर गए। मनु एकदम सन्न रह गई। ऐसा लगा जैसे उसके पिताजी चले गए। सामने रवि बैठा था, वह जोर–जोर से रो रहा था। उसका मन किया कि वह उसके पास जाए और गले लगकर जोर–जोर से रोऊँ।

रवि उठकर मनु के पास आया और अचानक उसका हाथ पकड़कर बोला कि मनु पिताजी मुझे छोड़कर चले गए। जोर–जोर से रोने लगा। सभी लोग मनु को देख रहे थे कि कैसे मालिक के लड़के ने नौकरानी का हाथ पकड़ लिया। मनु ने जल्दी से हाथ छुड़वाया और बाहर भाग गई।

मनु को पहली बार अहसास हुआ कि हम दोनों में कुछ तो है जो एक–दूसरे की ओर खींचता है। आज इंजीनियरिंग कॉलेज में रवि को देखकर ऐसा लगा जैसे रेगिस्तान में फूल खिल गए। दोनों चार साल कॉलेज में रहे। वह चार साल कैसे गुजरे पता ही नहीं चला।

एक दिन मनु घर पहुँची तो माँ ने कहा कि तैयार हो जा, लड़के वाले देखने आ रहे हैं। आज पहली बार वह जोर से चिल्लाई। मनु ने कहा, "मुझसे बिना पूछे आप मेरी शादी कैसे तय कर सकती हैं।" शायद यह उच्च–मध्यम वर्ग के बच्चों के बीच रहने का असर था।

माँ रोने लगी और विलाप करने लगी, "तो क्या जिंदगी भर कुँवारी रहेगी?"

मनु ने रोते–रोते कहा था कि "मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी। आपको कौन संभालेगा?" "जो तेरे मन में आए वो कर।" कहती हुई माँ रोती हुई चली गई थी।

वेलेंटाइन के दिन रवि ने मनु को प्रपोज किया था। पर उसकी शर्त थी कि रवि को उसके घर आकर रहना पड़ेगा। मनु को बाद में अहसास हुआ कि रवि इतने बड़े घर में ऐशो–आराम से रहता है, वह क्यों घर आकर रहेगा। रवि ने हामी भर दी और कहा कि वह माँ से बात करेगा।

"तू मुझे छोड़कर चला जाएगा। तेरे तो पिताजी भी नहीं है, रवि तू इतना नालायक निकलेगा मैंने सोचा भी नहीं था।"

"शर्म कर एक तो नौकरानी से शादी कर रहा है दूसरे घर छोड़ना चाहता है। तुझे मेरा खयाल नहीं।" माँ ने कहा।

रवि को लगा माँ ठीक कह रही है। उसने भी मनु से कह दिया कि उसे उसके घर आकर रहना पड़ेगा। माँ ने भी समझाया था कि लड़कियाँ ससुराल में अच्छी लगती हैं। तू मुझे मिलने के लिए आती रहना।

"मनु! मनु क्या हो गया। कहाँ खो गई। चल बारात आ गई है।" सुशीला कान में चिल्ला रही थी।

ससुराल पहुँचते ही दहलीज पर सासू माँ खड़ी दिखी। न हाथ में आरती का थाल, न ही शगुन।

"इसे अंदर ले आ। जबरदस्ती की शादी है। मेरे बेटे के गले पड़ गई। सुंदर और अमीर लड़का देखा और उसे फँसा लिया। रवि तेरी बुद्धि मारी गई थी जो इस लड़की से शादी की। इतने बड़े–बड़े रिश्तों को ठुकरा दिया।"

"माँ छोड़ो, क्या पुरानी बातों को लेकर बैठ गई।" रवि ने कहा। माँ चिल्लाई, "खबरदार...जो मुझे समझाने की कोशिश की।" माँ तेजी से मनु की तरफ बढ़ी और थप्पड़ मारते हुए बोली, "सुन लड़की, आज तेरी वजह से पहली बार इसने मुझसे जुबान लड़ाई है।"

मनु को हैरानी हुई, रवि चुपचाप खड़ा देखता रहा और उसने अपनी माँ से कुछ भी नहीं कहा।

धीरे–धीरे माँ के अत्याचार बढ़ते गए। उन्होंने मनु को तानें देना शुरू कर दिया। हर समय मनु की माँ को कोसती रहती। रवि मूकदर्शक बना उनकी बातों को सुनता रहता।

सासू मनु से सारा दिन काम करवाती। शाम को रवि के आने से पहले कमरे में भेज देती। रवि को लगता कि मनु महारानियों की तरह रह रही

है। रवि भी यही कहता। "तम्हारे तो मजे हैं, सारा दिन खाती हो और आराम करती हो।"

रवि अपनी माँ के खिलाफ कुछ भी नहीं सुनना चाहता था। धीरे–धीरे रवि और मनु के बीच दूरियाँ बढ़ती गईं। दोनों के बीच पति–पत्नी के रिश्ते जैसा कुछ भी नहीं था।

एक दिन मनु ने हिम्मत करके रवि को उसकी माँ के बारे में बताया तो उन्होंने जोर का थप्पड़ मारा और चिल्लाकर बोले, "मुझे तुमसे तलाक चाहिए।"

जब तलाक के कागज मनु के हाथ में आए तो न जाने कहाँ से उसमें ताकत आ गई और वह दुखी होने के बजाय खुश हो गई। उसे लगा वो एक ऐसी गठरी के भार से मुक्त हो रही है जिसे वह एक बोझ की तरह उठा रही थी। मनु ने सूटकेस उठाया और रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ गई। ◈

डोर

◈ **uhr ykck**
यू.एस.पी.सी. जैन पब्लिक स्कूल
लुधियाना, पंजाब

कहते हैं कि आज हम जो हैं वो सब अपने ही अध्यापकों की वजह से हैं और हम जो नहीं हैं वो भी अध्यापकों की वजह से ही हैं। खैर वह रोज आधा घंटा रुकता, वो सामने खड़ा होता, किसी भी विषय को बोलकर सुनाता और मैं सामने बैठकर सुनती और उसका हौंसला बढ़ाती। अब अध्यापक और विद्यार्थी का रिश्ता नैतिकता की डोर से बंध गया था जहाँ पर पैसे, वक्त, अहं, ऊँच, नीच सब खत्म हो जाता है।

'kkम के पाँच बजने वाले थे। रविवार होने की वजह से सुबह थोड़ी देर से उठी तो अब और लेटने का मन नहीं था। सोचा कि चलो आने वाले शनिवार को अपनी परफारमैंस देनी है तो किताब उठाकर थोड़े नोट्स और बना लूँ, फिर बच्चे उठ जाएँगे तो वही जिद्द शुरू हो जाएगी कि हमें पहले पार्क घुमाकर लाओ।

बाहर सूखते हुए कपड़े इकट्ठे किए, एक प्याला चाय बनाकर किताबें ढूँढ़ी, पता चला कि डॉ. घनश्याम की व्याकरण शायद स्कूल में ही छोड़ आई। फिर बी.बी.सी. की किताब उठाकर अभी पेज पलटने ही शुरू किए थे कि दरवाजे की घंटी घनघनाई। जल्दी से दरवाजे की तरफ लपकी ताकि तेज आवाज सुनकर छोटी बेटी डरकर उठ न जाए। रोएगी तो बेकार में तंग करेगी।

खैर, दरवाजा खोला तो सामने एक खूबसूरत सा नौजवान हाथ में एक पैकेट लिए खड़ा था। मैंने कहा, "जी।" मन में पहला खयाल आया कि शर्मा जी ने जानसन बेबी किट का आनलाइन ऑर्डर किया

था, शायद फर्स्ट क्राई से कोई डिलीवरी ब्वाय होगा। लेकिन पैकेट देखकर विचार बदल गया। अभी इसी कशमकश में थी कि वह नौजवान युवक पैरों पर झुक गया।

"अरुणा मैडम, मैं प्रताप सिंह, आपका विद्यार्थी, नाऊ जनरल मैनेजर इन कार्पोरेट सैक्टर।"

बहुत बच्चे पढ़ गए अब तो उनकी शक्लों से भी पहचानना मुश्किल पड़ता था क्योंकि सामान्य सी बात है कि जब हम आत्मनिर्भर हो जाते हैं तो शख्शियत पर असर दिखता है। कई बच्चे कभी–कभार आ जाते हैं, कुछ याद रखते हैं, कुछ याद रखने का वायदा कर भूल जाते हैं तो कुछ को हम भूल जाते हैं।

थोड़ा याददाश्त शक्ति पर जोर डालते हुए बोली, "अच्छा, अच्छा, आओ बेटा! अंदर आओ।"

"ओह मैडम! आपकी चाय और आपकी आदत, वही किताबें और वही चाय का कप, अब कितनें कप हो जाते हैं?" बैठते हुए प्रताप बोला।

"कुछ नहीं, बस सारे दिन में छः या सात कप। और दो–तीन स्कूल में भी, आपकी वही सेलों की बॉटल।"

"हाँ।"

"मैडम, देखो आपकी पसंद की चीज लाया हूँ।"

"क्या?"

"मिठाई, मुझे पता है आप काजू बादाम से ज्यादा मिठाई से प्यार करती हो।"

"मन में आया, अरे! ये कौन है, जो इतनी अच्छी तरह से मेरे बारे में जानता है। सोचते हुए पूछा, "और बेटा, आजकल कहाँ पोस्टिड हो?"

"मैडम, पहली पोस्टिंग ही कुरुक्षेत्र की हुई है, इसीलिए तो सबसे पहले आपसे मिलने आया हूँ। जब आखिरी स्करूटनी चल रही थी तो मन में यही विचार था कि पोस्टिंग लोकल ही हो। बीकास फर्स्ट ऑफ ऑल आई नीडीड योर बलैसिंग्स। मैडम, सी माए लैटर।"

अपनी आदत के अधीन मैंने उस पत्र को चूमा, मस्तक से लगाया और प्रभु से उस बच्चे की कामयाबी की प्रार्थना की।

"अच्छा बेटा! चाय या ठंडा।"

"मैडम, आज तो आपके वाली चाय ही एक बार फिर। आपको याद है, जब बहुत ठंड होती थी तो आप कभी–कभार अपनी चाय शेयर करा दिया करती थी। वही इलायची की खुशबू और मसाले सब याद हैं, आज वही चाय आपके हाथ से।"

इतने में शर्मा जी भी घर आ चुके थे। दोनों बैठकर अपनी बातों में व्यस्त हो चुके थे और मैं रसोई घर में।

चाय के साथ बिस्कुट और नमकीन पेश किया तो एक आवाज ने दिमाग में झनझनाहट पैदा कर दी। "मैडम, म्म मैं तो स सब, सब याद रखता हूँ, प्प पर, पर अ आ, आप भ भ भूल गई कि म म मुझे स स सि सिर्फ क क्र क्रम वाले ब बि बिस्कुट ही अ अ अच्छे लगते हैं।"

"ओह! ओह प्रताप माय सन, इस दिस यू, नाऊ आई रेकोगनाइज़ यू, ओह! गॉड बलैस यू। माय डीयर, विश्वनाथ प्रताप सिंह।"

"यस मैडम, यस मैडम।"

इसी बीच अपनेपन से मम्मी, पापा के बारे में पूछा, बड़ी बहन की शादी हो चुकी थी, पापा अपने काम में व्यस्त और मम्मी घर के कार्यों में।

छह बज चुके थे। प्रताप मिठाई का डिब्बा और ढेर सारी यादें छोड़कर चला गया था, तभी शर्मा जी ने पूछा कि बच्चों का होमवर्क हो गया? इसी बीच बड़ी बेटी उठकर आ चुकी थी, बोली, पापा मेरा रिटन वर्क तो हो चुका है, कल टैस्ट है, बस उसी की तैयारी एक बार पक्की करनी है।

छोटी भी उठ चुकी थी पर उसे मनाना, उठाना और कुछ खिलाना अपने आपमें एक परीक्षा साबित होता और वह भी छोटा होने का भरपूर फायदा उठाती है, यहाँ तक कि उसे बड़ी बहन भी माँ के बराबर लगती है, जो उसे प्यार करे, गोद में उठाकर घुमाए और

उसकी हर फरमाइश को पूरा करे। पर आज एक अच्छा सा लालच देने के लिए मैं बोली, "मेरी प्यारी राजकुमारी, मेरी मखनी, मेरी सुंदर परी, उठो, देखो! आज तो घर में लड्डू आए हैं।"

एकदम से बोली, "तो शाले के शाले लड्डू मेले।"

बस वही दिनचर्या शुरू हो गई, बच्चों को दूध बनाकर देना, रात के खाने की तैयारी, बच्चों की, अपनी शर्मा जी की यूनीफार्म, बच्चों का बैग पैक और वही सुबह की तैयारी।

रात के 10 बजे तो बच्चों को भी पता होता है कि अभी मम्मा अपना काम करके आएगी। शर्मा जी भी सोने की तैयारी में थे और बच्चे अपनी मस्ती में गुल। ढेर सारी शरारतें, ढेर सारा बचपन, छोटी की मासूम सी प्यारी–प्यारी बातें, बड़ी का उसे चिढ़ाना, मनाना और डोरीमोन तथा खबरें चैनल देखने के लिए बच्चों तथा पापा जी जंग। मैं एक बार फिर अपनी किताबों के बीच।

अब सिलसिला सोच का था। शायद आत्मविश्लेषण का, याद आया 2008 का सत्र जब पहली बार अंग्रेजी विषय मुझे + 2 कक्षा का सौंपा गया। कक्षा कॉमर्स विभाग की थी। बहुत ही अजीब सी स्थिति होती है इस उम्र की, इस दौर की, किशोरावस्था में पहुँचते बच्चे, उनका छूटता बचपन, पर दिमाग जो शायद यह समझने को तैयार ही नहीं होता कि क्या सही है और क्या गलत।

कुछ दिन चलते रहे बच्चों को समझने में और खुद को उनके स्तर पर लाने के लिए। कई बार हम समझते हैं कि बड़े बच्चे हैं इन्हें थोड़ा हाई–फाई तरीके से पढ़ाना चाहिए पर सच मानो अगर बड़े बच्चों की कक्षा में एक अध्यापिका जाएगी, वो कभी नहीं स्वीकारेगी लेकिन यदि एक अध्यापिका माँ तो कभी दोस्त या एक दिशा निर्देशिका जाएगी तो वो बच्चे अपने बन जाएँगे।

धीरे–धीरे एक बात महसूस की कि जब भी एक बच्चा कुछ कहने की कोशिश करता तो सब हँसते और इस वजह से वह हर बार चुप

हो जाता। एक दिन मैंने कक्षा में एक आर्टीकल लिखने को दिया, विषय रखा, "स्कोप ऑफ कॉमर्स इन फ्यूचर"। जब पर्चे जाँचने बैठी तो एक बच्चा, जिसके विचारों ने मुझे भी नई रोशनी, नया ज्ञान, नई सीख दी, वो था प्रताप। कुछ व्याकरण की गलतियाँ थीं, उन्हें ठीक किया, अगले दिन कक्षा में पर्चे वापस किए तो कक्षा के सामने प्रताप को पढ़ने को कहा। जब प्रताप ने बोलना शुरू किया तो बोला, "इ, इन, ट, ट, टूडेज़, व, व, वल, वर्ल्ड..." और सभी हँसना शुरू हो गए और प्रताप बिना आज्ञा लिए ही बैठ गया। तब भी स्कूल में कुल सात घंटों के बाद ही + 1 और + 2 के विद्यार्थियों की छुट्टी हो जाती थी और मेरा आठवाँ घंटा खाली होता था।

प्रताप को रुकने को कहा और बाकी सभी को जाने दिया। यहाँ से शुरू हुई हम दोनों की जिद्द, हम दोनों की परीक्षा। मेरी जिद्द कि उस बच्चे में आत्मविश्वास को पैदा करना है और उसकी जिद्द की तुतलाने की आदत को ठीक करना है।

कहते हैं कि आज हम जो हैं वो सब अपने ही अध्यापकों की वजह से हैं और हम जो नहीं हैं वो भी अध्यापकों की वजह से ही हैं। खैर, वह रोज आधा घंटा रुकता, वो सामने खड़ा होता, किसी भी विषय को बोलकर सुनाता और मैं सामने बैठकर सुनती और उसका हौंसला बढ़ाती। अब अध्यापक और विद्यार्थी का रिश्ता नैतिकता की डोर से बंध गया था जहाँ पर पैसे, वक्त, अहं, ऊँच, नीच सब खत्म हो जाता है। एक दिन प्रताप बोला, "मैडम! आप कुछ फीस ले लिया करो।"

अपनी आदत के मुताबिक मैंने कहा, "तुम्हें पता है प्रताप, मुझे मिठाई बहुत पसंद है, जब तुम जिंदगी में कामयाब हो जाओ तो अच्छे से मोतीचूर के लड्डू खिलाना।"

इतने में आवाज आई, "मम्मा आ जाओ, मुजे निन्नी आई है, कहानी छा दो।" साथ ही एक और आवाज भी थी बेटा, आज पापा से काम चला लो, मम्मा तो सारे लड्डू खाकर ही आएगी। ◈

मायाजाल

◈ e?kuk Jhfuokl Ikor
के.एल. इंग्लिश मीडियम स्कूल
जुले सोलापुर
सोलापुर, महाराष्ट्र

रात को दो बज गए हैं। राकेश जाग गया है। उसके घुटनों में दर्द हो रहा है। देखो तो माँ उसके पैरों के पास बैठी है। वह विचारों में डूबी हुई है। उसने माँ को आवाज नहीं दी। उसे थोड़ा पानी चाहिए पर उसने नहीं माँगा। अब उसे ऐसे लग रहा था कि अब माँ को परेशान नहीं करना चाहिए। वह सब काम खुद करना चाहता है, पर असह्य है। बिना पानी गिरा ही वह आँखें बंद करके विचारों में डूब गया।

ek...माँ...राकेश अस्पताल के बैड पर पड़े–पड़े जोर से चिल्ला रहा है। माँ बाहर बैठी रो रही है। उनके आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। बेटे की आवाज सुनकर भीतर आती है। उसे पानी पिलाती है और फिर बाहर जाकर बैठती है। राकेश ने पानी पीया पर उसे नींद नहीं आई। उसकी आँखें भरी हुई हैं। पुरानी घटनाएँ उसकी आँखों के सामने नाच रही हैं। कैसे थे हम, कितने खुश थे हम माँ–बाबूजी के साथ। कितना प्यार करते थे दोनों हमसे। उसकी यह हालत सिर्फ उसकी जिद्द की वजह से हो गई है।

राकेश सोच रहा है, विचारों में डूबा है। उसे सुबह की बातें याद आ रही हैं। सुबह माँ के साथ उसकी बहस हो गई थी। वह शादी करना चाहता था। इसी विषय पर उसकी माँ के साथ बहस हो गई थी। माँ का रोज का जवाब, "जिस दिन तू शराब छोड़ देगा, उस दिन मैं तुम्हारे लिए लड़कियाँ देखना शुरू करूँगी।"

सुनकर वह कितना गुस्सा हो गया था। गुस्से में ही वह गाड़ी लेकर

राजेश के पास गया था। राजेश उसका बचपन का दोस्त, बारहवीं तक दोनों साथ–साथ पढ़े थे। राकेश चाहता था कि राजेश उसकी माँ को समझाए क्योंकि आजकल माँ राकेश के अलावा राजेश की ही सुनती है।

राजेश ने उसे बहुत समझाया लेकिन वह माना नहीं। दोनों में बहस हो गई। अब वह वहाँ से विनोद के पास गया। विनोद उसका कॉलेज का दोस्त था। जब से उसकी विनोद के साथ दोस्ती हो गई थी तब से वह शराब पीने लगा था। आज भी विनोद ने उसे बहुत शराब पिलाई। नशे में चूर वह घर आ रहा था। घर आकर वह फिर से माँ के साथ बहस करना चाहता था।

गाड़ी स्टार्ट तो की पर पैर लड़खड़ा रहे थे। वह अपने पैरों पर ठीक–से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। फिर भी उसने गाड़ी स्टार्ट की। गाड़ी की गति कभी बढ़ जाती तो कभी कम हो रही थी। अचानक उसकी गाड़ी की गति बढ़ गई। खुद को सँभालने से पहले ही गाड़ी और वह दोनों ट्रक के नीचे आ गए। वह बेहोश था। उसे किसने उठाया, अस्पताल में उसे कौन लाया? माँ और राजेश को कैसे पता चला? इन बातों का उसे कुछ भी पता नहीं था।

जब उसे होश आया तो खुद को बैड पर पाकर हैरान हो गया था। उसके घुटनों में दर्द महसूस हुआ। उसने अपने घुटनों को छूने की कोशिश की तो उसके होश उड़ गए थे। मानो बिजली का तार उसके शरीर से निकल गया। उसने अपना हाथ घुटनों की तरफ बढ़ाया तो उसे झटका–सा लग गया था। दोनों पैर घुटनों से गायब थे। उसके शरीर का सिर्फ पिंड बचा था। वह इतने जोर से चिल्लाया था कि माँ, राजेश और डॉक्टर सभी उसके पास आ गए थे। माँ और राजेश को देखकर वह बहुत रोया था। उसकी हालत देखकर डॉक्टर ने उसे नींद की दवा देकर फिर सुलाया था।

रात को दो बज गए हैं। राकेश जाग गया है। उसके घुटनों में दर्द हो रहा है। देखो तो माँ उसके पैरों के पास बैठी है। वह विचारों में डूबी हुई है। उसने माँ को आवाज नहीं दी। उसे थोड़ा पानी चाहिए पर उसने

नहीं माँगा। अब उसे ऐसे लग रहा था कि अब माँ को परेशान नहीं करना चाहिए। वह सब काम खुद करना चाहता है, पर असह्य है। बिना पानी गिरा ही वह आँखें बंद करके विचारों में डूब गया।

अब उसकी आँखों के सामने पुरानी घटनाएँ आने लगीं। जब वह कॉलेज जाने लगा तो माँ–बाबूजी कितने खुश थे। दोनों की आँखों में कितने सपने थे। वह अपने बेटे को इंजीनियर (अभियंता) बनाना चाहते थे। उसे नई गाड़ी दिलाई थी। पर थोड़े ही दिनों में उनके सपने चूर–चूर हो गए। विनोद ने उसे बरबादी की राह पर लाकर छोड़ा था।

राजेश ने उसे अनेक बार सजग कराया था पर उसकी आँखों पर शराब का नशा था। बाबूजी को जब पता चला तब वे बहुत डर गए थे। उन्होंने उसे अपने पास बुलाकर बहुत अच्छी तरह से समझाया था। उस दिन बाबूजी की आँखों में आँसू देखकर उसने तय किया था कि आज से वह शराब को छुएगा तक नहीं। वह विनोद का साथ छोड़ देगा।

राकेश चार दिन विनोद से नहीं मिला था। शराब नहीं पी थी। उसके इस वर्ताब से माँ–बाबूजी कितने खुश थे। बार–बार उनकी आँखों से खुशी के आँसू आ रहे थे। उस दिन वह अपने माँ–बाबूजी के साथ ही था। उनके साथ रात का खाना खाया था। बाबूजी ने उसे अपनी बचपन की बहुत सारी बातें बताई थीं। वह भी कितना खुश था। वह अपने माँ–बाबूजी को ऐसे ही खुश देखना चाहता था। जब भी उसे शराब पीने की इच्छा होती वह राजेश से बातें करता। राजेश के अच्छे विचारों से उसका मन बदल जाता।

पाँचवें दिन वह नौकरी की खोज में घर से बाहर निकला। उसकी बरबादी उसकी राह देख रही थी। घर के पास ही उसे विनोद दिखाई दिया था। उसने खुद को बहुत रोकना चाहा था पर विनोद के आगे उसकी एक न चली। विनोद ने फिर से उसे अपने मायाजाल में फँसाया था। जब उसे होश आया था, उसका नशा उतर गया था, तब वह राजेश के घर था।

इस बार बाबूजी खुद को सँभाल नहीं सके थे। वे अपनी ही दुनिया

में खोए रहते थे। किसी से बात नहीं करते थे। उन्होंने माँ जी से भी बात करनी छोड़ दी थी। दिन–भर काम करते। रात को खाना खाकर सोते। सोते सिर्फ आँखें बंद करके, उन्हें नींद कहाँ थी।

एक दिन रात का खाना खाकर सोए। सुबह जब माँ उन्हें जगाने गई तब बाबूजी सबको छोड़कर हमेशा के लिए चल बसे थे। बाबूजी की मृत्यु को अभी महीना भी नहीं हुआ तभी माँ जी के ऊपर यह दूसरा कहर टूट पड़ा।

राकेश अब सपनों से, विचारों से बाहर आया। बिस्तर में मुँह छिपाए सिसकियाँ लेने लगा। राकेश को रोते देखकर माँ उसके पास आ गई। माँ भी रोने लगी। वह बहुत रोना चाह रही थी। उसका हरा–भरा बगीचा उजड़ चुका था। उसके सपनों का महल टूट चुका था। माँ ने खुद को सँभाला।

राकेश ने अब धीरज बँधाया। उसने माँ को अपने पास बुलाया। उसकी आँखें पोंछी। उसने माँ से कहा, "माँ, भगवान ने मुझे आज बचाया है और साथ में मुझे दंड भी दिया है। मुझे बचाया है इसलिए ताकि मैं तुम्हारी सेवा कर सकूँ। मुझे अपाहिज बनाकर दंड इसलिए दिया है कि मैंने तुम्हें बहुत रुलाया। माँ, आज मैं कसम खाता हूँ कि मैं तुम्हें कभी भी नहीं रुलाऊँगा। मेरे जैसे हजारों युवकों को शराब के नशे से छुटकारा दिलाऊँगा। माँ, मैं नशामुक्ति केंद्र चला जाऊँगा। इस केंद्र के माध्यम से नशामुक्ति का प्रचार–प्रसार करूँगा। मैं अपाहिज हुआ तो क्या हुआ। इस देश के नौजवानों के सामने खुद एक उदाहरण बनकर पेश आऊँगा। तुम्हारी जैसी हजारों माँ को अपने बेटों से मिलाऊँगा। उनके आँसू पोंछूँगा। माँ, यह काम मैं मरते दम तक करता रहूँगा। अब तुम अपने आँसू पोंछ लो। अब मैं तुम्हें थोड़ा भी दुःख नहीं दूँगा। मैं यह काम तन–मन से करना चाहता हूँ। सिर्फ तुम्हारा आशीर्वाद मुझे चाहिए। अब तक मैंने तुम्हें बहुत दुःख दिया अब नहीं।

माँ की आँखें भर आईं। अब वह अपने लाड़ले को गले लगाकर जोर–जोर से रोने लगी थी। ◈

मानव जिससे सबसे ज्यादा प्यार करता है, सबसे कम उसी की परवाह करता है। क्यों? कई दफा लगता है कि हम खुद के लिए अब काम नहीं करते। हम किसी अज्ञात भय से लड़ने के लिए काम करते हैं। हम जीने के पीछे जिंदगी बर्बाद करते हैं। कल से मैं सोच रही हूँ, वो कौन-सा दिन होगा जब हम जीना शुरू करेंगे। क्या हम गाड़ी, बंगला, टी.वी., कम्प्यूटर, लैपटॉप, फोन और न जाने क्या-क्या खरीदने के लिए जी रहे हैं?

...यह कैसा साथ?

◈ euh"kk ;kno
एम.एम. पब्लिक स्कूल
वसुधा एन्क्लेव
पीतमपुरा, दिल्ली

;ह कहानी किसी और की नहीं, स्वयं मेरी है। मैं एक मध्यमवर्गीय परिवार से हूँ। जब मायके में थी तो छोटा–सा परिवार था, मैं, मेरे माता–पिता और भाई। समय से भाई का विवाह हो गया, भाभी आई सब कुछ अच्छा चल रहा था। धीरे–धीरे उसका परिवार बढ़ा, भतीजा–भतीजी की किलकारियाँ गूँजीं, बहुत मजा आता था। सारा वातावरण आनंदमय था।

मेरे लिए भी विवाह के लिए रिश्ते आने लगे और देखते ही देखते मेरा भी विवाह हो गया। विवाह से पहले भी और बाद में भी मैं नौकरी करती रही। ससुराल में भी ज्यादा लोग नहीं थे। मैं और मेरे पति अपनी जिंदगी से खुश थे। वक्त बीतता चला गया और उसके बीतने का पता ही नहीं चला।

कुछ वर्षों बाद मेरे भी आँगन में एक किलकारी सुनाई दी और वह मधुर किलकारी थी मेरी बेटी की, जिसका नाम मैंने रखा कुमुद। सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा था परंतु न जाने किसी की नजर मेरे

हँसते–खेलते परिवार को लग गई। मेरे और मेरे पति के बीच लड़ाई–झगड़े होने लगे। कलह इतना ज्यादा बढ़ गया कि हमारे रिश्ते का अंत हो गया। हमारा अलगाव यानी तलाक हो गया। आज मैं और मेरी बेटी एक साथ रहते हैं, इसमें कमी मेरे पति की है।

रोज की तरह मैं सुबह उठती, नाश्ता बनाती, दोपहर का भोजन बनाती, बेटी को स्कूल भेजती और स्वयं भी स्कूल के लिए निकल पड़ती। मेरी बेटी जानती थी कि उसके पिता हमारे साथ नहीं रहते परंतु फिर भी उसने कभी किसी तरह की कोई शिकायत नहीं की और उसको व उसके व्यवहार को देखकर स्वयं मुझे भी लगता था कि उसे किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं है।

सुबह से निकलकर जब मैं शाम 4 बजे घर पहुँचती तो वो खाना मेज पर रखकर मेरा इंतजार करती और मेरे आने पर हम खाना एक साथ खाते, उसके बाद आराम करते और शाम की चाय पीते–पीते पूरे दिन के विषय पर बातें करते फिर वह ट्यूशन चली जाती और मैं शाम के खाने की तैयारी में जुट जाती। शनिवार को उसके स्कूल की छुट्टी रहती है। मैंने सोचा आज स्कूल से जल्दी घर पहुँचकर उसे सरप्राइज देती हूँ और मैंने भी ऐसा ही किया। कल मैं स्कूल से जल्दी घर आई। आमतौर पर शाम 4 बजे तक आती हूँ पर उस दिन मैं 1 बजे ही चली आई। सोचा था घर जाकर थोड़ी देर आराम करके कुमुद के साथ बातें करूँगी, फिर कहूँगी कि आज रात का खाना खाने बाहर चलते हैं।

जब मैं घर लौटी तो वह टी.वी. देख रही थी, मैंने सोचा जब तक वह टी.वी. देख रही है क्यों न मैं भी अपने स्कूल का थोड़ा–सा काम खत्म कर लूँ। मैं काम कर रही थी इतने में ही वह मेरे लिए चाय लेकर आई, मैं चाय पीते–पीते स्कूल का काम कर रही थी। वह ट्यूशन चली गई और काम करते–करते मुझे समय का पता ही नहीं चला। रात के 8 बज चुके थे। मन में था कि कुमुद आएगी तो बाहर जाएँगे पर रात बहुत हो चुकी थी। उसने आकर खाना बनाया और

टेबल पर लगा दिया, मैं चुपचाप खाना खाने लगी। खाना खाते हुए मैंने कहा, "खाना खाकर हम लोग नीचे टहलने चलेंगे और थोड़ी गप–शप करेंगे।" वह खुश हो गई। हम खाना खाते रहे, इस बीच मेरी पसंद का कार्यक्रम आने लगा और मैं उसे देखने में लीन हो गई। कार्यक्रम देखते–देखते मैं वहीं सो गई थी। जब नींद खुली तो आधी रात हो चुकी थी। मैं खाने की मेज से उठी और हाथ–मुँह धोकर कुमुद के पास गई। वह गहरी नींद में सो रही थी, उसके पास बैठकर उसका सिर सहला रही थी और एक गहरी सोच में डूबी थी, अचानक जब मेरी सोच टूटी तो देखा सुबह हो चुकी थी। अगले दिन रविवार था। कुमुद देर तक सोती थी क्योंकि रविवार को दोनों का ही अवकाश होता था।

मैं उठी, अपने लिए चाय बनाई और कुर्सी पर बैठकर कुमुद के उठने की प्रतीक्षा कर रही थी, कुमुद उठी सुप्रभात किया, चाय पी और स्नानघर चली गई। नाश्ता किया, रात की बात जब मैंने उससे छेड़ी और माफी माँगी तो उसने पलटकर कहा, "नहीं माँ कोई बात नहीं आप भी तो सुबह से जाकर, जब शाम को घर लौटती हैं तो थक जाती हैं और अगर आप एक दिन सो भी गईं तो क्या हुआ, हम फिर कभी सैर पर चल पड़ेंगे। माँ मैं सब समझती हूँ।" उसके इन शब्दों को सुनकर बहुत राहत मिली। कुमुद थोड़ी ही देर बाद अपने दोस्तों के साथ घूमने चली गई, मैं दिन–भर घर के कामों में व्यस्त रही, शाम को उसका फोन आया, "माँ मैं रात को थोड़ी देर से लौटूँगी, आप चिंता मत करना।" रात 10 बजे जब कुमुद घर लौटी तो बिना कुछ बोले ही अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर सो गई। मैं उसके इस व्यवहार से अंजान व भौचक्की थी। जब उसके पास गई तो उसके मुँह से शराब की दुर्गंध आई, मैं हैरान हो गई, न कुछ बोलते बना और न ही सोचते, सारी रात पर कुर्सी पर बैठकर उसे एकटक देखती रही और सोचती रही कि क्या ये मेरी ही कुमुद है।

अगली सुबह रोज की तरह वो भी स्कूल चली गई और मैं भी,

शाम को जब लौटी तो घर में से सिगरेट की अजीब सी महक आई, मुझसे रुका न गया। मैंने कुमुद से पूछा तो उसके पास कोई जवाब नहीं था, वह बिना कुछ कहे ट्यूशन चली गई। उसके जाने के बाद मैंने उसकी सहेली को फोन किया और उससे बीती रात के विषय में पूछा, तब उसने बताया कि "आंटी कुमुद अंदर ही अंदर घुटती है, वह आपसे ये नहीं कह पाती कि अपने पिता की कमी उसे कितनी खलती है, वह आपके पीछे से जब अकेली होती है तो वह अकेलापन उसे घर काटने को दौड़ता है और अपने इसी एकांतवास को अपने से दूर रखने के लिए वह नशा करती है। मैंने उसे समझाया भी पर उसने यही कहा, "माँ ने मुझे कभी किसी चीज की कोई कमी नहीं होने दी पर पिता की कमी वह चाहकर भी पूरी नहीं कर सकती। जितनी जरूरत मुझे माँ की है, उतनी ही पिता की भी। जब वो हमारे घर आती है और हमें हमारे माता–पिता से बात करते, उनको एक साथ देखकर रो पड़ती है। ये सब बातें सुनकर मेरे पैरों तले जमीन निकल गई।

शाम को जब वह लौटी तो मैंने उससे दोबारा पूछा, पर उसने जवाब नहीं दिया, चुपचाप अपने कमरे की बालकनी में गई और सिगरेट निकालकर पीने लगी। मैं हताश, निराश उसे देखती रही। मैं उससे क्या कहती, क्योंकि गलती मेरी थी। मैं भाग–दौड़ की इस जिंदगी में यह भूल गई थी कि मेरे भी कुछ नैतिक मूल्य उसके प्रति हैं।

मैं उसे देखकर यह सोच रही थी कि यह वही कुमुद है जिसे 20 साल पहले मैंने अपने हाथों में लिया था और उससे वादा किया कि मैं उसे हर वो खुशी दूँगी जो वो चाहती है। उसे मैंने सब कुछ दिया पर न दे सकी तो पिता। पहले तो वह मेरे पीछे से ये सब काम करती थी पर अब मेरे सामने, और मुझे न जाने क्या हो गया था मैं कुछ बोल ही नहीं पाती थी।

मैं स्तब्ध होकर उसे तिल–तिल मरते देख रही थी। इतना कुछ

होने पर भी वह मुझसे कोई शिकायत नहीं करती। एक दिन मैंने फैसला किया कि मैं उसे नशामुक्ति केंद्र भेज दूँगी। मैं अपने फैसले पर अडिग थी। मैंने नशामुक्ति केंद्र फोन किया, गाड़ी आई और उसे ले गई और मुझे ऐसा लगा मेरे शरीर से किसी ने प्राण ही ले लिए हों। पर क्या करती अकेले उसे कैसे सँभालती, 15 सालों बाद यह अहसास हुआ कि पति–पत्नी एक सिक्के के दो पहलू हैं, दोनों ही से गृहस्थी की गाड़ी चलती है। अगर आज हम साथ होते तो ये दिन देखने को नहीं मिलते।

देव भी चले गए और कुमुद भी। अब मैं अकेली ठूँठ–सी दरवाजे पर टकटकी लगाए बैठी रहती कि न जाने कब संस्थान से कोई मेरी कुमुद को लेकर लौट आए।

मैंने कुमुद से वादा किया था कि सुख में, दुख में जिंदगी के हर मोड़ पर मैं उसके साथ रहूँगी। पर ये कैसा साथ? मैं सुबह जागती अपने कामों में व्यस्त रहती, तैयार होकर स्कूल चली जाती और वहाँ पहुँचते ही बच्चों से जुड़ जाती। वह स्कूल जाती, वापस आकर खाने पर मेरी प्रतीक्षा करती, शाम को हमारे लिए चाय बनाती।

मैं तो स्कूल जाकर और उसकी सारी जरूरतों को पूरा करने में ही अपनी शान समझती और यह सोचती कि मेरे से अच्छी परवरिश तथा सहूलियतें इसे कोई नहीं दे सकता। थककर निढाल होकर उससे बातें करते–करते सो जाती। कभी उसके भीतर झाँककर देखने का प्रयत्न ही नहीं किया कि वह क्या चाहती है? क्या सोचती है? पर मेरी फूल सी बच्ची ने मुझसे कभी शिकायत नहीं की। क्यों नहीं करती थी मैं नहीं जानती। पर आज मुझे स्वयं से शिकायत है।

मानव जिससे सबसे ज्यादा प्यार करता है, सबसे कम उसी की परवाह करता है। क्यों? कई दफा लगता है कि हम खुद के लिए अब काम नहीं करते। हम किसी अज्ञात भय से लड़ने के लिए काम करते हैं। हम जीने के पीछे जिंदगी बर्बाद करते हैं। कल से मैं सोच रही हूँ,

वो कौन–सा दिन होगा जब हम जीना शुरू करेंगे। क्या हम गाड़ी, बंगला, टी.वी., कम्प्यूटर, लैपटॉप, फोन और न जाने क्या–क्या खरीदने के लिए जी रहे हैं?

मैं तो सोच ही रही हूँ, आप भी सोचिए जिंदगी बहुत छोटी होती है। उसे ऐसे ही जाया मत कीजिए। अपने प्यार को पहचानिए, उसके साथ समय बिताइए। जिसने अपनी माँ के अकेलेपन को दूर करने के लिए पिता की छत्र–छाया छोड़ दी, खुद को नशे में डुबो लिया, मेरे सुख–दुख में शामिल होने का वादा किया। आप भी अपनी–अपनी संतानों के सुख–दुःख को पूछिए तो सही। एक दिन अफसोस करने और अकेले रहने से बेहतर है, सच को आज ही समझ लेना कि जिंदगी मुट्ठी में रेत की तरह होती है। कब मुट्ठी से वह निकल जाएगी, पता भी नहीं चलेगा। ◈

पिता की सीख

उसने नाशपाती के पेड़ का बड़ी ही बारीक व परख से अवलोकन किया और पिता को संपूर्ण जानकारी दी। पिता ने इस बार भी कुछ वैसी ही प्रतिक्रिया प्रदर्शित की। बड़ा बेटा भी 'अपना-सा मुँह लेकर' रह गया और वहाँ से चलता बना। कुछ दिन बीत गए। तीनों पुत्र पिता की ओर से कोई भी सकारात्मक संकेत न पाकर एक अनजाने भय से आशंकित थे।

◈ lfjrk ckly
वाई.एस. पब्लिक स्कूल
भटिंडा रोड, हंडिया,
बरनाला, पंजाब

,क बहुत ही धनवान व्यक्ति दक्षिण के किसी कस्बे में रहता था। वह बहुत ही बुद्धिमान, प्रतापी, दयालु, धैर्यवान व दूरदर्शी था। उसके तीन पुत्र थे। एक दिन उसके मन में पुत्रों को कुछ ऐसी शिक्षा देने का विचार आया जिससे वे अपने पिता के बाद अपने भावी जीवन को उन जैसा गौरवशाली ही बना सकें।

इसी विचार के साथ उसने अपने पुत्रों को अपने पास बुलाया और उन्हें कहा, "बेटा, मैं आप सबकी योग्यता को परखने के लिए कुछ करना चाहता हूँ, ताकि जब मैं इस दुनिया में न रहूँ तो लोग आप सबको वही सम्मान दें, जो मुझे हासिल है।" तीनों बेटों ने पिता की बात बड़े ध्यान से सुनी और उत्सुक नजरों से पिता की बात की प्रतीक्षा करने लगे।

पिताजी बोले, "पुत्रो! मैं चाहता हूँ कि हम अपने आँगन में एक नाशपाती का पेड़ लगाएँ। इसलिए तुम सब चार–चार महीने के अंतराल पर इस पेड़ की तलाश में जाओ और उसके बारे में पता लगाकर मुझे बताओ।"

"पिता की अनुमति लेकर तीनों पुत्र अपने–अपने काम में लग गए। सबसे पहले छोटा बेटा एक बहुत ही सुंदर बाग में गया और वहाँ पर 'नाशपाती' का पेड़ ढूँढ़कर उसका बड़ी ही बारीकी से अवलोकन किया। आकर सब बात पिता को बताई, लेकिन पिता ने उसकी बात सुनकर कोई भी प्रतिक्रिया नहीं की और छोटे बेटे को जाने को कहा।

बेटा असमंजस में सिर खुझलाता हुआ पिता के कमरे से वापस चला गया। अब मंझले बेटे की बारी आई। उसने भी अपनी सोच व योग्यता अनुसार सर्वोत्तम जानकारी दी, लेकिन पिता की प्रतिक्रिया इस बार भी वही थी। मंझला बेटा भी चेहरे पर अजीब सी परेशानी लेकर पिता के कमरे से चला गया। दिन बीतते रहे पर पिता बिलकुल शांत व गंभीर थे। फिर चार महीनों के बाद सबसे बड़े बेटे की बारी आई। बड़ा बेटा सोच रहा था कि शायद पिता जी दोनों भाइयों के काम पर संतुष्ट नहीं हैं, इसलिए मुझे उनसे कुछ बेहतर करना होगा। यही सोच लेकर वह घर से निकल पड़ा।

उसने नाशपाती के पेड़ का बड़ी ही बारीक व परख से अवलोकन किया और पिता को संपूर्ण जानकारी दी। पिता ने इस बार भी कुछ वैसी ही प्रतिक्रिया प्रदर्शित की। बड़ा बेटा भी 'अपना–सा मुँह लेकर' रह गया और वहाँ से चलता बना। कुछ दिन बीत गए। तीनों पुत्र पिता की ओर से कोई भी सकारात्मक संकेत न पाकर एक अनजाने भय से आशंकित थे।

एक दिन अचानक पिता ने सायंकाल के समय तीनों पुत्रों को अपने पास बुलाया और एक बार फिर से अपनी–अपनी बात बयान करने को कहा। थोड़ी हिचकिचाहट के साथ छोटा बेटा बोला, "पिताजी, वह पेड़ तो बिलकुल टेढ़ा–मेढ़ा और सूखा हुआ था।"

दूसरा पुत्र अजीब सी दृष्टि सब पर डालता हुआ बोला, "नहीं–नहीं वो तो बिलकुल हरा–भरा था, लेकिन शायद उसमें कुछ कमी थी क्योंकि उस पर एक भी फल नहीं लगा था।" फिर तीसरा व सबसे बड़ा बेटा उसको बीच में ही रोकते हुए बोला, "लगता है मेरे छोटे भाई

कोई गलत पेड़ देख आए, क्योंकि मैंने जो नाशपाती का पेड़ देखा, वो बहुत ही शानदार था और फलों से लदा हुआ था।"

ऐसा कहने के बाद बड़ा बेटा बहुत ही आत्मविश्वास के साथ पिता की ओर देखने लगा, मानो पिताजी सही जवाब का पुरस्कार उसी को देने वाले हैं। पिताजी के कुछ कहने से पहले तीनों पुत्र अपनी–अपनी बात को लेकर आपस में विवाद करने लगे कि तभी पिता अपने स्थान से उठे और बोले, "पुत्रो! परस्पर तर्क–वितर्क की कोई आवश्यकता नहीं है। दरअसल तुम तीनों ही वृक्ष का सही वर्णन कर रहे हो, मैंने जानबूझकर तुम्हें अलग–अलग मौसम में वृक्ष खोजने भेजा था और जो तुम सबने देखा वो उस मौसम के अनुसार था।" तीनों बेटे अजीब दृष्टि से एक–दूसरे को ताक रहे थे, जैसे पिता की बात को समझने में असमर्थ हों कि आखिरकार उनके पिता बताना क्या चाहते हैं?

तभी पिताजी बड़ी ही मिठास भरे शब्दों में बोले, "मैं चाहता हूँ कि इस अनुभव के आधार पर तुम तीन बातों को गाँठ बाँध लो, एक–किसी चीज के बारे में सही और पूर्ण जानकारी चाहिए तो तुम्हें उसे लंबे समय तक देखना–परखना चाहिए, फिर चाहे वो कोई विषय हो, वस्तु हो या फिर कोई व्यक्ति ही क्यों न हो। दो–हर मौसम एक सा नहीं होता। जिस प्रकार वृक्ष मौसम के अनुसार सूखता, हरा–भरा या फलों से लदा रहता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी उतार–चढ़ाव आते रहते हैं, अतः अगर तुम कभी भी बुरे दौर से गुजर रहे हों तो अपनी हिम्मत और धैर्य बनाए रखो, समय अवश्य बदलता है। तीसरी बात–अपनी बात को ही सही मान कर उस पर अड़े मत रहो, अपना दिमाग खोलो और दूसरों के विचारों को भी जानो। यह ज्ञान से भरा पड़ा है, चाहकर भी तुम अकेले सारा ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते, इसलिए भ्रम की स्थिति में किसी ज्ञानी व्यक्ति से सलाह लेने में संकोच मत करो।

पिता की बातें सुनकर तीनों पुत्र इस प्रकार शांत व गंभीर हो गए जैसे उन्होंने बहुत बड़ा खजाना पा लिया हो। अब उनके चेहरों पर एक अनोखा तेज व आत्मविश्वास था। ◈

घटता-बढ़ता चाँद

◈ lrk"k ekyh
राजकीय सादुल उच्च मा. विद्यालय
बीकानेर, राजस्थान

पर रेखा की बातों को हीरालाल कभी गंभीरता से नहीं लेता था। पहले कभी-कभी ज्यादा पी लेता तो अगले दिन छुट्टी करनी पड़ती और अब तो हर दूसरे दिन ही पीकर पड़ा रहता और काम पर नहीं जा पाता। रोज-रोज छुट्टी लेने से परेशान मालिक ने उसे नौकरी से निकाल दिया।

iरे दिन की गहमागहमी के बाद रेखा का शरीर थक चुका था लेकिन मन में अभी भी ऊर्जा शेष थी। वो खिड़की से लगे बिस्तर पर लेटी, जागती आँखों से सपने सँजो रही थी। खिड़की से झाँक रहा चौदस का चाश्द उसके सपनों के जैसा ही बढ़ता जा रहा था।

रेखा के कानों में बधाइयाँ गूँज–गूँजकर आनंद को दुगुना–चौगुना कर रही थी। आज उसकी बेटी आरती का बारहवीं का परिणाम आया था। गणित विषय में 90 प्रतिशत के साथ सरकारी स्कूल में होकर भी मेरिट में 37वाँ स्थान।

विधाता भी क्या–क्या लिख के रखता है, कभी इतनी खुशियाँ कि छलक–छलक जाएँ और कभी इतने गम कि सँभाले न सँभलें। दिन–भर सबकी बधाइयाँ लेकर मुँह मीठा कराते। रेखा के मन में बीते दिनों की स्मृतियाँ दस्तक देती रहीं। अब फुर्सत पाकर वे ही स्मृतियाँ आँसू बनकर बहने लगीं।

मुश्किल समय कछुए की चाल चलता है और अच्छा समय पंख

लगा उड़ जाता है। आरती ने माँ–बाप का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया था पर करीब बारह साल पहले की घटना याद कर रेखा का मन सिहर उठा।

गाँव में बार–बार बाढ़ आने के कारण सब कुछ बर्बाद हो गया था। तब वो पति हीरालाल के साथ बेटी को लेकर एक संदूक भर सामान के साथ दिल्ली आ गई थी। हीरालाल को एक फैक्ट्री में काम मिल गया था। साल–भर के भीतर ही बेटा बबलू भी उनके आँगन में किलकारी भरने लगा था। घर में चार सदस्य खाने वाले, कमाऊ एक और उस पर दिन–रात बढ़ती महँगाई।

हीरालाल की कमाई मकान किराए व राशन–पानी में कम पड़ने लगी। तब रेखा ने भी पास–पड़ौस की औरतों की देखादेखी घरों में बर्तन–सफाई का काम पकड़ लिया। दिन–भर मेहनत कर वह बुरी तरह थक जाती लेकिन हाथ में चार पैसे आते तो थकान को भूल बच्चों के अच्छे भविष्य के स्वप्न संजोने लगती।

मुश्किल से आटे–दाल का काम निकल ही रहा था कि हीरालाल को शराब की लत लग गई। रेखा टोकती तो कहता, "रोज–रोज थोड़े ही लेता हूँ ये तो कभी–कभी यार–दोस्त इकट्ठे होते हैं तो लेनी पड़ती है और मैं कौन सी अपने पैसे से पीता हूँ? खरीदकर तो आज तक नहीं लाया।"

रेखा समझाती, "यार–दोस्त रोज–रोज नहीं पिलाएँगे और एक बार आदत लग गई तो...।"

पर रेखा की बातों को हीरालाल कभी गंभीरता से नहीं लेता था। पहले कभी–कभी ज्यादा पी लेता तो अगले दिन छुट्टी करनी पड़ती और अब तो हर दूसरे दिन ही पीकर पड़ा रहता और काम पर नहीं जा पाता। रोज–रोज छुट्टी लेने से परेशान मालिक ने उसे नौकरी से निकाल दिया।

खाली बैठे हीरालाल का दिमाग और खराब होने लगा। करने को काम नहीं और नशे की लत शराब माँगती। धीरे–धीरे करके रेखा के

इक्के–दुक्के जो जेवर थे वो भी खर्चे–पानी की भेंट चढ़ गए। घर का खर्चा चलना दूभर हो गया था तो रेखा ने एक–दो घर का काम और पकड़ लिया। मन तो घर के हालात से टूटा ही था, काम के बोझ से तन भी टूटता जा रहा था। हीरालाल को तो न घर की सुध थी न बच्चों की। घर संसार की चिंता से रेखा सूखकर काँटा होती जा रही थी।

रेखा जिन घरों में काम करती थी, उनमें से एक में जन्मदिन की पार्टी थी। रेखा को देर तक रुकना पड़ा, पर अतिरिक्त पैसा भी मिला था और अच्छे पकवान भी। रात काफी हो गई थी तो मालकिन ने ड्राइवर को उसे घर छोड़ने भेज दिया। घर पर बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे। उनको भरपेट खाना मिल गया। पार्टी में मिली अतिरिक्त राशि से अगले दिन सुबह घर का किराया भी चुकता कर दिया।

सवेरे रेखा काम पर चली गई लेकिन परेशानियों की जंजीर उसे जकड़ने को बढ़ती ही जा रही थी। ड्राइवर द्वारा घर तक पहुँचाने की बात जैसे–जैसे सूरज चढ़ता जा रहा था, पूरी बस्ती में आग की तरह फैलती जा रही थी। हीरालाल के कानों तक आते–आते वह तिल का ताड़ बन गई।

बच्चों को घर में बंद कर हीरालाल वहाँ पहुँच गया जहाँ रेखा काम करती थी। वहाँ से निकलते ही भरी सड़क पर उसने लोगों के सामने ही रेखा पर हाथ–पाँव चलाने शुरू कर दिए। जोर के धक्के से रेखा एक गाड़ी के सामने जा गिरी। टकराने से तो वह बच गई, परंतु लोगों की भीड़ जमा हो गई।

लोग हीरालाल पर टूट पड़े। वो पहले ही नशे में था और मार से हालत और भी खराब हो गए। लोग उसे पुलिस के हवाले करने की बात करने लगे। रेखा ने हाथ–पाँव जोड़े, बोली, "नहीं इसे पुलिस के हवाले मत करना। अगर आपको मदद करनी है तो रिक्शा करने के पैसे दे दें, केवल बीस रुपये ताकि मैं इसे घर ले जा सकूँ।"

रुपये की बात सुन सारी भीड़ छँट गई। बीस रुपये तो दूर किसी ने एक चवन्नी भी नहीं दी। एक रिक्शावाला चुपचाप सारा घटनाक्रम देख रहा था। उसने मदद का हाथ बढ़ाया और हीरालाल को घर पहुँचाया। रेखा बोली, "भैया, किराये के पैसे तो नहीं हैं मेरे पास।"

रिक्शावाला बोला, "बहन तुमने मुझे भाई कहा है, क्या एक भाई अपनी बहन के लिए इतना भी काम नहीं आएगा।"

घर कार दरवाजा खोलते ही बच्चे भूख से रोते मिले। रिक्शेवाले ने खुद के लिए खरीदे हुए दूध–ब्रेड टोकरी में से निकाले और बच्चों के हाथ में दे दिए। रेखा के होंठ कुछ कहने के लिए हिले ही थे कि रिक्शावाला बोल पड़ा, "बहन, इन बच्चों को भूखा देखकर मेरे गले से नीचे भी कुछ नहीं उतरेगा।"

उस रात को याद कर आज भी रेखा की आँखें भर आती हैं। कैसे नशे के कारण उसका सब कुछ बर्बाद हो रहा था और किस तरह भगवान ने अब्दुल (रिक्शावाला) को उसकी जिंदगी में किसी फरिश्ते की तरह भेज दिया था।

सुबह होते ही दरवाजे पर दस्तक हुई थी, सामने अब्दुल था! बोला–"बहन मैं एक नशामुक्ति केंद्र का पता जानता हूँ। दो साल पहले मेरा भाई भी खुद को पूरी तरह नशे में बर्बाद कर चुका था, पर आज उसका हँसता–खेलता परिवार है।"

फिर क्या था अब्दुल किसी प्रकार हीरालाल को अपने साथ ले गया। वो छः महीने रेखा ने अकेले ही छोटे–छोटे बच्चों की परवरिश करते किस प्रकार काटे, ये वो ही जानती है। पर कहते हैं ना कि समय की एक ही अच्छी बात है, कैसा भी हो गुजर जाता है।

हीरालाल वापस घर आया तो एकदम बदल चुका था। उसे परिवार, जिंदगी की अहमियत समझ आ गई थी। वो फिर से काम ढूँढ़ने लगा। पति–पत्नी ने मिलकर सपना देखा कि कुछ भी करके बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाएँगे।

आरती पढ़ाई में अच्छी थी, दसवीं में छात्रवृत्ति भी मिल गई परंतु बबूल पर आसपास के माहौल का बुरा असर होते देख दोनों ने उसे हॉस्टल भेजने का फैसला किया। साल भर में ही बबलू में काफी सुधार हो गया।

बीती घटनाएँ रेखा की आँखों के आगे किसी फिल्म की भाँति चलती जा रही थी। तभी अलमारी खुलने की आवाज से उसकी विचार–शृंखला टूटी। हीरालाल अलमारी से कुछ निकाल रहा था।

"इस समय क्या देख रहे हैं आप? और ये इतने पैसे लेकर कहाँ जा रहे हैं आप?"

"बबलू के हॉस्टल से फोन आया है। उसके पास से सफेद पाउडर जैसा कोई नशीला पदार्थ मिला है। पुलिस ले गई है उसे, जमानत के लिए जाना होगा।

सुनकर रेखा सन्न रह गई। हीरालाल ने उसे आगे बढ़कर सँभाला, बोला, "अब तुम अकेली नहीं हो, मैं हूँ न तुम्हारे साथ। सब ठीक हो जाएगा। तुम इस चाँद को देखो, कभी एक सा नहीं रहता। घटता है तो वापस बढ़कर पूरा भी बनता है। भगवान का शुक्र है कि समय रहते चेता दिया हमको। अब हम मिलकर प्रयास करेंगे और बबलू को बर्बादी के रास्ते से वापस ले आएँगे।"

हीरालाल की हिम्मत भरी बातों से रेखा की भी कुछ हिम्मत बँधी। आश्वस्त थी अब वो कि उसका चाँद जो घटा है वो बढ़कर पूरा भी जरूर होगा। ◈

फिर क्या था, निहारिका जोर-जोर से रोने लगी। कलाकार उसके पास पहुँचा और धीरे से उसके रोने का कारण पूछा किंतु निहारिका बस रोती गई-रोती गई। कलाकार बार-बार उससे रोने का कारण व परिचय पूछता रहा। अंत में जब निहारिका को कुछ समझ में नहीं आया तो उसने अपना पूरा परिचय दिया और बताया कि अब वह कभी अपने परीलोक वापस नहीं जा सकेगी क्योंकि उसे मनुष्य द्वारा देख लिया गया है।

सच्चा कलाकार

◈ vkdk{kk 'kekZ
राजकीय उच्च माध्य. विद्यालय
पोलाई कलां, कोटा, राजस्थान

vkज आसमान से निहारिका धरती की ओर बस एकटक निहार रही थी। फिर वही खूबसूरत शाम थी, फिर वही धरती पर रिमझिम फुहारों की झड़ी लगी थी। कुछ सुहाने क्षण, कुछ न भूले जाने वाले पल उसको बार–बार याद आने लगे और फिर याद आया वो पल जब वह पहली बार धरती पर घूमने के लिए आई थी।

उसकी माँ अक्सर उसे निर्देश दिया करती थी, "देखो निहारिका हम परियाँ हैं, हम धरतीवासियों को दिखाई नहीं दे सकती। और यदि किसी ने एक बार हमें देख लिया तो बस फिर हम सदा के लिए धरती की ही हो जाती हैं। वापस परीलोक में नहीं आ सकती।" माँ बार–बार कहती, "धरती के लोग बड़े चालाक और स्वार्थी होते हैं।"

वो सोचती–कितने भोले और मासूम तो दिखते हैं, पता नहीं माँ ऐसा क्यों कहती है?

देविका उसके बचपन की सबसे प्यारी सखी थी। उसने पूछा, "निहारिका यहाँ भी सब कुछ कितना खुबसूरत है? पता नहीं तुम्हें धरती

इतनी आकर्षक क्यों लगती है?" निहारिका मुस्कराकर कहती, "हाँ! यहाँ भी खुबसूरत है, किंतु सब कुछ कृत्रिम–सा लगता है, जादुई लगता है। वहाँ सब कुछ स्वाभाविक, सहज और प्राकृतिक लगता है। वहाँ मौसमों में कितना बदलाव है? पूरी धरती अलग–अलग रंगों में रंगी है, कहीं दूर–दूर तक फैली हरियाली, कहीं आसमान को छूते पहाड़, कहीं अठखेलियाँ करती नदियाँ, कहीं नटखट लहरों से आपूरित सागर, कहीं कल–कल करते झरने, कहीं दूर–दूर तक फैली रेत, कहीं बर्फ ही बर्फ, रंग–बिरंगे अलग–अलग तरह के पशु–पक्षी, जंगल, सुंदर–सुंदर बाग बगीचे, ये सब मुझे अपने पास बुलाते हैं। हमारे परीलोक में तो हमेशा एक जैसा ही मौसम, एक ही जैसा परिवेश रहता है। चारों तरफ सुख ही सुख है। इस तरह का एकाकी जीवन मुझे नीरस जान पड़ता है।"

यह बात सुनकर देविका सोच में पड़ गई कि पृथ्वी का यह सहज आकर्षण कहीं उससे उसकी सबसे प्यारी सखी न छीन ले और हुआ भी यही। धरती की खुली वादियों में मोर की तरह नाचने की इच्छा उसे धरती की ओर खींच ले गई। एक दिन जब सब सो गए तो चुपके से निहारिका उठी और धरती की ओर कदम बढ़ा दिए। टिमटिमाते तारों की छाँव में आसमान से ढकी ये धरती सचमुच कितनी सुहानी और खूबसूरत थी।

बस फिर क्या था? उसने चाँदनी रात में नृत्य करना शुरू कर दिया। नाचती गई बस नाचती गई। जी भरकर नाची। झूम–झूमकर नाची। फिर जैसे ही सुबह सूरज ने अपनी किरणों का आलोक फैलाया, वह चल दी वापस अपने परीलोक की ओर।

परीलोक में जाकर चुपचाप सो गई ताकि किसी को पता न चले। अब तो अक्सर निहारिका रात को उठकर चुपचाप पृथ्वी पर चली जाती। जी भरकर नृत्य करती। जब वह नृत्य करती तो मानो पूरी धरती, पूरी कायनात उसके साथ झूम उठती।

जिस फूलों की घाटी पर वह अक्सर जाया करती थी, वहाँ पर एक कलाकार रहता था। वह संगीत का उपासक था। एक दिन रात को जब

वह अपनी कुटिया के आँगन पर टहल रहा था तो उसने वह मंत्रमुग्ध कर देने वाला नृत्य देख लिया। निहारिका का रूप–सौंदर्य तो खैर था ही, अनोखा नृत्य तो जैसे उसके मन पर ही छा गया। वह उसके करीब पहुँचा और अपलक निहारता ही रह गया। निहारिका को जब इस बात का ज्ञान हुआ कि किसी मनुष्य द्वारा उसे देखा जा चुका है तो उसे उसकी माँ की बात याद आ गई कि यदि किसी मनुष्य ने तुम्हें धरती पर देख लिया तो तुम वापस परीलोक पर नहीं आ पाओगी।

फिर क्या था, निहारिका जोर–जोर से रोने लगी। कलाकार उसके पास पहुँचा और धीरे से उसके रोने का कारण पूछा किंतु निहारिका बस रोती गई–रोती गई। कलाकार बार–बार उससे रोने का कारण व परिचय पूछता रहा। अंत में जब निहारिका को कुछ समझ में नहीं आया तो उसने अपना पूरा परिचय दिया और बताया कि अब वह कभी अपने परीलोक वापस नहीं जा सकेगी क्योंकि उसे मनुष्य द्वारा देख लिया गया है।

कलाकार को जब यह समझ में आया कि परी की पीड़ा के पीछे मैं स्वयं हूँ तो बहुत दुःखी हुआ। उसे यह समझ नहीं आया कि वह उस परी की मदद कैसे करे? उसने बहुत स्नेह और आदर भाव से निहारिका को अपनी कुटिया में आमंत्रित किया और कहा कि जब तक आपके रहने योग्य स्थान की उचित व्यवस्था नहीं हो जाएगी आप मेरी इस छोटी सी कुटिया में रह सकती हैं। मैं आपको वचन देता हूँ कि आपको मेरी वजह से कभी कोई तकलीफ नहीं होगी।

निहारिका कलाकार की बात सुनकर सोच में पड़ गई कि वह कैसे पूरा जीवन अपने परीलोक व अपनी माँ से दूर रहेगी? यही सोचकर वह बार–बार रोने लगती थी। उसे अपनी माँ की कही बात बार–बार याद आती। कुछ दिन बीत गए। साथ रहते–रहते उसे यह महसूस हुआ कि कलाकार स्वयं बहुत अच्छा संगीतकार है।

उसकी बाँसुरी व उसका गीत, जो वह प्रातःकाल गाता था, उसकी

स्वर–लहरियों में पूरी फूलों की घाटी खिल उठती थी। मानो प्रकृति का कण–कण उसके संगीत से पल्लवित व पोषित होता था। कलाकार मानो एक साधक था जो संगीत की साधना हेतु इस निर्जन स्थान पर रहता था। कलाकार अच्छा संगीतकार होने के साथ–साथ एक अच्छा इंसान भी था। उसके पास किसी प्रकार की भौतिक सुख–सुविधा तो थी नहीं, न ऐशो–आराम के साधन थे। बस एक कुटिया, भोजन बनाने के कुछ बर्तन व सरस्वती माता की एक मूर्ति, एक वीणा और एक गाय थी।

उसकी कुटिया लोगों की भीड़ व कोलाहल से दूर पर्वत की सुरम्य वादियों में थी जहाँ बस कलकल करती नदी की मिठास थी, पर्वतों की फूलों से ढकी वादियाँ। यह सब निहारिका के अल्हड़ मन को बहुत अच्छी लगी। जब कभी उसे अपनी माँ और अपने साथियों की बहुत याद आती तो रात को उठकर ऊँची पहाड़ी पर जाकर बस आसमान में ताकती रहती और अपने आँसुओं को छिपाकर चुपचाप वापस आकर कुटिया में सो जाती।

कलाकार शायद यह बात जानता था, इसीलिए निहारिका को व्यस्त रहने की सलाह देता ताकि वह सदैव दुखी और उदास नहीं रहे। निहारिका को कलाकार की बात सही लगी। उसे वह घर अब अपना घर जैसा ही लगने लगा था। वह उसे सजाने–सँवारने की कोशिश करती। फूलों की इस घाटी से तरह–तरह के फूल चुनकर लाती, सरस्वती माता के लिए माला बनाती।

निहारिका सभी पौधों को पानी देने का काम बहुत प्यार से करती। वहाँ के फूलों, पक्षियों और गाय से तो निहारिका ने अब दोस्ती कर ली थी। उनके सहारे उसका पूरा दिन निकल जाता। उनको दाना डालती। गाय को हरी–हरी घास खिलाती।

मोर निहारिका को अपने पास आता देखकर झूम–झूमकर नाच उठते। खरगोश, हिरण और कई जंगली जीव निहारिका की उपस्थिति में स्वयं को लाने की कोशिश करते, मानो निहारिका की स्नेहभरी दृष्टि की उनमें होड़ लगी हो।

कलाकार निहारिका के इस रूप पर मंत्रमुग्ध था, किंतु वह अपनी गंभीरता में अपने प्रेम को छिपाकर रखता था। उसके लिए तो निहारिका एक देवी समान थी जिसकी पूजा तो वो कर सकता था किंतु प्रेम नहीं। हाँ! दोनों में एक बात एक जैसी थी। दोनों प्रकृति और संगीत के उपासक थे। एक नृत्य कला में प्रवीण और एक वीणा वादन व गायन में निपुण।

एक दिन अचानक शिकार खेलते–खेलते उसी राज्य का राजा उधर आ निकला। राजा बड़ा महत्त्वाकांक्षी, लालची और निर्दयी प्रकृति का था। झरने के पास निहारिका फूलों की माला बना रही थी। राजा ने निहारिका को देख लिया। बस फिर क्या था राजा तो उसकी सुंदरता पर मोहित हो गया। राजा ने तुरंत कलाकार को बुलाया और बोला, "यह सुंदरी कौन है? तुम्हारे जैसे भिखारी के घर में इस सुंदरी का क्या काम?"

जब कलाकार ने राजा को सारी बात बताई और यह भी बताया कि वह सुंदरी कोई साधारण युवती नहीं है। परीलोक से आई परी है। राजा ने सोचा यह तो दुनिया की सबसे अनोखी और सुंदर युवती है, इसलिए मेरा विवाह तो इसी से होना चाहिए।

उसने कहा, "परी आज से हमारे महल में ही रहेगी। मैं परी से विवाह करूँगा।" किंतु परी उसकी बात से खुश नहीं थी। उसने स्पष्ट मना कर दिया, "मैं परी हूँ, मैं किसी इंसान से विवाह नहीं कर सकती। खास तौर पर जिसे मैं पसंद नहीं करती उससे तो हरगिज नहीं।"

बस फिर क्या था, राजा को यह बात नागवार गुजरी। उसने परी को कैदखाने में बंद कर दिया, साथ ही कलाकार को भी। कलाकार से कहा, "लगता है यह मूर्ख परी बस तुम पर ही विश्वास करती है। यदि ऐसा है तो तुम्हें परी को मेरे साथ विवाह के लिए मनाना पड़ेगा, तभी तुम कैद से बाहर निकलोगे अन्यथा आजीवन यहीं सड़ते रहोगे।"

कलाकार बहुत दुखी और उदास था पर अपने लिए नहीं, परी के

लिए। वह परी के दुख के पीछे स्वयं को जिम्मेदार मानता था। काश! उस दिन उसने परी को न देखा होता तो परी की यह हालत नहीं होती। अब इस दुष्ट राजा के चंगुल से वह परी को कैसे छुड़ाए? यह वह नहीं समझ पा रहा था।

एक दिन सोते समय परी नींद में ही बहुत जोर–जोर से रोने लगी और अपनी माँ को पुकारने लगी, "माँ! मुझे यहाँ से बचाओ, मेरा दम घुटता है। मैं आपके पास आना चाहती हूँ।" परी की रोने की आवाज कलाकार ने सुनी और कुछ सोचकर कैदखाने के सिपाहियों से कहा, "अपने राजा से कहो परी को मनाने के लिए मुझ एक तरकीब सूझी है।"

राजा तुरंत आया। कलाकार ने राजा से कहा, "मेरे पास किसी को भी वश में करने वाला एक जादुई संगीत है जो केवल पूर्णिमा की रात को ही फलित होता है। पूर्णिमा की रात में फूलों की घाटी की सबसे ऊपरी पहाड़ी पर बैठकर अपनी वीणा के साथ गीत गाऊँगा, साथ में केवल परी होगी। मेरे जादुई संगीत का असर देखना दूसरे ही दिन परी आपसे विवाह को तैयार हो जाएगी। बस आपकी इजाजत चाहिए।"

राजा कलाकार की बात सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने कलाकार को तुरंत स्वीकृति दे दी। जब परी ने पूछा, "आखिर तुम करना क्या चाहते हो, मैं समझ नहीं पा रही हूँ।" कलाकार कुछ देर रुका फिर बोला, "बहुत वर्षों पूर्व मैंने हिमालय पर जाकर संगीत साधना की थी। मेरी साधना से प्रसन्न होकर गंधर्व लोक से आए एक गंधर्व ने मुझे एक गीत वरदान में दिया था और कहा था कि इस गीत को अपनी वीणा के साथ यदि तुम किसी भी ऊँची पहाड़ी पर बैठकर पूर्णिमा की रात गाओगे तो तुम उसी समय इस धरती से मुक्त होकर जिस लोक में भी जाना चाहो पहुँच जाओगे।"

"ओह! यह बात है।" परी के आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। किंतु तुम अपने साथ मुझे कैसे ले जा सकते हो? कलाकार ने परी की

बात का कोई उत्तर नहीं दिया और पुनः अपनी योग साधना में लीन हो गया।

आखिर पूर्णिमा की रात्रि भी आ गई। चंद्रमा अपने पूर्ण स्वरूप पर था। बहुत ही खूबसूरत चाँदनी रात थी। कलाकार और निहारिका दोनों फूलों की घाटी में सबसे ऊँची पहाड़ी पर पहुँच चुके थे। जब कलाकार ने अपने गीत और वीणा की स्वरलहरियाँ शुरू कीं। तो पूरी प्रकृति झूम उठी। निहारिका को परीलोक पहुँचने की खुशी तो थी पर उससे अधिक खुशी इस बात की थी कि अब परीलोक में वह कलाकार भी सदैव उसके साथ रहेगा क्योंकि वह उसे मन ही मन प्रेम करने लगी थी।

पूरी कायनात मानो उन स्वरलहरियों में खो गई। निहारिका स्वयं चकित हो उठी, इस स्वर लहरी ने मानो उसकी चेतना को अपने में समेट लिया। धीरे–धीरे स्वरलहरियों ने कमाल दिखाया, वो चेतना शून्य होने लगी...ये क्या? जब उसकी चेतना पुनः लौटी तो उसे लगा मानो कई वर्षों के बाद उसे होश आया है। चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो पाया उसका अपना घर। हाँ! वही घर, वही परीलोक, वही परिवेश, चारों ओर परियों ने उसे घेर रखा था। उसके पास बैठी थी उसकी माँ। वह अपनी माँ से लिपट गई और जोर–जोर से रोने लगी।

काफी समय बाद जब थोड़ा संभली तो खुशी के मारे वह स्वयं को संभाल नहीं पा रही थी। अचानक उसे कलाकार के बारे में खयाल आया तो पूछ बैठी, "माँ, मेरे साथ वो कलाकार था वो कहाँ है?" माँ की आँखों में आँसू आ गए।

उनकी चुप्पी देखकर परी बोली, "बताओ माँ, आप रो क्यों रही हो? बताओ वह कलाकार कहाँ है। वह बहुत ही अच्छा था। उसने मेरा कितना खयाल रखा। कभी कोई परेशानी नहीं होने दी और मैं!...माँ! मैं तो उसे प्रेम भी करने लगी हूँ।" इससे पहले कि वह कुछ और बोलती, परी की माँ बोल पड़ी, "हाँ! बेटा, वह कलाकार बहुत ही अच्छा था, पर वह सदैव के लिए इस दुनिया से चला गया।"

"क्या कह रही हो माँ, आखिर उसे हुआ क्या?"

"बेटा तुम ये पत्र पढ़ लो सब समझ जाओगी।" एक पत्र उसकी माँ ने उसे थमा दिया। पत्र में कलाकार का खूबसूरत लेख निहारिका देखते ही पहचान गई। लिखा था–

प्रिय निहारिका,

हमेशा खुश रहो, इसी इच्छा के साथ मैं अब इस दुनिया से विदा ले रहा हूँ। तुम्हें मैंने अपनी जो कहानी सुनाई थी उसका एक अंश अब पूरा कर रहा हूँ। जब गंधर्व ने मुझे वरदान दिया था तो उसने कहा था कि तुम इस गीत को जब भी गाओगे इस जन्म से मुक्त होकर किसी भी लोक में देव रूप में, परी रूप में या गंधर्व रूप में आ जाओगे और उसी लोक के हो जाओगे। यह सौभाग्य सभी मनुष्यों के लिए एक गौरव की बात है पर मेरे लिए नहीं। मैं सदैव एक मनुष्य के रूप में ही रहना चाहता हूँ। मुझे अपनी पृथ्वी सदा प्रिय रही है। हाँ! पर तुम्हें तुम्हारे लोक में पहुँचाना मेरे लिए एक आवश्यक जिम्मेदारी थी। सो अलविदा! जब तक तुम्हें मेरा पत्र मिलेगा मैं इस दुनिया को छोड़कर जा चुका होऊँगा, वरदान में यह भी कहा गया था कि उस लोक में तुम अकेले ही जा सकते हो। यदि किसी और को साथ लिया तो तुम्हारी साधना व्यर्थ हो जाएगी और तुम्हारी उस लोक पहुँचते ही मृत्यु हो जाएगी। किंतु मुझे खुशी है कि मेरी संगीत साधना उपयोगी सिद्ध हुई, मुझे इस दुनिया को छोड़ते हुए दुःख नहीं है। लगता है मेरा जन्म भी सार्थक हो गया, संगीत भी और मेरा प्रेम भी।

कलाकार!

निहारिका का चेहरा आँसुओं से भीग गया व फूट–फूटकर रोने लगी। परी की माँ समझा रही थी, "निहारिका, वह कलाकार एक सच्चा कलाकार व सच्चा प्रेमी था। उसका प्रेम अमर रहेगा।" ◈

गरीबी किसी जंग से कम नहीं होती है। सामान पाकर अम्मा तो मानो निहाल हो गई। बाबू ने भी बरसों बाद नया कपड़ा शरीर पर डाला था वरना लोगों के लिए पुराने कपड़ों से ही जीवन बीतता जा रहा था। निर्मला जब पायल पहनकर छनकाती हुई गर्व से कमरे तथा घर से निकली तो और औरतों के दिल पर साँप लोटने लगा और अम्मा बोलीं तो कुछ नहीं पर सारी खरीददारी में एक पायल ही उन्हें फिजूलखर्ची लगी।

मजदूरी बनाम मजबूरी

◈ J)k ikM;
एहल्कॉन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार, दिल्ली

Vैक्टर स्टार्ट करके ड्राइवर यह संदेश दे रहा था कि चलने वालो! आ जाओ। चलने का समय हो गया है। जितनी देर यहाँ करोगे, उतनी ही देर से शहर पहुँचोगे, फिर रात हो जाने पर मुश्किलें बढ़ जाएँगी।

सभी अपनी–अपनी पोटली या लोहे का बक्सा लेकर आ–आकर बैठने लगे। हर जाने वाले की आँख में भविष्य के सुंदर सपने थे तो कहीं न कहीं घर–आँगन छूटने की कसक भी थी। ट्रैक्टर खचाखच भरा था। धीरे–धीरे ट्रैक्टर ने रेंगना शुरू किया, फिर एक बराबर के लयताल के साथ चलना शुरू कर दिया।

महेश जब घर से चला तो अम्मा ने हाथ पकड़ लिया और मुँह छिपाकर रोने लगीं। बाबू ने कहा, "बावली हो गई हो क्या? अरे जाने दो, कमाने ही तो जा रहा है। कमाकर पैसा लगाए तो घर की छत ठीक करवा लेंगे और जो बगल वाले घर की दीवार गिर रही है, उसकी भी मरम्मत करवा लेंगे।" "अच्छा, घर बाद में ठीक करवाना, पहले हम तुम्हारा इलाज करवाएँगे।"

माँ–पिता को आपस में बहस करते देख वह चुपके से घर में घुस गया जहाँ खिड़की से सटी निर्मला उस रास्ते को निहार रही थी, जिस रास्ते से वह जाने वाला था। एक बार दुबारा निर्मला को देख लेने के लालच को वह छोड़ नहीं पाया। निर्मला को एक नजर फिर से देखकर उसे ऐसा लगा जैसे कितनी बड़ी संपत्ति मिल गई। अचानक अम्मा–बाबू जी की आवाज बंद हो गई तो वह घबरा कर बाहर आ गया।

वह जा रहा था। अम्मा बाहर खड़ी रो रही थी। उसे पता था निर्मला अभी भी खिड़की से सटी मुझे देख रही होगी। पीछे मुड़कर देखा तो वह नहीं दिखी पर यह सोचकर महेश ने संतोष कर लिया कि उसने तो देख ही लिया होगा। सोचते–सोचते चला जा रहा था कि अम्मा–बाबू को बताए बिना सबसे पहले निर्मला के लिए पायल खरीदूँगा। जब लौटकर आकर उसके हाथ पर पायल के साथ–साथ कुछ पैसे धरूँगा तो कितनी खुश हो जाएगी?

शहर पहुँचते–पहुँचते देर हो गई। सभी लोगों को एक हॉल में सोने के लिए कह कर एक बाबू साहब चले गए। न खाना न पीना। वह सोचने लगा कि बाबू साहब को पता होगा कि घर से चलते समय सभी ने आज का खाना रखा होगा ही। यह सच था। सबने अपना–अपना खाना खाया और कल के सपने में खोकर सो गए।

दूसरे दिन वही बाबू साहब आए और जैसे भेड़–बकरियों को हाँका जाता है, सभी को एक साथ लेकर चल दिए। एक चौराहे पर पहुँचकर एक–एक कप चाय और समोसा खिलाया और फिर मजदूरों के बाजार में बोली लगने लगी। ठेकेदार आ गए और अपनी–अपनी जरूरत के हिसाब से मजदूरों को लेकर जाते रहे। क्या काम करना है? कितना पैसा मिलेगा? कुछ पता नहीं पर यह विचार ही बड़ा सुखद था कि आज शाम को कुछ पैसे तो हाथ में होंगे ही।

गाँव से आए सभी लोग बिछड़ गए। महेश को बिल्डिंग बनाने वाला ठेकेदार ले गया। पूरे दिन बिना रुके वह जी–तोड़ मेहनत

करता रहा। खाने की छुट्टी के समय सभी मजदूर अपना–अपना खाना लेकर खाने बैठ गए। वह चुपचाप पानी पीकर छाँव में बैठकर सुस्ताने लगा। यह सोचता रहा कि अम्मा और निर्मला भी तो आए दिन उपवास रखते हैं। आज मेरा उपवास सही।

उस रात उसे ऐसा लगा जैसे वह सबसे अमीर इन्सान बन गया। उसके पॉकेट में सौ रुपये थे जिनसे कभी वह निर्मला की पायल खरीदता तो कभी अपने बाबू की खाँसी का इलाज करवाता। ऐसा करते फिर उसी हॉल में पहुँच गया जहाँ जानवरों की तरह उन्हें लाकर रख दिया गया था। थोड़ी देर बाद बाबू साहब आए, सबने अपनी कमाई में से पच्चीस–पच्चीस रुपये निकालकर उन्हें दे दिया। दस रुपये वहाँ रहने के, पाँच रुपये सुबह के समोसे चाय के तथा दस रुपये नौकरी दिलाने के। सौ में से पच्चीस रुपये देना उसे बहुत खला पर और कोई चारा भी तो नहीं था।

बाबू साहब ने सभी का बैंक अकाउंट खुलवा दिया। उसके लिए भी सौ–सौ रुपये प्रति व्यक्ति लिया गया। अधिक–से–अधिक पैसा जुटाने के चक्कर में कई बार महेश दिन में एक बार ही खाना खाता और रात में पानी पीकर ही सो जाता। सप्ताह में एक बार जाकर जब वह तीन सौ से चार सौ रुपये जमा करके आता तो उस रात खुशी के मारे सो नहीं पाता। पूरी रात हिसाब लगाते बीतता।

उसे पता चला कि रात में काम करने वाले मजदूरों को ज्यादा पैसा मिलता है और खाना मुफ्त। बाबू साहब से बात की। उन्होंने समझाया भी कि इस तरह दिन–रात काम करने से बीमार पड़ जाओगे पर वह नहीं माना। सोचने लगा, कौन मुझे यहाँ जिंदगी भर रहना है? बस थोड़े दिन कमाकर गाँव जाऊँगा और वहीं किराने की दुकान खोल लूँगा। एक मोबाइल, एक नहीं दो मोबाइल भी खरीदना है। एक घर पर दे आऊँगा ताकि जब चाहूँ तब अम्मा–बाबू और निर्मला से बात कर सकूँ।

लगभग आठ महीने काम करते–करते बीत गए। कई बार महेश को रोटी के साथ सब्जी नसीब नहीं होती थी। दिन–रात काम करने व पैसा

कमाने के चक्कर में उसे खाना बनाने का समय ही नहीं मिलता था। एक दिन सोचने लगा–गाँव के गरीबी के वे दिन भी कितने मिठास से भरे थे। कई बार घर में इतना पैसा भी नहीं होता कि बाबू सब्जी खरीदकर ला सकें, तब अम्मा घर के दरवाजे पर लगाए पेड़ से टमाटर तोड़कर प्याज या लहसुन जो भी होता, उसके साथ पीस कर कितनी चटकदार चटनी बना दिया करती थीं। जब वह बाबू के साथ खाना खाने बैठता तो माँ पास में बैठकर पंखा झलती रहती थीं।

जब भी कोई गाँव जाने वाला मिलता तो उसके हाथों थोड़े रुपये भिजवा देता था। शुरू–शुरू में अम्मा–बाबू आने वालों से पूछा करते थे, "कब आएगा महेश?" थोड़े दिनों बाद पूछना बंद कर दिया। इसके दो कारण हो सकते हैं। एक तो उन्होंने सोचा होगा कि पूछने से क्या फायदा? जब आना होगा, आ ही जाएगा। दूसरा, अच्छा ही है जब तक शहर में रहे, पैसे ही कमाएगा।

साल भर अपने माँ–बाप से दूर रहकर, अपनी निर्मला से दूर रहकर गाँव आने का मन बना ही लिया। अब शुरू हो गई खरीददारी। अम्मा के लिए चार साड़ी ली क्योंकि जब घर से चला था तब अम्मा की दोनों साड़ी तार–तार हो चुकी थी। बाबू के लिए भी दो जोड़े कपड़े, पैरों के लिए चप्पल, बिछाने के लिए दो चादर, दो दरी, कुछ टॉनिक, अपने लिए कपड़े, निर्मला के लिए साड़ी, पायल और दो मोबाइल फोन। खरीददारी करते–करते सारे पैसे पंख लगाकर हाथों से उड़ते जा रहे थे।

घर पहुँचने पर उसका ऐसे स्वागत हुआ मानो जंग जीतकर आ रहा हो। हाँ जंग ही तो लड़ रहा था। गरीबी किसी जंग से कम नहीं होती है। सामान पाकर अम्मा तो मानो निहाल हो गई। बाबू ने भी बरसों बाद नया कपड़ा शरीर पर डाला था वरना लोगों के लिए पुराने कपड़ों से ही जीवन बीतता जा रहा था। निर्मला जब पायल पहनकर छमकाती हुई गर्व से कमरे तथा घर से निकली तो और औरतों के दिल पर साँप लोटने लगा और अम्मा बोलीं तो कुछ नहीं पर सारी खरीददारी में एक पायल ही उन्हें फिजूलखर्ची लगी।

महेश घर वालों की खुशी में अपने साल भर के कष्ट भूल गया। दोनों जून सब्जी–रोटी बनने लगी। बाबू ने अम्मा को हिदायत दे दी थी कि जब तक महेश है, घर में अच्छा खाना बनेगा।

"जब तक मतलब? मैं तो अब जाना ही नहीं चाहता।" महेश सोचने लगा।

थोड़े ही दिनों में जेब के पैसे खत्म हो गए। बाबू कहते तो कुछ नहीं थे पर आँखों ही आँखों में टटोलते रहते थे कि कब आओगे?

अम्मा बातों ही बातों कह देती, "बेटा! इस बार जब आना तो घर की मरम्मत जरूर करवा देना।"

मतलब साफ था कि जाना जरूरी था।

एक दिन निर्मला ने भी कह दिया, "सुनिए, थोड़ा रुपया हमने बचाया है, थोड़ा आप बचा लीजिएगा। इस बार कानों की सोने की बाली बनवाऊँगी।"

महेश को सब कुछ साफ–साफ नज़र आने लगा था। घर की जरूरतें उसे चीख–चीखकर बता रही थीं कि मजदूरी ही अब उसकी नियति बन चुकी थी। काम करने से वह कभी नहीं घबराता था। पर अपने घर वालों से दूर शहर जाकर अकेले जीवन बिताना कितना कठिन होता है–यह शायद वह न घर वालों को समझा पा रहा था, न ही घर वाले समझने के लिए तैयार थे। उसे पता चल गया था कि कोई कुछ कहे या न कहे पर सब चाहते हैं कि मैं वापस जाऊँ।

जल्दी ही शहर जाने का इंतजाम करके वह चल पड़ा उस राह पर जहाँ न चाहते हुए भी जाना उसकी बेबसी बन गई थी। जब घर से चला तो अम्मा रोने की जगह खुश थी। बाबू गर्व से कंधे पर हाथ रखकर बोले, "अपना खयाल रखना।" निर्मला भी खिड़की से सटकर पर्दे के पीछे से आँखों में आँसू भरकर देखने की जगह अपनी सोने की बाली के सपने सजाती हुई काम में व्यस्त रही। वह ट्रैक्टर पर बैठ गया। घर पीछे छूटा। गाँव और फिर गाँव की सीमा। महेश चुपचाप मजदूरी को अपनी नियति मानकर चला जा रहा था। ◈

नया अध्याय

◈ eèk dkf'kd
सी.एम.एस. राजेंद्र नगर–II
लाल बिल्डिंग
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मोहिनी ने अपना बच्चा, जिसका नाम आर्यन था, घर के पास ही किसी छोटे से विद्यालय में दाखिल करा दिया। मोहिनी की कम उम्र देखकर परिवार के सदस्य उसका विवाह अन्यत्र करने का विचार करने लगे लेकिन भारतीय संस्कृति की परंपराओं में जकड़ी मोहिनी ने कहा, ''मैं दूसरी शादी नहीं करूँगी। जिस घर में गई थी, उसी देहरी पर प्राण तज दूँगी।''

ekहिनी मेरी छोटी ननद है। बड़े नाज़–नखरों से पली, अमर्यादित बहती नदी की धारा के समान उसका जीवन रहा है। युवावस्था की दहलीज पर कदम रखते ही चारों ओर भौंरों का गुंजार, नव–कुसुमित कली का पल्लवन शोभायमान होने लगा। उसकी चंचलता, अल्हड़ता में पूर्ण यौवन झलकने लगा। जैसे–जैसे समय सरकने लगा, घर में उसके रिश्ते की बात छिड़ने लगी। घर के सदस्यों का यह सोचना था कि चंचल मोहिनी का बड़े परिवार में निर्वाह बहुत कठिन है। इसलिए घर के सदस्यों ने एक छोटा परिवार देखना उचित समझा।

समय की रफ्तार बड़ी तेजी से चल रही थी। अचानक एक दिन मोहिनी के बड़े भाई को किसी काम के सिलसिले में पठानकोट जाना हुआ वहाँ उनकी मुलाकात सुजान नामक व्यक्ति से हुई। बातों ही बातों में पता चला कि सुजान एक फाइव स्टार होटल में मैनेजर के पद पर आसीन है एवं अविवाहित है। बात करते देर न लगी बल्कि तुरंत मोहिनी के भाई (मेरे जेठ) ने शादी की बात छेड़ दी।

सभ्य, सुसंस्कृत, शालीनता का आवरण ओढ़े सुजान ने कोई प्रतिक्रिया हाँ या ना में व्यक्त नहीं की। मोहिनी के भाई अपना कार्य करने के बाद घर वापस लौटे एवं परिवार के सभी सदस्यों के समक्ष सुजान से हुई मुलाकात का जिक्र किया। मेरी सास एवं घर के अन्य सदस्य विचार करने लगे कि यदि बात बन जाती है तो अच्छा रहेगा।

ईश्वर का संजोग समझिए, लगभग एक माह में आनन–फानन में दोनों परिवारों में विवाह की सहमति अपने पैर पसारने लगी। घर बैठे अच्छा रिश्ता पाने के लिए सभी ईश्वर को धन्यवाद देने लगे। छोटे परिवार–सास, सुजान एवं देवर के अतिरिक्त घर में कोई सदस्य नहीं था। सभी को रिश्ता काफी अच्छा लगा।

आखिरकार शादी की तिथि निश्चित हो गई। अक्षय तृतीया के दिन मोहिनी का विवाह सारे रस्मो–रिवाज़ को निभाते हुए संपन्न होने जा रहा था। जयमाल के समय मोहिनी और सुजान की जोड़ी वर–वधू के रूप में साक्षात् राम और सीता की जोड़ी लग रही थी। रात्रि के दो बजे फेरे होने के बाद दोनों विवाह बंधन में बंध गए।

अगले दिन भावभीनी विदाई के साथ अपना घर छोड़ पराए संसार की ओर बढ़ी। सभी ने अश्रुयुक्त मंगलमयी विदाई दी। अगले दिन ससुराल पहुँचने पर सभी ने उसका स्वागत दिखावटी चकाचौंध और छलपूर्ण दिखावे से किया। लगभग तीन माह तक सभी कुछ ठीक चला। उसके बाद अब जीवन का यथार्थ धरातल सामने आया।

जिस परिवार में मोहिनी ने पदार्पण किया, उस परिवार में नैतिकता, सद्भावना, परोपकार, सहिष्णुता, सांस्कृतिक गुणों का दूर–दूर तक कोई नाता नहीं था। घर के सदस्यों में आपसी प्रेम, भाईचारा बहुत दूर जा चुके थे। मोहिनी पर कम दहेज लाने का आरोप लगाया जाने लगा। भाइयों द्वारा कर्ज लेकर मोहिनी के ससुराल वालों का मुँह भरा गया लेकिन लालच की खोपड़ी आखिर कब तक भरती?

आए दिन नए–नए सामानों की माँग होने लगी। इस तरह आए दिन की माँगों से हमारा परिवार भी दुखद स्थितियों से गुजरने लगा।

इसी तरह के माहौल में लगभग डेढ़ वर्ष बाद मोहिनी ने एक प्यारे से शिशु को जन्म दिया। परिवार के सदस्यों को ऐसा लगने लगा कि थोड़ी खुशी फिर से लौट आई है लेकिन आखिर कब तक के लिए।

उधर मोहिनी के पति सुजान ने शराब की लत पकड़ ली, सास भी उनका साथ देती थी और खुद भी थोड़ा बहुत अफीम का सेवन करती थीं। यह सब स्थिति देखकर मोहिनी बहुत परेशान रहने लगी और जीवन के इस पड़ाव पर हारती दिखाई देने लगी। इसी तरह लगभग चार वर्ष व्यतीत हो गए। वैवाहिक जीवन की डोर हिचकोले लेने लगी। मोहिनी ने सभी पूजा–पाठ, टोने–टोटके किए लेकिन स्थिति में कोई सुधार न हुआ।

अंत में परिस्थितियों से हार मानकर बच्चे को लेकर मोहिनी मायके आ गई। प्रारंभ में तो सब कुछ ठीक चला लेकिन लगभग दो वर्ष गुजरने के बाद अब मोहिनी सभी की आँखों की किरकिरी बन गई। जो मोहिनी कुछ सालों पूर्व रूप–लावण्य की मूर्ति लगती थी अब वह उम्र से पहले ही बूढ़ी लगने लगी।

मोहिनी ने अपना बच्चा, जिसका नाम आर्यन था, घर के पास ही किसी छोटे से विद्यालय में दाखिल करा दिया। मोहिनी की कम उम्र देखकर परिवार के सदस्य उसका विवाह अन्यत्र करने का विचार करने लगे लेकिन भारतीय संस्कृति की परंपराओं में जकड़ी मोहिनी ने कहा, "मैं दूसरी शादी नहीं करूँगी। जिस घर में गई थी, उसी देहरी पर प्राण तज दूँगी।"

कुछ दिन बाद मेरी मुलाकात मेरी सहेली दीपा के जरिए डॉ. मंजीत सिंह से हुई जो नशामुक्ति सेंटर चलाते थे। उसी दौरान मोहिनी के पति सुजान का भी आगमन हुआ। मुझे एक अच्छा अवसर मिला कि मैं कुछ नशे के बारे में उपाय कर सकूँ। मैंने मोहिनी के पति के बारे में पूरी जानकारी डॉ. साहब को दी। उन्होंने नशा रोकने की दवाई का कोर्स लगभग छः माह का बताया। दवाई ले ली गई, अगले दिन से दवाई चाय में डालकर देना शुरू कर दिया गया।

प्रारंभ में कुछ मुश्किलें भी आईं, शरीर पर लाल चकते पड़ गए। लेकिन हम लोगों ने हार नहीं मानी और लगातार दवाई देने लगे।

लगभग दस दिन में पीने की आदत में कुछ सुधार होने लगा। कुछ दिन बाद मोहिनी ने अपनी ससुराल जाने की इच्छा व्यक्त की। एक महीने की दवाई मोहिनी के साथ रखी गई। सभी की सहमति से ससुराल पहुँचकर मोहिनी वहाँ भी चोरी–छिपी दवाई का सेवन कराती रही। अब एक शराबी सुजान में चमत्कार सा दिखाई देने लगा। लगभग छः महीने की दवाई के बाद अब सुजान पूरी तरह से नशे से मुक्त हो चुका था। लगभग एक साल बाद मोहिनी ने एक कन्या को जन्म दिया, उसका नाम रखा गया–नव पल्लवी। जीवन में चतुर्दिक खुशियाँ लौट आईं। मोहिनी का नारकीय जीवन स्वर्णिम बन गया।

सुजान के ठीक होने पर मैंने डॉ. सिंह को पूरा हाल बताया और बहुत–बहुत धन्यवाद दिया। इसके बाद हम लोग ट्रांसफर होकर नए शहर में आ गए लेकिन डॉ. सिंह का फोन नंबर एवं पता लाना न भूले। उसी दौरान मोहिनी का प्यार भरा पत्र मुझे प्राप्त हुआ, जिसमें लिखी एक लाइन मेरे मन को द्रवित कर गई। 'आदरणीय भाभीजी! नमस्ते, मेरा जीवन तो नरक के समान था। सुजान को नशे से मुक्त करने में आपने मेरी जो सहायता की, मेरे जीवन का एक नया अध्याय शुरू किया, इसके लिए शत्–शत् धन्यवाद।'

उसके बाद इस पंक्ति ने मुझ पर इतना प्रभाव डाला कि जब भी किसी का घर नशे के कारण बिगड़ता देखती तो डॉ. साहब का फोन नंबर एवं पता अवश्य बताती। इस तरह से लगभग छः–सात लोगों को नशे से मुक्त करा सकी। एक दिन मैंने डॉ. साहब को फोन करके बताया कि जब भी आपका फोन नंबर बदले, अवश्य हमें सूचित करिएगा क्योंकि आप समाज में नशा उन्मूलन के लिए इतना सहयोग कर रहे हैं, आप वास्तव में एक देवदूत के समान हैं। यदि हम अपने व्यस्त पलों से दो पल निकालकर किसी का जीवन सँवार सकें, किसी डूबते हुए के लिए कश्ती बन सकें, किसी मुरझाते पुष्प को जीवनदान दे सकें तो हमारा यही छोटा सा सत्कर्म ही हमारी ईश्वरीय पूजा होगी। यही ईश्वर का साक्षात्कार है। ◈

सुनहरी आशा

◈ fu'kk R;kxh
मॉण्टफोर्ट स्कूल
अशोक विहार, दिल्ली

सुमन ने ध्यान से उसकी ओर देखा और कहा, ''सच बता, क्या बात है?'' ''क्या बताऊँ भाभी! पिछले महीने से मेरे आदमी का काम छूट गया है। पहले गाड़ियाँ साफ करता था पर आजकल रोज मुझसे पैसे माँगता है पीने को। न दूँ तो पीटता है। अब आप ही बताओ, घर चलाऊँ या इसको पैसे दूँ।''

nksपहर के तीन बजे थकी–हारी सुमन स्कूल से पढ़ाकर अभी घर की सीढ़ियाँ चढ़ ही रही थी कि मोबाइल की घंटी बज उठी, "भाभी, मैं आज नहीं आऊँगी।"

अपनी कामवाली आशा की आवाज सुनते ही सुमन भड़क उठी, "क्यों, अब क्या हो गया? अभी दो दिन पहले ही तो तुम छुट्टी पर थी।" गुस्से से सुमन बोलती जा रही थी।

"भाभी, बुखार है।" उधर मरी हुई आवाज में आशा ने कहा, "तुम्हारा तो रोज कोई नया बहाना।" जोर से बोलते हुए सुमन ने फोन काट दिया।

पिछले आठ साल से आशा सुमन के घर काम कर रही थी। स्कूल से आते ही उसे पानी देना, खाना खिलाना और सारे घर का काम इतनी सफाई से करना कि घर की हर चीज चमचमाती थी। बस एक छुट्टी करने के अलावा आशा के काम में कोई कमी न थी।

पहले पहल तो सब कुछ ठीक था। पर अब तो पानी सिर से उतर

गया था। हर चार दिन बाद कभी एक, कभी दो दिन की छुट्टी, कैसे काम चलेगा। सोचते–सोचते सुमन रसोई में काम करने लग गई।

तीन दिन बाद जब आशा आई तो सुमन उसे देखते ही भड़क गई। पर ये क्या? उसके सिर पर तो पट्टी बँधी थी। "अरे! ये क्या हो गया?" सुमन ने कहा। "भाभी, चक्कर आ गया था। सिर दीवार से टकरा गया।" नजरें चुराते हुए आशा ने कहा।

सुमन ने देखा तो आशा की आँखें आँसुओं से भरी थीं। "चल डॉक्टर के पास अभी।" उसे खींचते हुए सुमन ने कहा। डॉक्टर के पास जाकर आशा के सिर पर पट्टी बँधवाकर और दवाई दिलवाकर सुमन आराम करने के लिए कुर्सी पर बैठ गई। धीरे–धीरे आशा ने घर का सारा काम खत्म किया और सुमन को चाय देकर बोली, "लो भाभी चाय।"

"तेरी चाय कहाँ है?" सुमन ने पूछा। "अभी ला रही हूँ।" कहकर आशा रसोईघर से चाय का कप उठा लाई और धीरे–धीरे पीने लगी।

सुमन ने ध्यान से उसकी ओर देखा और कहा, "सच बता, क्या बात है?" "क्या बताऊँ भाभी! पिछले महीने से मेरे आदमी का काम छूट गया है। पहले गाड़ियाँ साफ करता था पर आजकल रोज मुझसे पैसे माँगता है पीने को। न दूँ तो पीटता है। अब आप ही बताओ, घर चलाऊँ या इसको पैसे दूँ।"

सुमन सुनकर हैरान हो गई। कहा, "तुमने पहले तो कभी नहीं बताया।" "हाँ भाभी! पहले जो कमाता था नशे में उड़ा देता था। अब समझ ही नहीं आता कि क्या करूँ? बच्चे भी पालने हैं।"

सुमन ने हमदर्दी से कहा, "तुम उसको नशा छुड़ाने वाली दवाई क्यों नहीं दिलाती?" "कोशिश की थी देने की, पर उसे खाकर उल्टी हुई तो वह समझ गया और मुझे खूब मारा–पीटा।" कहते–कहते आशा की सिसकी बँध गई। "चल रो मत। करते हैं कुछ इसका उपाय।" सुमन ने धीरज बँधाते हुए उससे कहा।

ऐसे ही दिन बीतते गए। आशा के शरीर पर पिटने के निशान बढ़ते गए। और फिर एक दिन आशा को आए सात दिन हो गए तो

सुमन ने परेशान होकर किसी और काम वाली को ढूँढ़ना शुरू किया। तभी अचानक उसे फोन आया कि आशा जल गई है। सुनकर सुमन की रुह काँप गई। "ओह! यह क्या हो गया?"

हिम्मत करके शाम को अपने पति राजीव के साथ जाकर सुमन ने अस्पताल में देखा तो आशा पूरी तरह से जली हुई पट्टियों में लिपटी पड़ी थी। सुमन की आँखों में आँसू आ गए। यह कैसे हो गया? पता चला कि रसोई में काम करते समय उसके पति ने उसे धक्का दे दिया और गैस पर रखे कुकर से उबलते चावल उसके शरीर पर आ गिरे।

डॉक्टर से बात करने पर पता चला कि कम–से–कम तीन महीने लगेंगे आशा के घाव भरने में। कुछ पैसे और दवाइयाँ आशा को देकर सुमन भारी मन से घर वापस आ गई। घर आकर वह बेचैन रहने लगी। नशे में चूर आशा को पीटते हुए आशा का पति उसे बार–बार दिखता। जली हुई आशा की तस्वीर बार–बार उसकी आँखों के आगे आ जाती। उसने सोच लिया कि अब कुछ करना है। सुमन ने अपने पति से कहा, "क्या हम आशा के पति को नशामुक्ति केंद्र नहीं भेज सकते?" "हाँ, भेज तो सकते हैं।" गंभीरता से सुमन के पति राजीव ने कहा।

"तो तुम कुछ भी करके उसे नशामुक्ति केंद्र भेजो न!" सुमन ने जिद करते हुए कहा। राजीव ने नशामुक्ति केंद्र में फोन करके सारी जानकारी प्राप्त की और आशा के रिश्तेदारों से बात की। काफी प्रयासों के बाद आशा के पति को नशामुक्ति केंद्र भिजवा दिया गया।

तीन महीने बाद आशा भी काम पर लौट आई किंतु उसके शरीर पर जले हुए निशान सुमन को आज भी विचलित कर देते हैं, "काश! पहले ही आशा के पति को नशामुक्ति केंद्र भेज देते तो आशा जलने से बच जाती।"

आपके अपने घरों में काम करने वाली ऐसी कितनी ही आशाएँ हैं जिन्हें आप जलने या मरने से बचा सकते हैं। अगर हम सब मिलकर किसी एक व्यक्ति की भी नशे की आदत छुड़वा दें तो 'नशामुक्त भारत' का सपना साकार होने में अधिक समय नहीं लगेगा। ◈

दृढ़-संकल्प

◈ Ñ".kk cuth
टैगोर पब्लिक स्कूल, टैगोर लेन
शास्त्रीनगर, जयपुर
राजस्थान

डॉक्टर की इजाजत लेकर नीरव को दिल्ली ले आई नेहा। दिन-रात उसकी सेवा की। बच्चों ने नीरव को सब भुला दिया। धीरे-धीरे नीरव की हालत सुधरने लगी। माँ बड़े प्यार से अपने लाडलों का सिर सहलाती बाबूजी पास बैठे रहते। बच्चे अपनी प्यारी हरकतों से हँसा दिया करते। नीरव फिर से जी उठा।

ßeh कहाँ हूँ?" ये मुझे क्या हुआ? मेरा सिर भारी–भारी सा क्यों है।"

"दोनों हाथों से अपने सिर को थामा था उसने। उफ्फ...आखिर मैंने ये सब क्यों किया। अब मेरे बच्चों का क्या होगा। मेरी पत्नी कितनी चहकती है जब लाल चूड़ियाँ, लाल साड़ी, हाथों में मेहँदी सजाकर करवा चौथ का व्रत करती है। भूख–प्यास का असर जैसे उस पर होता ही नहीं। दिन भर पकवान बनाती है मेरे लिए, बच्चों के लिए, फिर बड़े चाव से सोलह शृंगार करती है। चेहरे पर मुस्कान सजाए मेरी आरती करती है। मेरे हाथों से पानी पीकर व्रत खोलना अपना सौभाग्य समझती है।

और मैं...यह क्या कर बैठा?"

नीरव के पूरे शरीर में इक सिंहरन सी हुई, वह सिसकने लगा। जैसे उसके अंदर सब कुछ टूट रहा हो। जैसे लहर उठेगी और सब कुछ बह जाएगा। रह जाएगा तो बस इक सन्नाटा और सिसकियाँ। यह सब क्या हो गया? आखिर उस पल वह इतना कमजोर कैसे हो गया था। मना

भी तो कितना किया था। माँ–बाबा का पता चला तो जान निकाल देंगे। पर दोस्तों ने माना ही नहीं।

"मुन्ना, जा बैठ जा माँ की गोद में।" मुन्ना "हा–हा–हा–हा–हा"। बहुत हँसे थे सारे दोस्त और नीरव ने भी तैश में आकर बोल दिया, "लाओ दो, मैं कोई मुन्ना नहीं। मर्द हूँ मर्द।" मोहन के हाथ से छीनकर सिगरेट नीरव ने अपने होंठों से लगाई। एक जोर का कश लिया। ये क्या?

"खाँ...खाँ...खाँ...।" नीरव खाँसता रहा। उसकी आँखें लाल हो गईं। नाक से पानी बह चला।

मगर दोस्त थे कि हँसते रहे। नीरव ने खाँसते हुए कश लिया। एक बार–दो बार–तीन बार..."आहा...क्या अहसास!" आँखें बंद कर नीरव कश लेता रहा। वह बादलों के साथ उड़ रहा था। उसे पता होता कि थोड़ी सी खाँसी के बाद सुख का महासागर है तो कभी मना नहीं करता। कब का उसमें गोते लगा लेता।

अब तो जैसे यह सिलसिला चल पड़ा। छुप–छुपकर दोस्तों के साथ 'सुख' की नदी में तैरता रहता।

पहले सिगरेट से नीरव का मन भर जाता थ। धीरे–धीरे शराब की बोतल भी आने लगी।

माँ–बाबूजी ने खूब समझाया। पर किसी तरह लाड़ले बेटे को समझा नहीं सके। मारा–पीटा सब करके देख लिया पर नीरव तो जैसे कुछ सुनना ही छोड़ चुका था।

सबने सलाह दी, "गुप्ता जी बेटे की शादी कर दो। पैरों में जंजीर पड़ गई तो सुधर जाएगा।"

आनन–फानन में लड़की ढूँढ़ी, गुप्ता जी को नेहा भा गई अपने लाड़ले के लिए। सीधी, सुंदर, सुघड़। उसकी मुस्कान ऐसी कि पत्थर दिल भी पिघल जाए।

जोर–शोर से शादी की तैयारी शुरू हुई। माँ–बाबूजी बहुत खुश थे। प्यारी सी बहू जो घर आने वाली थी, कहीं मन में उनके आशा के दीप जल उठे थे कि उनका बेटा सुधर जाएगा, इस सुंदर सी परी को पाकर।

वह दिन भी आ गया जब नेहा ने नीरव के घर अपने कदम रखे। नीरव क्या घर का कोना–कोना खुश था। समय पंख लगाकर उड़ चला। कुछ दिन में नीरव जैसे बदल सा गया था। ना सिगरेट को होंठों से लगाया, ना ही उसे शराब की तलब हुई।

नेहा के प्यार ने उसे इस लत से दूर कर दिया था या यूँ कहिए उसे वक्त ही नहीं मिलता था किसी नशे के लिए।

नीरव को एक ऑफिस में नौकरी मिली। अब उसे अपनी जिम्मेदारी महसूस हो चुकी थी। बात ही ऐसी थी, उसकी जिंदगी अब बदल सी गई थी। माँ–बाबूजी खुश थे कि उनका बच्चा सुधर चुका था। समय ने एक–एक करके दो नन्हे–मुन्ने भी दे दिए। बच्चों की किलकारियाँ गूँज उठीं घर में। बच्चों की प्यारी–प्यारी हरकतों से घर को जैसे खुशियों का खजाना मिल गया था। नेहा को नीरव को खुश रखना आता था, उसने बड़े प्यार से नीरव का मन वश में रखा।

पर होनी को तो कुछ और ही मंजूर था। अचानक एक दिन नीरव ऑफिस से आया तो उसे बुखार था। डॉक्टर के पास गया। सारे जाँच करवाए। जो परिणाम सामने आया वह भयावह था। कुछ सालों तक नीरव ने जो लगातार नशा किया था उसने नीरव को खोखला कर दिया था। नीरव का लीवर खराब हो चुका था। डॉक्टर ने नीरव को बताया कि यदि सावधानी नहीं रखी तो कमजोर लीवर उसके लिए जानलेवा हो सकता है।

नीरव डर गया, "नहीं...नहीं...मैं जीना चाहता हूँ नेहा के लिए। अपने बच्चों के लिए।" डॉक्टर ने उसे हिदायत दी थी कि आराम करे, हल्का खाना खाए और दवाई समय पर ले।

मगर वहाँ नीरव को छः महीने के लिए ऑफिस के काम से पंजाब जाना पड़ा। दिल्ली से दूर पंजाब जहाँ काम की थकान और जेहन में डॉक्टर के गूँजते शब्दों ने उसे खूब डराया। वहाँ नेहा भी नहीं थी उसे सँभालने के लिए।

नीरव फिर अकेला था, परेशान था फिर एक बार नशे को मौका

मिला पास आने का। नीरव फिर कमजोर पड़ गया। ले लिया सहारा नशे का। घर से दूर, नेहा से दूर, पास आया तो उसी नशे के जिसके कारण वह डरा हुआ था। दिन बीते।

एक दिन अचानक दर्द, उल्टियाँ और यह क्या "खून!" नहीं–नहीं।

नीरव के ऑफिस का साथी, जो किसी काम से नीरव से मिलने पंजाब गया था, नीरव के पास था पिछले दो दिन से। उसने नीरव के घर वालों को खबर दी। नीरव को अस्पताल लेकर गया। नीरव होश में नहीं था। आँखें जब दो दिन बाद खुलीं तो सामने नेहा खड़ी थी।

"मैं कहाँ हूँ? मेरा सिर भारी–भारी सा क्यों है?" नेहा ने प्यार से उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "मैं आपको कुछ होने नहीं दूँगी। आपको कुछ नहीं होगा, हम सब हैं ना। आप इतने कमजोर नहीं कि किसी नशे को छोड़ न सके। चलिए घर चलिए।"

डॉक्टर की इजाजत लेकर नीरव को दिल्ली ले आई नेहा। दिन–रात उसकी सेवा की। बच्चों ने नीरव को सब भुला दिया। धीरे–धीरे नीरव की हालत सुधरने लगी। माँ बड़े प्यार से अपने लाड़ले का सिर सहलाती, बाबूजी पास बैठे रहते। बच्चे अपनी प्यारी हरकतों से हँसा दिया करते। नीरव फिर से जी उठा।

सबके प्यार ने उसकी आत्मशक्ति को भी जगाया। उसने दृढ़–संकल्प किया कि अब कोई कमजोर नहीं। न कोई नशा। जीना है उसे नेहा, बच्चों और माँ–बाबूजी के लिए।

"काश! मुझे ये समझ उस दिन आ जाती जब दोस्तों की हँसी से चिढ़कर नशे को हाथ लगाया।"

नेहा ने कहा, "कोई बात नहीं, जब जागो समझो सवेरा हुआ तभी।"

सब हँस पड़े, "हा–हा–हा–हा–हा।"

एक घर फिर से बस गया। एक डाली उजड़ने से बच गई।

नई सुबह, नई किरण ऐसे ही सबके जीवन में आए। कमजोर न हो मन से, तन से कोई। नशा उजाड़ न पाए किसी घर को। हर मन दृढ़–संकल्प कर ले नशामुक्त रहने का। ◈

भाग-3

नाटक

तीन हिस्से

◈ **foukn uk;d**
ज्ञान विकास माध्य. विद्यालय
973–जे, नंदनवन, नागपुर, महाराष्ट्र

पात्र-परिचय

jkeukFk voLFkh	%	दादाजी
e|dyknoh	%	दादी
exy'k] Hkou'k] foey'k	%	तीन बेटे
ick)h] nfodk vkj ifo=k	%	तीन बहुएँ
ekfydk ¼vk;| 19 o"k½	%	मंगलेश की बेटी
vFko| ¼vk;| 21 o"k½	%	मंगलेश का बेटा
f{kik ¼vk;| 11 o"k½	%	भुवनेश की बेटी
n'k| ¼vk;| 9 o"k½	%	भुवनेश का बेटा
Mk- yky	%	डॉक्टर
vk'kk cgu	%	पड़ौसी
ljt|	%	धोबी

¼igyk n'';½

(परिवार के सभी लोग घर में एकत्र हैं। दादाजी क्षिप्रा को लेकर खड़े हैं, सामूहिक बातचीत का शोर है। क्षिप्रा के सामने टेबल पर केक रखा है। क्षिप्रा केक काटती है)

lHkh ykx % हेप्पी बर्थडे टू यू–हेप्पी बर्थडे टू यू।
हेप्पी बर्थडे क्षिप्रा ¼**rkfy;k ctkr| g**½

f{kik % **¼dsd dk NkVk ihl dkVdj nknkth dh vkj djd½** लीजिए दादाजी, पहले आप।

nknkth % अच्छा बेटा, जन्मदिन आज तेरा है या मेरा **¼dsd dk ihl ydj½** तो सबसे पहले केक कौन खाएगा?

ekfydk

vkj n'k % क्षिप्रा दादाजी।

nknkth % ठीक कहा **¼f{kik l½** चल खोल मुँह **¼f{kik dk dsd f[kyk nsr g½**

ekfydk % क्षिप्रा अब दादाजी को खिलाओ।

f{kik % लीजिए दादाजी। **¼nknkth dsd [kkr g½** तेरी दादी को भी खिला दे। देख कैसे घूर–घूर कर देख रही है।

lHkh cg,i % हाँ क्षिप्रा, अब दादीजी को खिलाओ।

nknh % **¼eg Qjdj½** छी, मैं केक–ऐक नहीं खाती।

ekfydk % दादीजी बिना अंडे का केक है।

nknh % अच्छा जब बन रहा था तो तू देखने गई थी।

ekfydk % दादी, ये हरि ओम डेयरी का है।

ick)h

¼cMh cg½ % हाँ माँ जी, वहाँ सब शुद्ध शाकाहारी ही मिलता है।

vFkol % हाँ दादी, हंडरेड परसेंट शुद्ध शाकाहारी।

Hkous'k % हाँ माँ, ये बिना अंडे का ही केक है।

f{kik % **¼nknh th dh vkj dsd c<kdj½** लीजिए न दादीजी।

nknh % न बाबा न। इस बुढ़ापे में मैं अपना धर्म भ्रष्ट नहीं करूँगी। जा तेरे मम्मी–पापा को खिला।

f{kik % **¼rkÅth dh vkj n[kdj½** ताऊजी देखिए ना, आप दादीजी को समझाइए ना।

exy'k % माँ आप खा रही हैं या मैं खिलाऊँ।

nknh % अरे बेटा, तू जबरदस्ती करेगा। ला, ला **¼f{kik l ydj½** खा ही लेती हूँ।

ekfydk % अच्छा दादी, इतनी देर से हम कह रहे थे, तो आप मान नहीं रही थी और पापा ने एक ही बार कहा और आपने खा लिया।

nknkth % बेटा, ये तो माँ–बेटे का प्यार है। अब तो इसका धर्म पवित्र हो गया।

nknh % बच्चो, प्रेम से तो भगवान ने भी शबरी के झूठे बेर खा लिए थे, मैंने तो केक ही खाया है।

f{kik % दादी, हम भी तो प्रेम से खिला रहे थे।

nknh % बेटा, तुम सबके प्रेम के कारण ही मुझे केक खाना पड़ा।

nknkth % हाँ भाई, नहीं तो तुम्हारी दादी मावा की मिठाई और रसमलाई खाने की बड़ी शौकीन है।

nknh % अच्छा–अच्छा, अब चलो खाना परसो।

nknkth % हाँ भाई, बड़े जोर की भूख लगी है।

exy'k % प्रबोद्धी, जल्दी खाना लगाओ, पेट में चूहे कूद रहे हैं।

ekfydk % हम लोग तो छोटी चाची के साथ डांस करेंगे, क्यों क्षिप्रा?

f{kik % हाँ दीदी, हम लोग खाना बाद में खाएँगे। चलो चाची।

¼pkph d lkFk vnj pyh tkrh g½A

vFkoZ % **¼n'k l½** चलो–चलो इनका डांस देखेंगे।

n'k % हाँ, चलो। **¼nkuk nkMdj tkr g½**

nknh % देखो–देखो बेटा, जरा आराम से जाना।

¼nljk n';½

(दादाजी चिंताग्रस्त होकर कमरे में घूम रहे हैं)

nknkth % अरी, सुनती हो।

nknh % हाँ, सुन रही हूँ। अब क्या हुआ?

nknkth % मैं कह रहा था कि...

nknh % **¼dej e vkdj½** हाँ बोलो क्या कह रहे थे?

nknkth ½ अरे भाई, कितनी बार कहा है कि मौलिका को अकेले बाहर मत भेजा करो। लेकिन तुम लोग इस कान सुनते हो और उस कान निकाल देते हो।

nknh ½ अरे जी, मौलिका अब छोटी बच्ची नहीं रही।

nfodk ½ हाँ दादाजी, मौलिका अब अच्छे–अच्छे के कान काटती है।

nknh ½ जब से वो कॉलेज जा रही है न, नई–नई बातें सीख कर आ रही है।

nknkth ½ यही तो डर है मंगलेश की माँ।

nknh ½ हाँ मैं समझती हूँ, लेकिन हमारी मौलिका जवान है पर नादान नहीं।

nfodk ½ हाँ दादाजी, वो सारी बातें हमें बताती है।

nknkth ½ लेकिन बेटा सुबह की गई हुई है, **¼gkFk ?kMh n[kdj½** दो बजने वाला है।

nknh ½ तो आ जाएगी शाम तक। खामखाह पूरा घर सर पर उठा रखा है। मैं कहती हूँ, तुम भी थोड़ा बाहर घूम–फिर आया करो। कम से कम हमें तो चैन मिलेगा।

¼rHkh vFkoZ dk izos'k½

vFkoZ ½ क्या हुआ दादी? किस बात पर दादाजी से झगड़ रही हो?

nknh ½ लो तुम्हारा लाड़ला पोता आ गया। पूछता है–**¼eqg cukdj½** किस बात पर झगड़ रही हो?

vFkoZ ½ लेकिन हुआ क्या है दादाजी?

nknkth ½ बेटा, मौलिका सुबह आठ बजे की इंटरव्यू देने गई है, अभी तक नहीं आई है।

vFkoZ ½ क्या दादाजी, अभी तक नहीं आई?

nfodk ½ हाँ अथर्व, तू जाकर देख ना।

vFkoZ ½ लेकिन मम्मी और चाची कहाँ गई हैं?

nfodk ½ वो तो मार्केट गई हुई हैं।

vFkoZ % दादाजी रुकिए **¼ekckby fudkyrk g½** अभी पता चल जाएगा।

nknkth % बेटा, इसी बात का रोना है। वो आज मोबाइल घर पर ही छोड़ गई है।

vFkoZ % तो दादाजी उसकी सहेली दिव्यांशी को लगाकर पूछ लेता हूँ।

nknkth % हाँ, ये ठीक है, वो भी इंटरव्यू देने गई है।

vFkoZ % **¼ekckby yxkrk g] ?kVh ctrh g½** उठाओ दिव्यांशी, उठाओ...उठाओ...दादाजी रिंग जा रही है, लेकिन उठा नहीं रही है।

nknkth % मालूम नहीं क्या बात हो गई? फिर से लगा।

nknh % आती होगी, तुम तो बस यूँ ही फिक्र करने लगते हो।

vFkoZ % **¼fQj ls ekckby yxkrk g] cty ctrh g] ij mBkrh ugh½** दादाजी, ये दिव्यांशी भी मोबाइल नहीं उठा रही है।

nknkth % क्या हो गया है इन दोनों को? फोन क्यों नहीं रिसिव करतीं?

nfodk % दादाजी, शायद इंटरव्यू दे रही होंगी, इसलिए मोबाइल रिसिव नहीं कर रही हैं।

nknkth % तीन बजने को हैं बहू, इतनी देर कोई इंटरव्यू चलता है क्या?

nknh % तुम लोग तो बेवजह परवाह कर रहे हो, जब वो आएगी तो सब पता चल जाएगा।

vFkoZ % रुकिए दादाजी, मैं अभी देखकर आया।

nknh % हाँ, हाँ, तू ही जाकर देख बेटा **¼vFkoZ njokt s rd tkrk gh g½**

vFkoZ % लो दादाजी मौलिका ही आ गई।

ekfydk % दादी, दादाजी, आज मैं बहुत खुश हूँ।

nknh % क्यों क्या हुआ?

nknkth % और हाँ बेटा, इतनी देर से तू कहाँ थी?

vFkoZ % कुछ नहीं दादाजी, सहेलियों के साथ गोलगप्पे खा रही होगी, और काम ही इन्हें क्या है?

ekfydk % चुप ढक्कन।

vFkoZ % ढक्कन तो तेरा बंद कर, सुबह की गई थी, शाम को चार बज रहे हैं।

nknkth % हम सोच–सोचकर परेशान थे।

nknh % हाँ बेटी, हमारी तो जान ही निकली जा रही थी।

nfodk % और तू अपना मोबाइल भी घर भूल गई थी।

ekfydk % दादा–दादी मेरी बात तो सुनो।

nknh % हाँ क्या हुआ बेटी?

nknkth % और तेरा इंटरव्यू तो अच्छा रहा।

ekfydk % वही तो बता रही हूँ दादाजी।

nknkth % अच्छा–अच्छा जल्दी बता।

ekfydk % पहले बोलो मुझे स्कूटी दिलवाओगे ना।

nknkth % हाँ–हाँ, दिला दूँगा, मेरा वादा रहा। अब बता...

nknh % तुमने ही इसे सर पर चढ़ाया है।

ekfydk % दादी, आप सुनेंगी तो आप भी नाचने लगेंगी।

nknh % **¼Hkkg p<kdj½** ना, मैं तो कभी न नाचूँ।

nknkth % दादी की बात छोड़, पहले बता कौन–सी खुशखबरी है।

ekfydk % मालूम है दादाजी, मेरा कमर्शियल पायलेट ट्रेनिंग में सलेक्शन हो गया है।

nknkth % वाह, मेरी बेटी वाह, तूने तो मेरा सर ऊँचा कर दिया। अरे सुना बड़ी बहू...

nknh % बड़ी और छोटी बहू दोनों मार्केट गई हैं।

nknkth % मंगलेश की माँ, हमारी बिटिया पायलेट बनेगी पायलेट। एरोप्लेन चलाएगी।

nknh % क्या एरोप्लेन चलाएगी?

ekfydk % हाँ दादी, हाँ।

nknh % मुझे उसमें घुमाएगी ना?

ekfydk % आपको ही नहीं दादी, पूरे परिवार को।

nknh % सच बेटी?

ekfydk % सचमुच दादी।

nknh % बेटी, मेरी तो एक ही बार घूमने की इच्छा है, बस।

ekfydk % आपकी यह इच्छा मैं पूरी करूँगी दादी।

vFkoZ % अभी दो साल ट्रेनिंग के हैं मेमसाहब, पायलेट ही बन गई। **¼eaq g cukdj½** दादी आपकी इच्छा मैं पूरी करूँगा।

nknhth % अथर्व, तुम फिर झगड़ने लगे। अच्छा चलो, तुम मिठाई ले आओ। सब लोगों को मिठाई खिलाएँगे।

nfodk % हाँ दादाजी, मिठाई तो सब लोग मागेंगे।

ekfydk % लेकिन दादाजी, मुझे तो स्कूटी ही चाहिए।

nknkth % हाँ बेटी, दादाजी का कहा पत्थर की लकीर है।

nfodk % हाँ मौलिका, दादाजी ने कहा मतलब का हुआ। अब चल फ्रेश हो जा।

nknh % हाँ, हाँ जा–जा बेटा फ्रेश हो जा, थक गई होगी।

¼rhljk n';½

(दादाजी, दादी, मंगलेश, भुवनेश बैठक कक्ष में बैठे हैं, तभी मुंगोड़े लेकर प्रबोद्धी का प्रवेश)

izcks)h % बाबूजी, गरमागरम मुंगोड़े।

nknkth % अरे वाह बहू, यह काम पते का किया है।

nknh % हाँ बहू, तेरे बाबूजी मुंगोड़े के तो दिवाने हैं।

nknkth % **¼IysV c<kdj½** लो मंगलेश बेटा, भुवनेश तू भी ले बेटा।

izcks)h % मैं और लाती हूँ न बाबूजी, आप तो खाइए।

nknkth % बात वो नहीं है बेटा, बात यह है कि हम खाएँ और ये मुँह देखें, ऐसा कभी हुआ है क्या?

ick)h % ठीक है बाबूजी, मैं और मुंगोड़े लेकर आती हूँ। **¼tkus yxrh g½**

nknh % **¼exkM dk ,d ihl [kkdj½** और सुन बहू, थोड़ा नमक बढ़ा देना।

ick)h % ठीक है माँजी।

foey'k % **¼Vkfoy l flj ikNr g, vkrk g½** अरे बड़ी अच्छी खुशबू आ रही है। आज क्या बना है नाश्ते में?

nknh % अभी–अभी प्रबोद्धी ने मुंगोड़े दिए हैं, तू भी खा ले, आ जा बेटा।

foey'k % हाँ भाई, किसी ने कहा है–सौ काम छोड़कर पहले खाना ...तो लाओ माँ मुंगोड़े।

nknh % ये ले बेटा।

foey'k % ये क्या माँ ऊँट के मुँह में जीरा।

nknkth % अभी तो शुरुआत है।

¼ekfydk vkj f{kik dk io'k½

ekfydk % हाँ चाचू, अभी तो शुरुआत है, देखते जाओ आगे–आगे होता है क्या?

f{kik % देखो चाचू, आज ताईजी, मम्मी और चाची तीनों मिलकर नाश्ता बना रही हैं।

¼ick)h d lkFk n'k vkrk g½

n'k % सभी लोग सावधान। **¼lc ykx n'k dk n[kr g½** क्योंकि मम्मी गाजर का हलवा, मुंगोड़े, भाजी पकौड़े और जलेबी लेकर आ रही हैं।

nknkth % अरे शैतान, दरबारी इधर आ इधर आ। **¼n'k nknkth d ikl tkdj cB tkrk g½** और तूने खाया।

ick)h % लीजिए दादाजी।

nknkth % हाँ, हाँ बेटा। सभी को दो।

nknh % बेटा आज इतना सब क्यों?

ekfydk o

f{kik % क्योंकि दादी आज दादाजी और आपकी मैरिज 'एनेवरसरी' है।

nknh % ये तुम दोनों के दिमाग की उपज होगी। चलो अब चुपचाप बैठ तो जाओ।

nknkth % और बेटा दर्श, तेरी मम्मी और चाची को भी बुला।

n'k % अभी बुलाकर लाया दादाजी। **¼n'k d lkFk nfodk vkj ifo=k vkrh g½A**

nknkth % बेटा, तुम लोगों ने तो सरप्राइज देकर हमें चौंका ही दिया।

ifo=k % बाबूजी, ये सब आपके आगे बैठे हैं, उनकी चाल है।

nknkth % अच्छा विमलेश की?

ifo=k % हाँ बाबूजी।

nknkth % क्यों रे, तू तो छुपा रुस्तम निकला।

nfodk % दादाजी, देवरजी ने हमें बताया और हमने कर दिखाया।

nknh % देखा ऐसी लाजवाब है मेरी बहुएँ **¼vnj l vFko vkrk g½**

vFko % दादी, लाजवाब तो दादाजी भी हैं, क्योंकि ये सब सामान लाने के लिए रुपये दादाजी ने ही दिए थे और लाया मैं था।

f{kik % कोई आपकी बहू ने नहीं बनाए दादी।

nknh % अरे, तुम लोगों ने मेरे साथ बोहोत खूब मजाक किया।

¼pkFkk n';½

(भुवनेश बिस्तर पर लेटा है। कुछ क्षण बाद देविका रुठे हुए अंदाज में आती है और बिस्तर पर आकर चुपचाप बैठ जाती है)

Hkou'k % क्या हुआ?

nfodk % मुझसे मत बोलो जी।

Hkou'k % तो हुआ क्या है?

nfodk % कहा न मुझसे बात मत करो।

Hkou'k % अरे बताएगी नहीं तो पता कैसे चलेगा?

nfodk % घर का तमाशा तुम देख तो रहे हो।

Hkou'k % क्या तमाशा देख रहा हूँ?

nfodk % सुबह से रात तक पूरा काम–धाम मैं और पवित्रा करते हैं और श्रेय प्रबोद्धी को देते हैं।

Hkuo'k % तुम अम्मा–बाबूजी की बात कर रही हो?

nfodk % हाँ! और तुम्हारे दिमाग की।

Hkuo'k % अब देविका भाभी बड़ी हैं। वैसे इसमें क्या हुआ?

nfodk % हाँ, तुम्हें तो कुछ भी समझ में आएगा नहीं, क्योंकि तुम्हारी फेवरेट भाभी है ना। लेकिन कुछ बच्चों के बारे में भी सोचो।

Hkou'k % देविका, मुद्दे की बात करो। तुम्हें कभी–कभी फालतू की बातें ज्यादा आती हैं।

nfodk % हाँ, मैं तो सनकी–पागल हूँ। समझदार तो बस तुम्हीं हो।

Hkou'k % बात वो नहीं है देविका। अच्छा कहो, असली बात है क्या?

nfodk % देखो जी, दादाजी ने बड़े भैया को दुकान खुलवा दी। मैंने कुछ नहीं कहा।

Hkou'k % हाँ तो फिर?

nfodk % अब अथर्व को इंजीनियरिंग और मौलिका को पायलट ट्रेनिंग के लिए रुपये भी दे दिए।

Hkou'k % हमारे बच्चे अभी छोटे हैं, बड़े होंगे तो उन्हें भी देंगे।

nfodk % ये सब कहने की बातें हैं। क्षिप्रा के बर्थ डे पर सड़ा सा ड्रेस दिया था।

Hkou'k % लेकिन ड्रेस दिया तो था ना।

nfodk % अब फिर मौलिका को स्कूटी दिला दी।

Hkou'k % अरे वो जिद कर रही थी तो दिला दी। क्या हुआ?

nfodk % और जब क्षिप्रा ने साइकिल के लिए कहा था, तब...तब बाबूजी के कान में जूँ तक नहीं रेंगी थी।

Hkou'k % तब बाबूजी के पास रुपये नहीं होंगे।

nfodk % भुवनेश सीधे–सीधे बोलो ना, हमारे लिए और हमारे बच्चों के लिए बाबूजी के पाए रुपये नहीं हैं, बस।

Hkou'k % ऐसी बात नहीं देविका।

nfodk % भुवनेश, तुमने आँखों पर पट्टी बाँधर रखी है।

Hkou'k % देविका, बाबूजी सबको बराबर नजर से देखते हैं।

nfodk % मैं नहीं जानती भुवनेश। बाबूजी से संपत्ति का बराबर हिस्सा माँग लो। हमारे बच्चे भी बड़े हो रहे हैं।

Hkou'k % मैं कोशिश करूँगा।

nfodk % देखो, अगर आपसे कहते नहीं बन रहा हो तो मैं कहूँ।

Hkou'k % नहीं, मैं ही बात करूँगा, ठीक है।

nfodk % ठीक है, मुझे तो बराबर–बराबर हिस्सा चाहिए, बस।

Hkou'k % अच्छा तो अब सो जाओ।

nfodk % ¼djoV ydj½ देखो जी, जल्दी ही बात करना।

Hkou'k % ठीक है, ठीक है, अब तुम सो जाओ। कहा ना, मैं बात करूँगा।

¼ikpok n';½

(बैठक कक्ष में दादाजी व दादी बैठे हैं, दादी मटर के दाने निकाल रही है। तभी बैग लेकर अथर्व का प्रवेश)

vFkoZ % दादी, मैं कॉलेज जा रहा हूँ।

nknh % अच्छा बेटा।

nknkth % अरे, सुन बेटा। अंदर मेरी अलमारी में बिजली का बिल होगा। ले जाना जरा।

vFkoZ % अभी लाया दादाजी। **¼fcy ydj vkrk g½** दादाजी, दो हजार तीन सौ रुपये का बिल है।

nknkth % जरा तेरे पापा को बुलाना।

vFkoZ % दादाजी, मैं कॉलेज के लिए लेट हो रहा हूँ।

nknkth % अरे बेटा, तेरे पापा रुपये दे देंगे तो बिल भी जमा करते हुए जाना।

vFkoZ % दादाजी, आज कॉलेज में स्पेशल क्लास है। मुझे जल्दी पहुँचना है। आप मौलिका को दे देना, जमा कर देगी।

nknkth % ठीक है बेटा तू जा। **¼vFkoZ pyk tkrk g] èkkch dk io'k½**

ljtw % माँजी धुलाई–प्रेस के कपड़े हैं क्या?

nknh % पूछती हूँ बेटा। **¼vkokt yxkrh g½** अरी बड़ी बहू।

ick)h % **¼vnj l½** हाँ माँ जी।

nknh % धुलाई–प्रेस के कपड़े हैं क्या?

ick)h % हैं माँ जी।

nknh % ला दे दे, सरजू आया है। **¼ifo=k diM ydj vkrh gA ljtw dk ndj½**

ifo=k % तैंतीस कपड़े हैं भैया, गिन लो।

ljtw % ठीक है भाभी, लाओ गिन लेता हूँ। **¼fxurk g½** ठीक है भाभी, पूरे तैंतीस हैं।

ifo=k % हाँ भैया। कब लाकर दोगे?

ljtw % भाभी परसों दूँगा।

ifo=k % ठीक है भैया। **¼ljtw diMk dk mBkdj pyk tkrk g½**

nknkth % अरे बेटा, मंगलेश जाग गया क्या?

ifo=k % हाँ दादाजी, जाग गए।

(तभी अंदर से देविका कपड़े लाकर आती है)

देविका : माँ जी सरजू गया क्या?

दादी : हाँ बेटा, वो तो गया। क्यों?

देविका : ये इनके कपड़े धोने को देने थे।

दादी : तो तूने पवित्रा को क्यों नहीं दिए बहू?

देविका : मैंने तो इससे कहा था–ये कपड़े भी ले जा, लेकिन ये अपने और बड़ी दीदी के कपड़े लेकर आ गई।

पवित्रा : दीदी, मैंने आपसे पूछा तो था, धोने के कपड़े हैं क्या? तो आपने ही कहा–नहीं हैं और अब खुद निकालकर लेकर आ गई।

देविका : जब तू नहीं लाई, तब निकालकर लाई हूँ।

पवित्रा : मैं तो सबके कपड़े निकालकर लाई और आपसे दो बार कहा कि दीदी कपड़े दे दो।

देविका : ऊपरी मन से। अरे ये क्यों नहीं कहती कि मेरे कपड़ों से तेरे हाथ गंदे होने लगे हैं।

पवित्रा : दीदी, मैंने तो कभी ऐसा नहीं कहा।

देविका : बस, यही कहना बाकी है। बड़ी दीदी से, ये पट्टी भी सीख ले।

पवित्रा : अब इसमें बड़ी दीदी का क्या कसूर है दीदी?

देविका : वो जैसा कहेंगी, वैसी ही तो बंदरिया नाचेगी।

दादी : देविका जबान संभालकर बातें करो।

देविका : सच ही तो बोल रही हूँ दादी। आप भी प्रबोद्धी के सिखाए में ही बोलती हो।

दादी : मैं और पवित्रा प्रबोद्धी के सिखाए में बोलते हैं और तू ये सब तेरी माँ के सिखाए में बोल रही है?

देविका : मेरी माँ तुम्हारी जैसी आग लगाऊँ नहीं है।

दादाजी : देविका, अब बस हो गया तमाशा। अब जाओ अपने कमरे में वरना...

nfodk % मैं तो जा ही रही हूँ दादाजी, लेकिन इन कठपुतलियों की डोर संभाल कर रखिए।

¼diM+s ydj pyh tkrh g½

nknh % आने दे इस बार तेरे माँ–बाप को। बड़े इज्जत वाले बनते हैं।

nfodk % **¼tkr&tkr½** इज्जत वाले हैं तो बनते हैं। **¼nkMdj ekfydk vkrh g½**

ekfydk % दादाजी आपका फोन, आपका फोन।

nknkth % किसका फोन है बेटा?

ekfydk % दादाजी, कोई महेश अंकल का फोन है।

nknkth % अच्छा ला दे।

nknkth % हैलो, हाँ जी कौन? हैलो हैलो **¼ekckby n[kr g½** लो फोन ही कट गया। आज सत्संग का कार्यक्रम मुझे ही संभालना था, इसलिए उपाध्यायजी ने फोन लगाया होगा।

nknh % पहले घर का सत्संग तो हो जाए, फिर बाहर का देखना।

ekfydk % हाँ दादी, अभी किसकी जोर–जोर से आवाज आ रही थी।

nknh % तेरी देविका चाची थी। पवित्रा से लड़ रही थी।

ekfydk % किस बात पर दादी?

nknkth % अब छोड़ो भी मंगलेश की माँ। मौलिका तेरे पापा को बुला तो जरा।

ekfydk % अभी बुलाया दादाजी।

nknh % मैं यह मटर के दाने बहू को देकर आती हूँ। **¼nknh tkrh g½**

exys'k % बाबूजी आपने बुलाया?

nknkth % हाँ बेटा। ये बिजली का बिल था, दो हजार तीन सौ रुपये का, आज जमा कर देना, अंतिम तारीख है।

exy'k % बाबूजी, दुकान और घर दोनों का बिल मैं ही जमा करता हूँ। इस बार घर का बिल भुवनेश को जमा करने को क्यों नहीं देते।

nknkth % ठीक है बेटा। तू दुकानों का बिल जमा कर देना।

exy'k % ठीक है बाबूजी। **¼rHkh Hkou'k vkfQl tku d fy, vkrk g½**

nknkth % अरे भुवनेश, ये घर का बिजली बिल।

Hkou'k % तो क्या करूँ बाबूजी?

nknkth % बेटा, मंगलेश का कहना है कि घर का बिजली बिल तू जमा कर दे।

Hkou'k % तो आज बात बिजली बिल पर आ गई बाबूजी।

nknkth % लेकिन बेटा, हम बिजली का उपयोग कर रहे हैं, तो बिल भरने में क्या हर्ज?

Hkou'k % भरने में हर्ज नहीं बाबूजी। आज तक बनी पूँजी बड़े भैया और विमलेश ने ही अपने कारोबार में लगाई है। आप ही बताइए आपने मुझे कुछ दिया है क्या?

nknkth % लेकिन बेटा, तू इस लायक है, नौकरीपेशा वाला है।

Hkou'k % तो मेरी खाल खींच लो बाबूजी। आपने ही इन दोनों को सह दे रखी है।

exy'k % भुवनेश तुझे पढ़ाया–लिखाया, इस काबिल बनाया और तू बाबूजी से इस तरह पेश आ रहा है?

Hkou'k % क्योंकि तुम लोग खुदगर्ज हो गए हो।

exy'k % लाइए बाबूजी बिल। आज ही एप्लीकेशन लगाकर मैं तीन मीटर लगवा देता हूँ। भरो अलग–अलग बिल। **¼fcy ydj pyk tkrk g½**

nknkth % अरे ला बेटा, मैं भर दूँगा। तुम लोग जरा से बिल के पीछे लड़ रहे हो।

Hkou'k % बाबूजी अब सब अलग–अलग बिल ही भरेंगे। **¼Hkou'k**

dk ekckby vkrk g½ आ रहा हूँ, आ रहा हूँ, ऑफिस के लिए ही निकला हूँ। **¼vkfQl d fy, fudy tkrk gA vnj l nknh vkrh g½**

nknkth % मंगलेश की माँ, सुना तूने भुवनेश क्या कह कर गया है?

nknh % नहीं।

nknkth % मैं खुदगर्ज हो गया हूँ। खुदगर्ज...

nknh % ये वो बेटे बोल रहे हैं, जिनके आने के पहले तुमने कभी खाना नहीं खाया।

nknkth % हाँ, ये वो ही बेटे हैं।

nknh % अच्छा, अब जाओ सत्संग में हो आओ। मन में शांति मिलेगी।

nknkth % ला, मेरा बैग उठा दे, लेट तो हो ही गया हूँ, फिर भी चला जाता हूँ। **¼nknh cx mBkdj nrh g½**

nknh % ये लो। **¼nknkth py tkr g½**

¼NBk n';½

(दादी, प्रबोद्धी, पवित्रा, आशा बैठक कक्ष में बैठे हैं। तभी दर्श डेरी मिल्क टॉफी लेकर दौड़ता है, पीछे–पीछे क्षिप्रा है)

n'k % हे नहीं दूँगा, नहीं दूँगा।

f{kik % दादी, ये दर्श टॉफी नहीं दे रहा है, देखो ना!

nknh % दर्श, इधर आओ बेटा।

n'k % मैं नहीं दूँगा दादी, पापा ने मुझे दी है।

f{kik % दादी, पापा ने कहा दोनों आधी–आधी ले लेना।

n'k % इसने कल मुझे लिखने को पेन नहीं दिया था दादी।

f{kik % देखो न दादी, इसे अभी पेन की क्या जरूरत है?

nknh % हाँ बेटा, जब तू बड़ा हो जाएगा तो मैं सुंदर सा पेन दिलाऊँगी तुझे, चल दीदी को टॉफी दे।

n'k % पेन दिलाओगी ना दादी?

nknh % हाँ दिलाऊँगी, दीदी को टॉफी दे।

n'k % ये लो दीदी।

nknh % मेरा लाड़ला बेटा है, आ बैठ जा। **¼flj ij gkFk Qjrh g½** क्षिप्रा बेटा, तू अपनी पढ़ाई कर, जा।

nknh % बच्चे हैं, अच्छा सुना बड़े दिनों में आना हुआ।

vk'kk % मुकुला बहन, चारों धाम की यात्रा पर गई थी।

nknh % अरे तूने मुझे नहीं बताया।

vk'kk % मुकुला बहन, तुमको बताती तो तुम यही कहती कि मेरे बेटे–बहू ही चारों धाम हैं।

nknh % हाँ आशा बहन, ये सुखी रहे, मेरे लिए यही चारों धाम हैं।

vk'kk % और तेरी छोटी बहू को कुछ हुआ क्या?

nknh % नहीं आशा बहन, ये तो रही छोटी बहू।

ifo=k % नमस्ते।

ick)h % आंटी डॉक्टरी इलाज चल रहा है।

vk'kk % अरे डॉक्टरी इलाज से कुछ नहीं होगा, तुम चित्रकूट ले जाओ, वहाँ टाटवाले बाबा जड़ी देते हैं।

nknh % अच्छा आशा बहन हो तो जाएगा ना।

vk'kk % मुकुला बहन कई उम्र पाई औरत की गोद भर गई।

ick)h % यह सब पाखंडी बाबा होते हैं आंटी।

vk'kk % अब बेटा पाँच–छह साल तो हो ही गए। विश्वास तो करना ही पड़ेगा, वरना...

ifo=k % आंटी प्रबोद्धी दीदी और देविका दीदी के बच्चे भी मेरे ही तो बच्चे हैं। **¼nfodk dk izo'k½**

nfodk % पवित्रा, दूसरों के बच्चों को अपना नहीं कहते।

vk'kk % हाँ, सही कह रही है देविका बहू। दूसरे के बच्चे दूसरे के ही होते हैं।

nfodk % और अपने अपने ही होते हैं। बाँझपन का इलाज जल्दी करा दो माँजी, नहीं तो पवित्रा बूढ़ी हो जाएगी।

nknh % **¼xLl s l½** देविका...।

vk'kk % मुकुला बहन, बहू रानी सही कह रही है, उम्र जैसे–जैसे ढलेगी, वैसे–वैसे समस्या बढ़ती जाएगी।

nknh % मैं समझती हूँ आशा बहन।

nfodk % आंटी, सच्चाई नीम की कड़वी पत्ती है। न जाने कैसे पसंद कर ली हमारे ससुरजी ने।

ick)h % जैसे हमें और तुम्हें पसंद किया था देविका।

vk'kk % अच्छा मुकुला बहन, बहू नौकरी से आ गई होगी, मैं चलूँ।

nknh % ठीक है आशा बहन और आना। **¼vk'kk pyh tkrh g½**

¼lkrok n';½

(बिस्तर पर पवित्रा लेटी हुई है। विमलेश आता है और लेट जाता है)

ifo=k % सुनो जी, मैंने पहले भी डॉक्टर से जाँच कराई, मुझमें कमी नहीं है। तुम जाँच क्यों नहीं करा लेते। उम्र के साथ बाद में तकलीफ होगी।

foeys'k % तुझे मुझमें कमी लगती है?

ifo=k % भगवान न करें, लेकिन डॉक्टरी जाँच तो करा ही लो।

foeys'k % डॉक्टरी जाँच कराई और मुझमें कमी निकली तो?

ifo=k % तो मैं पवित्रा हूँ और पवित्र बनकर ही जिंदगी भर तुम्हारी सेवा करूँगी।

foeys'k % पवित्रा तू सचमुच पवित्र है।

ifo=k % तुम्हें भरोसा न हो तो मैं कसम खाती हूँ।

foeys'k % **¼gkBk ij vxyh j[k nrk g½** पवित्रा मैंने छह साल तुमसे छुपाया, लेकिन सच्चाई यह है कि मुझमें ही कमी है।

ifo=k % नहीं, तुममें कमी नहीं हो सकती।

foeys'k % मुझमें ही कमी है पवित्रा।

ifo=k % नहीं मर्द में कमी हो नहीं सकती। मैं और डॉक्टरी जाँच कराऊँगी।

foeys'k % मैंने कहा ना पवित्रा, मुझमें ही कमी है। मैं पहले ही डॉक्टरी जाँच करा चुका हूँ।

ifo=k % इसका मतलब मैं कभी माँ नहीं बन सकती हूँ।

foeys'k % हाँ पवित्रा हाँ, यही सच्चाई है।

¼vkBok¡ n`';½

(दादी बैठक कक्ष में बैठी है, तभी विमलेश का प्रवेश)

nknh % बेटा तेरी तबियत खराब है क्या?

foeys'k % नहीं माँ, रात को पवित्रा को कुछ उल्टियाँ हो गई थीं।

nknh % **¼[kq'k gksdj½** क्या बेटा उल्टियाँ हुईं?

foeys'k % हाँ माँ।

nknh % एक काम कर, डॉक्टर को दिखा ला।

foeys'k % ठीक है माँ, शाम को डॉक्टर को दिखा लाऊँगा।

nknh % नहीं बेटा, अभी दिखा ला।

foeys'k % ठीक है माँ, अभी दिखा लाऊँगा।

nknh % नहीं, नहीं, अभी जा दिखाकर ला।

foeys'k % कहा न माँ, अभी दिखा लाऊँगा।

nknh % तू उठ और जा। मैं अभी पवित्रा को बुलाती हूँ। **¼ifo=k dks vkokt nsrh g½** पवित्रा...पवित्रा। **¼ifo=k vkrh g½**

ifo=k % हाँ माँ।

nknh % रात को उल्टियाँ हुई ना?

ifo=k % हाँ माँ।

nknh % तो जा विमलेश के साथ और डॉक्टर को दिखा आ।

ifo=k % माँजी वो तो ऐसे ही खाने में कुछ आ गया होगा।

nknh % नहीं–नहीं, तू अभी जा। **¼foeys'k l½** विमलेश, ले जा इसे।

foeys'k % ठीक है माँ, चलो पवित्रा।

ifo=k % हम आते हैं माँजी।

nknh % ठीक है बेटा। **¼foeys'k ifo=k dks ysdj pyk tkrk gS] nksuksa ykSVdj vkrs gSa½**

nknh % आ गई बेटा।

ifo=k % हाँ माँजी।

nknh % क्या बताया डॉक्टर ने?

ifo=k % माँजी दो महीने से हूँ।

nknh % क्या बेटा? खुशखबरी है। अरे सुना मंगलेश के बाबूजी, विमलेश भी बाप बनने वाला है। जा–जा बेटी, अब तू ज्यादा काम मत करना। **¼ifo=k pyh tkrh gS½** भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं।

¼ifo=k vkSj foeys'k dejs esa tkrs gSa½

foeys'k % **¼gkFk idMdj½** तू यह बता, तू किसके साथ सोई थी?

ifo=k % मैं किसी के साथ नहीं सोई। यह बच्चा आपका है।

foeys'k % तू झूठ बोल रही है।

ifo=k % मेरी बात मानिए।

foeys'k % जब तुझे मालूम है कि मुझमें कमी है तो बच्चा मेरा कैसे हो सकता है?

ifo=k % यह बच्चा आपका ही है।

foeys'k % तू सच–सच बताती है या फिर...

ifo=k % मैं सच ही कह रही हूँ, यह बच्चा आपका है, आपका है, आपका है।

foeys'k % तू ऐसे नहीं मानेगी। **¼cYV fudkyrk gS vkSj ekjus**

d fy, [kMk gkrk gh g fd cYV nknkth idM yr g½

nknkth % मैंने सब सुन लिया विमलेश। तू जानवर हो गया क्या? बहू को बेल्ट से मारेगा।

foeyr'k % और इससे पूछिए, इसकी कोख में किसका बच्चा पल रहा है?

nknkth % वो लाल पैथोलोजी के डॉक्टर साहब तुझसे मिलना चाहते हैं।

foeyr'k % ठीक है बाबूजी। ¼**vkj MkDVj lkgc l feyu vk tkrk g½**

Mk- yky % ¼**foeyr'k dk n[kdj**½ अरे विमलेश जी आइए, आइए, बैठिए।

foeyr'k % हाँ डॉक्टर साहब, आज अचानक।

Mk- yky % अरे दो महीने पहले तुमने जो जाँच कराई थी ना, वो गड़बड़ हो गई।

foeyr'k % ¼**vk'p;** l½ क्या हुआ डॉक्टर साहब?

Mk- yky % अरे भाई, जल्दबाजी में आपकी रिपोर्ट विमलेश वर्मा के लिफाफे में रखी गई और विमलेश वर्मा की रिपोर्ट आपके लिफाफे में।

foeyr'k % फिर मालूम कैसे चला डॉक्टर?

Mk- yky % अरे, आज ही विमलेश वर्मा मेरे पास रिपोर्ट लेकर आए और कहने लगे डॉ. साहब, मेरी पिछली रिपोर्ट निल है, लेकिन अभी तक कोई प्रोग्रेस नहीं है। मैंने बोला लाओ, आपकी जाँच रिपोर्ट दिखाओ।

foeyr'k % फिर डॉक्टर साहब?

Mk- yky % मैंने लिफाफा लिया और देखा कि ऊपर विमलेश वर्मा लिखा है और अंदर विमलेश अवस्थी की जाँच रिपोर्ट है। तभी मैंने कहा गलती से ऐसा हो गया था। मुझे

माफ करना। कहने लगा ठीक है डॉ. साहब, कम–से–कम गलती जल्दी पकड़ी गई।

foeys'k % डॉ. साहब, अच्छा हुआ गलती जल्दी पकड़ी गई, वरना आज मेरे हाथ गजब हो जाता।

Mk- lkgc % क्यों क्या गजब हो जाता?

foeys'k % आज ही पवित्रा को डॉ. स्वर्णा को दिखाया तो उन्होंने बताया दो महीने से है। तो मैं अपना आपा खो बैठा और पवित्रा पर हाथ उठा लिया।

¼nknkth vkrs gq,½

nknkth % वो तो आप आए थे और मैं इसे बुलाने ऐन वक्त पर पहुँच गया, वरना यह तो आज...

Mk- yky % अरे विमलेश, वो तुम्हारा ही बच्चा है, तुम्हारा ही।

nknh % क्या सच डॉ. साहब?

Mk- yky % हाँ माँजी हाँ।

nknh % ला बेटा, सभी का मुँह मीठा करा। जा ले आ मिठाई।

nknkth % हाँ, हाँ बेटा, नेक काम में कैसी देरी।

foeys'k % अभी लाया बाबूजी। **¼nkSMdj tkrk gS½**

¼uoka n`';½

(दादी, मंगलेश, विमलेश, प्रबोद्धी, पवित्रा बैठे हैं। दादाजी अपना कोट निकालकर पहनते हैं। तभी दौड़ते हुए क्षिप्रा आती है। उसके हाथ में नए कपड़े हैं, उसके पीछे दर्श हाथ में फाइल लेकर मारने का प्रयास करता है)

n'kZ % दादाजी–दादाजी देखिए ना।

f{kizk % नहीं मिलेंगे, नहीं मिलेंगे। **¼nksuks nknkth&nknh dk ,d jkmaM yxk ysrs gSaA n'kZ Qkby Qsaddj f{kizk dks ekjrk gSA Qkby ds dkxt Qsy tkrs gSa½**

nknkth % दोनों रुको। **¼nksuks #d tkrs gSa½** यह फाइल किसकी है?

n'k % पापा की।

nknkth % और ये क्या हो रहा है?

n'k % दादाजी, दीदी मेरे कपड़े नहीं दे रही है।

nknh % तुम दोनों को झगड़ने के अलावा कोई काम है?

nknkth % क्षिप्रा, भैया के कपड़े दो।

f{kik % जी दादाजी। ¼**nknkth Qkby mBkdj n[kr g**½

nknkth % भुवनेश...भुवनेश...

nknh % क्या हुआ?

(भुवनेश दौड़कर आता है, देविका भी आती है)

nknkth % तूने मकान खरीद लिया और मुझे बताने की जरूरत भी नहीं समझी?

nknh % क्या...¼**lHkh vk'p;** e iM tkr g½

exy'k % क्या भुवनेश, तूने मकान खरीद लिया।

ickk)h % भैया, आपने मकान खरीद लिया?

Hkou'k % हाँ तो, इसमें आश्चर्य की क्या बात है? सब मकान खरीदते हैं।

nknkth % तूने हम सबको गैर समझ लिया।

exy'k % तूने तो कमाल ही कर दिया भुवनेश।

Hkou'k % क्यों भैया, जब आपने और बाबूजी ने खेत, ट्रेक्टर और मकान खरीदा तो मुझसे पूछा था क्या?

exy'k % वो बाबूजी ने हम लोगों के लिए ही खरीदे थे।

ickk)h % और वो जगजाहिर थे भैया।

Hkou'k % और ये भी तो जगजाहिर था कि जितनी भी चीज बाबूजी ने खरीदी, केवल और केवल मंगलेश के नाम से।

nfodk % हाँ, तुम्हें तो अनाथालय से पकड़कर लाए थे ना।

foey'k % लेकिन भैया, आप मकान खरीद रहे थे, तो बाबूजी को बताने में हर्ज ही क्या था?

Hkou'k % हर्ज ही हर्ज था विमलेश, क्योंकि हमारे बाबूजी बेईमान हैं। इन्होंने हमारे बारे में कभी नहीं सोचा।

nkuh % क्या बोल रहा है बेटा?

Hkou'k % हाँ माँ, इन्होंने हमारे बारे में कभी नहीं सोचा। इन्हें तो केवल बड़े भैया और भाभी दिखे।

exy'k % भुवनेश, तुमने पढ़ाई–लिखाई सब ऐसे ही कर लिया?

nfodk % भैया, पेट तो कुत्ते भी भरते हैं।

nkuh % ¼Økèk e½ बहू, आगे एक भी शब्द कहा ना तो मुझसे बुरी नहीं होगी।

nkukth % भुवनेश, मैं बेईमान हूँ। मैंने बेईमानी की है, तो बता जरा क्या बेईमानी की है मैंने।

Hkou'k % बाबूजी, बेईमानी की भी हद होती है। खेती से लेकर मकान, यहाँ तक कि बर्तनों तक पर भैया का ही नाम है।

nkukth % बेटा, नाम से लेना बईमानी होती है।

nfodk % बाबूजी, आप उनके नाम से भी तो ले सकते थे?

nkukth % बेटा, मैंने अपने नाम से कुछ नहीं खरीदा।

Hkou'k % इसलिए तो बाबूजी बड़े भैया ने अपने नाम की जमीन बेचकर खा डाली।

nfodk % और बची–खुची चीजें विमलेश ने। वो तो इन्होंने मदद कर दी, आज दुकानें लगाकर बैठे हैं, वरना...

foey'k % वरना क्या भाभी?

nfodk % रोड पर भीख माँगते। तुम्हारे ये लक्षण हैं।

foey'k % ¼fpYykrk g½ भाभी...¼gkFk mBkdj ekju yxrk g] gkFk Hkou'k idM+ yrk g½ काश! तुम भाभी न होती।

Hkou'k % और तुम मेरे भाई न होते।

exy'k % बाबूजी, आज इसी वक्त इस मकान के तीन हिस्से कर दीजिए। क्योंकि अब पानी गले से ऊपर हो गया है।

Hkou'k % हाँ, हाँ, कर दीजिए बाबूजी। अब हद हो गई है।

foey'k % हाँ बाबूजी, अब एक मिनिट की देरी करना अच्छा नहीं।

nknkth % तो लाओ कुल्हाड़ी, कर लो मेरे तीन हिस्से। काट डालो मुझे और ले लो बराबर—बराबर तीन हिस्से।

nknh % इसी दिन के लिए तुम्हें पैदा किया था बेटा हमने, इसी दिन के लिए...।

¼nlok n';½

(दादाजी के सामने भोजन की थाली है, दादी पानी लाकर...)

nknh % लो भोजन कर लो। **¼nknkth dN ugh ckyr½** मैं समझती हूँ, बेटों के बिना कैसे निवाला गले से उतरेगा। कभी उनके बिना खाना नहीं खाया।

nknkth % **¼flj fgykdj½** हाँ, पर वो इतने पत्थर दिल होंगे, मैंने कभी नहीं सोचा था।

nknh % अब छोड़ो बीती बातें। लो खाना खा लो। मैं अपने हाथों से खिला देती हूँ।

nknkth % भूख नहीं है मंगलेश की माँ।

nknh % अच्छा, रोज तो शाम को 7 बजे खा लेते थे। 9 बजने वाले हैं, खा लो।

nknkth % कहा ना मंगलेश की माँ, मुझे भूख नहीं है, तू खा ले।

nknh % मुझे भी भूख नहीं है।

nknkth % अच्छा, तुझे बिना खाए नींद आ जाएगी?

nknh % जब तुम्हें आ सकती है, तो मुझे क्यों नहीं?

nknkth % अच्छा लो मैं तुझे अपने हाथों से खिलाता हूँ।

nknh % नहीं, पहले तुम मेरे हाथों से खाओ।

nknkth % अच्छा ठीक है, तू नहीं मानती तो खिला दे। **¼nknh ,d fuokyk rkMdj eg rd ykrh g vkj V;c ykbV e [kjkch d dkj.k og cn gk tkrh g½**

nknh % लो लाइट को भी अभी जाना था।

nknkth % लेकिन उधर तो जल रही है।

nknh % ये ट्युब लाइट दो–तीन दिन से परेशान कर रही है।

nknkth % क्या हुआ इसको?

nknh % चोक खराब हो गया। लो अभी ठीक कर देती हूँ। **¼nknh LVwy mBkdj V~;wc ykbV dk pkd dks idMrh gS vkSj fpYykrh gS½** आ...आ...आ...। **¼nknh èkMke ls uhps fxj tkrh gS] flj ls [kwu cgus yxrk gS] nknh csgks'k gks tkrh gSA nknkth nkSMdj tkrs gS½**

nknkth % क्या हुआ मंगलेश की माँ, मंगलेश की माँ...। **¼nknh dqN ugha cksyrh½** मंगलेश की माँ मंगलेश की माँ, बोलो ना मंलगेश की माँ। **¼nknh dqN ugha cksyrhA flj ij gkFk yxkrs gS½** अरे ये खून। मंगलेश, भुवनेश, विमलेश, देख ना तुम्हारी माँ को क्या हुआ? **¼lHkh ykx nkSMdj vkrs gS½**

exys'k % क्या हुआ बाबूजी? **¼nkSMdj eka ds ikl igqp tkrk gS½** माँ...माँ...

Hkqous'k % माँ...माँ...

foeys'k % अरे यहाँ लाइट को क्या हुआ?

exys'k % चलो–चलो, पकड़ो माँ को उस रूम में ले चलो। **¼rhuks cPps idMdj nwljs :e esa ys tkrs gS½**

ick)h % मैं पानी लेकर आई।

exys'k % हाँ, हाँ, जल्दी लेकर आ।

ick)h % अभी लाई।

exys'k % अरे भुवनेश, डॉ. लाल को फोन लगा।

Hkqous'k % जी भैया। **¼ekckby fudkydj½** डॉ. लाल, माँ को कुछ हो गया है, आप जल्दी आइए। जी, जी, हाँ,

जल्दी आ जाइए घर पर। ¼ikuh ydj ick)h vkrh g½

ick)h % ¼exys'k dk fxykl nsrs g,½ ये लीजिए पानी।

exys'k % हाँ ला। ¼ikuh ydj eqg ij nks&rhu ckj fNMdrk g½ माँ...माँ...।

nknh % बेटा...।

exys'k % हाँ माँ हाँ।

nknh % भुवनेश कहाँ है?

exys'k % ये रहा माँ, हम तीनों तेरे पास हैं माँ।

nknh % ¼rhuks dk ns[krh g½ बेटा तुम खुश हो।

exys'k] Hkqous'k]

foeys'k % ¼rhuks feydj cksyrs g½ हाँ माँ हाँ।

nknh % और बहुएँ?

ick)h] nsfodk vkSj

ifo=k % हाँ माँजी।

nknh : बेटा, घर–संपत्ति के तीन हिस्से कर लिए, कोई बात नहीं, पर बाबूजी का दिल एक ही है।

exys'k % माँ, नहीं माँ।

nknh % बोहोत भोले हैं। बेटा, मेरे तीन हिस्से कर लो पर...।

Hkqous'k % नहीं माँ नहीं।

nknh % हाँ भुवनेश। ¼fQj vVd&vVd dj cksyrh g½ तुम्हारे बिना जी...¼vkSj ik.k R;kx nsrh g½

Hkqous'k % माँ...। ¼fQj eq dh lhus ij lj j[k nsrk gSA lc ykx jksus yxrs g½

exys'k % माँ ¼jksrs g,½ तू हमें छोड़कर चली गई।

nknkth % ¼vkdj vk[ks cn djrs g½ तू भी मझधार में छोड़कर चली गई। बेटा, तेरी माँ को पलंग से नीचे कर दो। ¼rhuks cVs eq dk iyx ls uhps djrs g½

n'k % **¼nknkth d# ikl tkdj½** दादाजी, दादाजी, दादी को क्या हुआ?

nknkth % बेटा, तुम्हारी दादी भगवान के घर गई। **¼rhuk cg,¡ jkr# g\, nknh d# ikl cB tkrh g\½**

nfodk % **¼jkr# g\,½** माँजी, हमें नहीं चाहिए तीन हिस्से। उठो ना माँजी उठो। **¼'kjhj idMdj½A**

ekfydk % **¼jkr# g\,½** उठो ना दादी, उठो। मैं तुम्हें एरोप्लेन में घुमाऊँगी। उठो ना दादी।

f{kik % **¼jkr# g\,½** हाँ दादी, उठो ना। मेरे बर्थ डे अब कौन मनाएगा? **¼nknkth ,d fdukj# [kM# g\] Hkou'k nknkth d# ikl tkdj½**

Hkou'k % बाबूजी, ये सब मेरे ही कारण हुआ है।

nknkth % नहीं बेटा, ऊपर वाले के सब काम निश्चित हैं।

Hkou'k % बाबूजी, मुझे नहीं चाहिए तीन हिस्से।

nknkth % क्यों बेटा?

Hkou'k % बाबूजी, जिन हिस्सों की वजह से माँ–बाप छिन जाएँ, वो हिस्से हमें कितनी खुशी दे सकेंगे?

exy'k % **¼nknkth d# ikl vkdj½** अब हम आपको नहीं खोना चाहते बाबूजी।

foey'k % हाँ, नहीं चाहिए हमें तीन हिस्से, नहीं चाहिए बाबूजी।

ick)h % बाबूजी, घर–संपत्ति माँ–बाप से बढ़कर नहीं।

nfodk % हाँ बाबूजी, अब तीन हिस्से नहीं, एक ही हिस्सा होगा, वो भी आपका।

¼ink fxjrk g\½

संदेश

◈ **euh"k lkuh**
रेड रोज स्कूल
लंबाखेड़ा, बरसिया रोड, भोपाल, मध्य प्रदेश

पात्र-परिचय

jkef[kykou	%	बुड्ढ़ा
x.kir	%	पहला बंदर
ify l oky	%	दूसरा बंदर

¼igyk n'";½

(मंच पर बीचोंबीच अशोक स्तंभ खड़ा हुआ है। ऊँचाई 10 फिट या अधिक, अशोक स्तंभ के सामने तीन किरदार गांधी जी के तीन बंदरों के रूप में बैठे हैं)

cd&xkmM lkmM % नमस्कार साथियो, भारतीय संविधान की रक्षा और अजेय–अखंड भारत के प्रतीक चिह्न अशोक स्तंभ के मान को, सम्मान को सुरक्षित रखने के लिए हमें गांधी जी के तीन बंदरों के द्वारा दिए जा रहे संदेशात्मक संकेतों को समझना है और उन पर अमल करना है। ये तीन बंदर संकेतों के माध्यम से क्या संदेश देना चाहते हैं, आइए हम सब देखते हैं, हमारे नाटक संदेश में।

igyk cnj % भारत देश संपूर्ण सद्भावना का देश है। विभिन्न समुदाय, विभिन्न संस्कृति, विभिन्न भाषा–भाषी लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। ऐसी बातें जो हमारे सद्भावना पूर्ण माहौल को क्षति पहुँचाएँ, हमारी एकता, हमारी अखंडता को खंडित करने की कोशिश करें, हमें उनसे दूर रहना है। मतलब गलत बात सुनने से पहले कान बंद, बुरा मत सुनो, **¼gkFk l dku cn djd cB tkrk g½A**

nljk cnj % मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मतलब हम एक सभ्य समाज में रहते हैं जहाँ पर अनैतिक बातों के लिए कोई स्थान नहीं है। ऐसी कोई भी बात जो समाज के लिए, राष्ट्र के लिए नीतिगत नहीं है, मतलब अनैतिक है, उस बात को बोलने से पहले मुँह बंद, बुरा मत बोलो **¼gkFk l eqg cn djd cB tkrk g½A**

rhljk cnj % कहते हैं तन–मन स्वस्थ तो सारा जहाँ हमारा। तन–मन को स्वस्थ रखने के लिए हमें हर तरह के व्यसन से दूर रहना है। व्यसन यानी नशा जो हमें खोखला कर देता है। मतलब हमें नशे से दूर रहने के लिए नशे की तरफ देखना भी नहीं है, बुरा मत देखो। **¼vk[kk dk gkFk l cn djd cB tkrk gA rhuk cnj viuh&viuh txg ij cB gA èkhj&èkhj ykbV vkQ gksrh g---½A**

¼nljk n';½

(मंच पर लाइट ऑन होती है, बींग्स से एक बूढ़ा आदमी एक बड़े से बोरे को घसीटता हुआ आ रहा है, हाँफता हुआ आकर अशोक स्तंभ

के पास बैठ जाता है। दोनों तरफ से कुछ गस्ती दल के पुलिसवाले आते हैं, एक–दूसरे से बात करने लगते हैं)

,d iqfyloky % **¼MMk ckt e nckdj tnk eyr g,½** और रामखिलावन मिलो कुछ सुराग...

jkef[kykou % **¼MMk fn[kkdj½** बाबा जी को ठुल्लू मिलो।

rhljk iqfyloky % क्यों गनपत हमने तो पहले ही बोल दिया था कि झूठी खबर है। किसी ने ऐसे ही परेशान करने को बोला है और हम पुलिसवाले ठहरे लल्लू जो उठा के डंडा आतंकवादी को ढूँढ़ने निकल पड़े।

xuir % तुमने बोला था तो हमें याद क्यों नहीं आ रही?

¼lHkh gqlr gA rHkh ok c<k v'kkd LrHk l vkx c<u dk gkrk g rk iqfyl okyk dh utj ml ij iM tkrh g] rth l mldh rjQ c<dj½

xuir % ये रुक...क्या है तेरे बोर में?

¼cM<k pqipki mudk n[krk jgrk g½

jkef[kykou % बोल न बे क्या लेकर जा रहा है इस बोरे में?

igyk iqfyloky % जल्दी से बक दे नहीं तो मार–मार के ये डंडा तोड़ देंगे झई...

rhljk iqfyloky % समझे...

cM<k % **¼b'kkj l ikl cykdj½** बम बनाने का सामान...

lHkh % **¼,d lkFk½** क्या? **¼lc ihN gV tkr g½**

cM<k % देखना चाहते हो?

lHkh % **¼Mjr g,½** नहीं...

cM<k % देख लो तुम्हें कुछ नहीं होगा।

rhljk iqfyloky % और अगर हो गया तो...गनपत हमने पहले ही कहा था हमें आज छुट्टी ले लेन देओ। अब लगत है जीवन से ही छुट्टी होने वाली है।

xuir % ¼lkpr g,½ ऐसा कहा था क्या?

rhljk ifyokyk% अरे मजाक छोड़ो और बम निरोधक दस्ते को फोन लगाओ।

jkef[kykou % हाँ–हाँ...

cM<k % रुको...तुम्हारे दस्ते के आने से पहले हम ही दिखा देते हैं...

rhljk ifyokyk% हमें नहीं देखना...प्लीज।

igyk ifyokyk % लगता है शहीद होने का टाइम आ गया। **¼rc rd cM<k ckj dk iyV nrk gA ckj l fudy g, dpj dk n[kdj lc glu yxr g½**

xuir % क्या है ये?

cM<k % **¼ikxyk dh rjg gjdr djr g,½** देखों मैं दिखाता हूँ क्या है ये सब? **¼dN QVh&ijkuh fdrkc mBkdj½** ये देखो ये किताबें जो हमें एक–दूसरे के धर्म के खिलाफ भड़काती हैं। ये पर्चे जो भाषा के नाम पर, क्षेत्रवाद के नाम पर, समुदायों के नाम पर आग लगाते हैं। हमारी सद्भावना को तार–तार कर देते हैं। ये विस्फोटक नहीं है क्या? ये उन लोगों के भाषण की सीडियाँ जो अलगाववाद फैलाते हैं। हमारे शांतिप्रिय देश के माहौल को गंदा करते हैं। ये बारूद से कम हैं क्या? बताओ। रुको एक मिनिट और भी बहुत कुछ है इसमें बम बनाने के लिए **¼dN <<r g,½** हाँ ये देखो ये गंदी–गंदी किताबें जो युवाओं की भावनाओं को भड़काकर अनैतिक काम करने के लिए उकसाती हैं...**¼,d xnh lh Qkby mBkdj½** और हाँ, ये उन लोगों

की केस हिस्ट्री है जिन्होंने चोरी, रेप, जैसी अनेक खतरनाक वारदातों को अंजाम दिया है। समाज में विभिन्न अनैतिक काम करने वाले लोग किसी बारूदी जगह का रूप नहीं हैं क्या? बोलो, चुप क्यों हो तुम लोग?

rhljk ifylokyk% ¼eg fcndkr g,½ पागल कहीं का...

cM<k % ¼fpYykdj vk[k rjjr g,½ कहीं का नहीं तुम्हारे ही देश का, तुम्हारे अपने मुल्क हिंदुस्तान का...अभी मेरी बात पूरी नहीं हुई है। अभी तो वो विस्फोटक पुटास दिखाना बाकी है, जिसे इंसान अपने लहू में, खून में मिलाने को लालायित रहता है और खत्म कर लेता है अपने परिवार के सुकून को, घर की इज्जत को, अपने आपको **¼u'k d ifdV fn[kkr g,½** ये देखो, जिसे एक बार अपनाने के बाद इंसान इसके अलावा किसी का भी नहीं रह जाता। नशा जो सौ गुनाहों का एक अकेला कारण होता है। नशा दुनिया के सबसे बड़े बम का भी बाप है...क्या बाप...**¼glu yxrk g½** बाप! हाँ...हाँ...हाँ बाप! लोग बेटे से यानी बम से डरते हैं और बाप को गले लगाते हैं, जिसने पूरे समाज को बर्बाद कर दिया है। सब कुछ देखते हुए भी पागल लोग नशे की लत से नहीं बच पाते ...हाँ–हाँ–हाँ, पागल लोग. ..पागल लोग...पागल... काश! जो लोग मुझे पागल समझ रहे हैं वे अपने अंदर के पागल को समझ लें और इस बम बनाने के सामान से दूरी बना लें।

lHkh ifylokys % अब भी न समझो तो हम का बोले, नमस्कार।

¼ink fxjrk g½

निराश न हो मन

◈ **e|t| cD'kh**
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल
अशोक विहार, फेज–4, दिल्ली

पात्र-परिचय

l=èkkj] cl d| ;k=h] nhnh] M'kboj]
l|èkk] d|MDVj] nknh ¼vEek½]
b|lkbl ;k=h] cg| vkj ef|Lye ;k=h

¼igyk n'`;½

(स्टेज पर मध्यम रोशनी है। धीरे–धीरे रोशनी बढ़ती जाती है। फिर प्रकट होता है सूत्रधार)

l=èkkj % आज जीवन मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था डगमगाने लगी है परंतु फिर भी क्या हताश होना उचित है? नहीं यह सही नहीं है। आज भी संयम, सेवा, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं जो निराशा और अंधकार के मध्य प्रकाश की ज्योति प्रज्ज्वलित करते हैं और इन्हीं मूल्यों पर आधारित है हमारी नाटिका–मेरे मन निराश न हो।

l|èkk % गुड मॉर्निंग दीदी।

nhnh % अरे सुधा उठ गई!

lèkk % हाँ दीदी।

nhnh % ये ले अखबार पढ़ ले, मैं तेरे लिए चाय लाती हूँ।

lèkk % क्या पढ़ूँ, सुबह–सुबह अखबार पढ़कर तो मेरा मन ही बैठ जाता है।

nhnh % हाँ ये तो है, इसलिए तो मैं अखबार पढ़ती ही नहीं।

lèkk % वही ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी, भ्रष्टाचार से सारा समाचार–पत्र इसी से भरा पड़ा है।

nhnh % आरोप–प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है देश में कोई ईमानदार व्यक्ति रह ही नहीं गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। क्या यही वह भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक व गांधी ने देखा था। रवींद्रनाथ ठाकुर का, मदनमोहन मालवीय का महान व सभ्य भारत किस गहवर में डूब गया है। भारत जो आदर्शों के लिए विश्व–प्रसिद्ध था, क्या उसका महामानव समुद्र सूख गया है।

चलो छोड़ो, इन सब बातों को आज तो तुम्हें अलीगढ़ जाना है। कल तुम्हारा वहाँ इंटरव्यू जो है।

lèkk % हाँ दीदी, मैं शाम को समय से आ जाऊँगी, फिर हम अलीगढ़ चलेंगे, बस तुम मुन्नी को तैयार कर लेना।

nhnh % हाँ ठीक है।

lèkk % चलो ठीक है दीदी, अब मैं ऑफिस के लिए निकलती हूँ।

¼nljk n`';½

nhnh % अरे आठ बज गए हैं, इतनी देर हो गई, सुधा अभी तक नहीं आई।

l|èkk % दीदी, मुझे आने में थोड़ी देर हो गई।

nhnh % आज तो समय से आ जाती। पता है ना हमें अभी अलीगढ़ के लिए निकलना है। कितनी देर हो गई है। अब हम कैसे जाएँगे।

l|èkk % दीदी आज ऑफिस में बहुत काम था और बॉस ने आने भी नहीं दिया। चलो अब हम अलीगढ़ के लिए निकलते हैं।

nhnh % चलो ठीक है मैं मुन्नी को लेकर आती हूँ।

¼rhljk n`';½

(बस अड्डे का दृश्य, लोग अपनी–अपनी बसों को पकड़ने के लिए इधर–उधर आ–जा रहे हैं)

l|èkk % ड्राइवर भइया, क्या यह बस अलीगढ़ जाएगी।

Mªkboj % हाँ ये बस अलीगढ़ जाएगी।

nhnh % अरे भाई, ये बस कितने बजे तक अलीगढ़ पहुँच जाएगी।

Mªkboj % ग्यारह बजे तक पहुँच जाएगी।

l|èkk % दीदी, मैंने अलीगढ़ चाचाजी को फोन करके बता दिया है कि हमें आने में थोड़ी देर हो जाएगी पर मैं इंटरव्यू के लिए समय से पहुँच जाऊँगी।

nhnh % हाँ देर तो हो ही जाएगी। बस सब ठीक–ठाक पहुँच जाएँ। आजकल माहौल ठीक नहीं है, बस यही डर है।

l|èkk % तुम चिंता मत करो दीदी, सब ठीक ही होगा।

nknh ¼vEek½ % बस की यात्री–अरे चिंता काहे न करे, चिंता की ही तो बात है, आजकल का जमाना...छी...छी...छी।

lièkk % अम्मा, तुम चिंता न करो सब ठीक ही होगा।

nknh ¼vEek½ % अरे गुइयाँ चिंता न करूँ, आजकल का जमाना कितना खराब है पता है तुझे।

lièkk % जैसी जिसकी सोच।

nhnh % अरे सुधा बड़ों से ऐसे नहीं बोलते।

lièkk % सोरी अम्मा।

nknh % सोरी अम्मा–अंग्रेज चले गए पर ये सोरी छोड़ गए–कुछ भी बोलो फिर बोल दो सोरी बस खत्म।

¼cl e: >Vdk yxrk g½

nknh ¼vEek½ % अरे ये झटका कैसा? एक तो ये कमर का दर्द और ऊपर से ये झटका। अरे, ड्राइवर ठीक से बस ना चला सके।

¼fQj >Vdk yxrk g½

nknh ¼vEek½ % अरे ड्राइवर के बात है। बस ठीक से ना चला सके। झटके पे झटका दिए जा रहा है।

lièkk % अरे भाई थोड़े आराम से बस चलाओ।

¼fQj >Vdk vkj cl #d tkrh gA½

nknh ¼vEek½ % अरे पहले तो झटके पे झटका दिए जा रहा था और इब ऐसा झटका दिया कि थारी बस ही ना चल री।

M+kboj % अम्मा लगता है कि बस में कुछ खराबी आ गई है।

nhnh % क्या, बस खराब हो गई है।

M+kboj % हाँ, लगता है बस खराब हो गई है, ठीक करनी पड़ेगी।

nknh ¼vEek½ % क्या बस खराब हो गई है–चल जा नीचे उतर और देख।

M+kboj % जाता हूँ अम्मा।

l|èkk % अरे कंडक्टर भइया, जरा तुम भी साथ में चले जाओ और उनकी मदद कर दो।

dMDVj % जाता हूँ।

;k=h&1 % अरे चलो–चलो हम भी उतरकर देखते हैं। अरे भइया क्या हो गया।

Mkboj % बस खराब हो गई, ठीक करने में थोड़ा समय लगेगा।

;k=h&2 % जगह भी सुनसान है। कोई आता–जाता भी दिखाई नहीं दे रहा।

;k=h&3 % ग्यारह बज गए हैं, सर्दी का समय है, कोई बाहर भी नहीं है।

nknh ¼vEek½ % अरे क्या हो गया है? कोई मुझे भी तो बताओ।

;k=h&1 % अम्मा, बस खराब हो गई है। पता नहीं कितनी देर में ठीक होगी।

nknh ¼vEek½ % अरे भाई क्या समय हो गया है?

;k=h&2 % अम्मा ग्यारह बज गए हैं।

nknh ¼vEek½ % क्या ग्यारह बज गए हैं **¼cgq l½** मरी कुछ लाई है खाने के लिए। पता है ना ग्यारह बज गए हैं, मेरा दवाई का टेम हो गया है।

cgq % देखती हूँ अम्मा।

nknh ¼vEek½ % देखती हूँ अम्मा, पता नहीं कितनी देर लगाएगी। देखने में आधा घंटा लगाएगी। सारा दिन बस फैसन में ध्यान रहता है इसका तो।

cgq % अम्मा खाना तो घर पर ही छूट गया।

nknh ¼vEek½ % क्या खाना घर पर ही छोड़ आई, मुई मुझे मारना चाहती है। जानबूझकर खाना नहीं लाई। सारा दिन बस फैसन करवा लो इससे। मुई अब मैं दवाई कैसे खाऊँगी।

cgw % सोरी अम्मा।

nknh ¼vEek½ % सोरी अम्मा की बच्ची अब मैं दवाई कैसे खाऊँ, तू तो मुझे बस मारना चाहती है।

efLye ;k=h % अम्मा मेरे पास कुछ खाना और पानी है आप इसे ले लो।

nknh ¼vEek½ % अरे मैं न लेती।

nhnh % अम्मा ठीक कह रही हो, मत लेना मत लेना।

nknh ¼vEek½ % हाँ–हाँ मैं न लूँगी–वैसे भी दूसरे धर्म का है मेरा क्या धर्म भ्रष्ट करवाएगी।

efLye ;k=h % अरे अम्मा ले लो, आप भी तो मेरी अम्मा जैसी हो।

nknh ¼vEek½ % अरे मैं न लेती और मैं तो सिर्फ अपने पोते–पोती की ही अम्मा हूँ और थारी तो बिलकुल भी ना, मैं ना लेती।

cgw % अम्मा ले लो, आपको दवाई भी तो खानी है। नहीं तो आपकी तबियत खराब हो जाएगी।

lèkk % अरे अम्मा ले लो, ये धर्म–वर्म कुछ नहीं होता।

lc ;k=h

,d lkFk % ले लो अम्मा ले लो।

nknh ¼vEek½ % अच्छा दे अगर दवाई न खानी होती तो तेरा तो कतई न खाती।

¼pkFkk n'; ½

;k=h % अरे भाई कंडक्टर भाई–कहाँ जा रहा है–जब बस चलेगी ही नहीं तो?

nlj k ;k=h % अरे ये तो बस के पीछे जा रहा है। पता नहीं कहाँ जा रहा है।

igyk ;k=h % ये तो बस के ऊपर चढ़ रहा है।

nljk ;k=h % अरे ये तो साइकिल लेकर कहीं जा रहा है।

nknh ¼vEek½ % अरे भाई मुझे भी तो बताओ क्या हो रहा है, कौन कहाँ जा रहा है?

igyk ;k=h % अम्मा ये कंडक्टर साइकिल लेकर कहीं जा रहा है।

nknh ¼vEek½ % क्या कहा, कंडक्टर कहीं जा रहा है—अरे ये कहीं हमें धोखा तो नहीं दे रहा है। अरे, यहाँ डकैती होती रहती है। दो दिन पहले ही यहाँ एक बस को लूट लिया गया था।

igyk ;k=h % क्या बस को लूट लिया गया था!

nknh ¼vEek½ % हाँ बेटा, हाँ बस को लूट लिया गया था।

nljk ;k=h % चलो—चलो ड्राइवर को घेर लेते हैं। अगर कुछ गड़बड़ हुई तो सबसे पहले ड्राइवर को मार देंगे।

Mkboj % मैंने कुछ नहीं किया साहब, मैं तो बस को ठीक करने का उपाय ढूँढ़ रहा था।

;k=h & 3 % अरे भाई ड्राइवर को मत मारो।

nljk ;k=h % अरे इसकी बात मत सुनो, ये ड्राइवर हमें धोखा दे रहा है। कंडक्टर तो पहले ही कहाँ चला गया है। कहीं डाकुओं को बुलाने तो नहीं गया है।

rhljk ;k=h % ड्राइवर को घेर लो—कुछ गड़बड़ हुई तो पहले इसे ही मार देंगे।

¼ikpok n';½

nhnh % मुन्नी चुप ही नहीं हो रही। रोती ही जा रही है। लगता है इसे प्यास लग रही है।

lqèkk % दीदी रुको, मैं पास के गाँव से मुन्नी के लिए कुछ खाने—पीने के लिए ले आती हूँ।

nhnh % नहीं–नहीं, तू कहीं मत जा, वैसे भी इतनी रात हो गई है और कोई आता–जाता भी नहीं दिखाई दे रहा है। चारों तरफ सुनसान है।

igyk ;k=h % इस समय कौन मदद करेगा।

nl jk ;k=h % हे भगवान! क्या होगा कैसे होगा।

l|èkk % दीदी रुको, मैं देखती हूँ, कोई तो मदद करेगा।

bl kbl ;k=h % सिस्टर मेरी बोतल में थोड़ा पानी है, आप इसे ले लें। शायद पानी पीकर चाइल्ड को थोड़ा आराम मिले।

nhnh % नहीं–नहीं भाई साहब हमें नहीं चाहिए।

l|èkk % ले लो दीदी।

nhnh % अरे! तू समझती नहीं है दूसरे धर्म का है।

bl kbl ;k=h % अरे सिस्टर, धर्म के नाते ना सही इंसानियत के नाते ही ले लो।

nhnh % अरे भइया नहीं–कहा ना मुझे नहीं चाहिए।

l|èkk % लाओ भइया, मुझे दे दो।

nknh ¼vEek½ % अरी ले ले, मेरा तो धर्म भ्रष्ट कर दिया है अब तू भी कर ले।

igyk ;k=h % अरे, देखो–देखो वहाँ से एक बस आ रही है और इसमें तो हमारी बस का कंडक्टर भी बैठा हुआ है। अरे! अरे! कंडक्टर भाई कहाँ गए थे?

dMDVj % अड्डे से नई बस लेने गया था। आप सब इसमें बैठिए। ये बस तो चलने लायक नहीं थी, इसलिए मैं अड्डे से नई बस लेकर आया हूँ।

dMDVj % **¼nhnh dk½** ये लो बहन जी, मुन्नी के लिए दूध–बिस्कुट लाया हूँ। मुन्नी का रोना मुझसे देखा ना गया। मुझे रास्ते में जो भी मिला मैं मुन्नी के लिए ले आया।

nhnh % धन्यवाद भाई साहब।

l|èkk % देखो दीदी, कंडक्टर कितना अच्छा है। बस के सभी यात्री कितने अच्छे हैं। एक—दूसरे की कितनी मदद कर रहे हैं। देखा अम्मा, सभी लोग एक समान नहीं होते, आप तो ऐसे ही डर रही थीं।

lHkh ;k=h % कंडक्टर भाई...ड्राइवर भाई हमें माफ कर दो। हमने आपको गलत समझा।

nknh ¼vEek½ % मैं तो इसे रावण समझ बैठी थी पर ये तो राम निकला।

l|èkk % देखा अम्मा, सब लोग खराब नहीं होते।

nknh ¼vEek½ % हाँ बेटा हाँ, आज मैंने बहुत कुछ सीख लिया कि ये धर्म—वर्म कुछ नहीं होता और दुनिया अच्छे लोगों पर ही टिकी हुई है। कुछ बुरे लोगों के कारण सबको दोष देना व गलत समझना सही नहीं है। चल तू ही मुझे दूसरी बस में ले चल। वो मेरी बहू कलमुही तो पता नहीं कहाँ मर गई है। बस फैसन में लगी होगी सारा दिन बस फैसन ही करवा लो, मेरी तो उसे चिंता ही नहीं है। चल मुझे दूसरी बस में ले चल—चल बेटा चल।

l=èkkj % तो देखा आपने। अब आप ही बताएँ, आप कैसे कहेंगे कि मनुष्यता समाप्त हो गई है। कैसे कहेंगे कि लोगों में दया—माया नहीं रह गई है। जीवन में न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन्हें हम भूल नहीं सकते। कई बार ठगे भी गए हैं, धोखा भी खाया है पर अगर हम केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखेंगे जिनमें धोखा खाया है तो

जीवन और कष्टकर हो जाएगा। क्योंकि जीवन में ऐसी घटनाएँ भी कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है। निराश मन को ढाढस भी दिया है और हिम्मत भी बधाई है।

कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की है कि अगर संसार में केवल नुकसान ही उठाना पढ़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो–मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ। मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं, तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है। बनी रहेगी। मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है। निराश होने की कतई जरूरत नहीं है।

¼ink fxjrk g½

नव प्रभात

◈ **fouhr dekj mikè;k;**
दयावती मोदी अकादमी
मोदीपुरम, उत्तर प्रदेश

पात्र-परिचय

lLdkj] ufrdrk] ekuork
eY;] ,d vke vkneh

¼igyk n'';½

¼l=èkkj dk izo'k½

l=èkkj % नमस्कार, स्वागत है आप सभी का। संचालक हूँ मैं इस नाटक का, परंतु क्या वास्तव में मैं ही संचालक हूँ? नहीं, मैं तो हूँ माध्यम, संचालक तो हैं परमपिता, जिन्होंने रची संपूर्ण सृष्टि और सुंदर मानव, जो हँसता है, रोता है, आनंदित होता है तो दुखी भी होता है। एक ओर जहाँ शांत भाव से बुद्ध बनता है तो वहीं दूसरी ओर विचारों की क्रोधाग्नि से आतंकी बन भय और घृणा भी उत्पन्न करता है। आज मैं आपके हृदय में उत्पन्न भावों को टटोलने आया हूँ। कब खुलकर हँसे थे पिछली बार? कब पिघला हृदय तुम्हारा, पीड़ा किसी की देखकर? कब शांत हुआ मन जीवन की वेदनाओं के बीच? कब बरसा वात्सल्य, संतानों के बीच तुम्हारा? कहाँ गई करुणा तुम्हारी? क्यों बनी वीरता आतंक की परिभाषा?कहाँ

विलुप्त हो गई नैतिकता व संस्कार तुम्हारे?क्या आयु व अहंकार बने बाधा तुम्हारी? सब कुछ पाकर भी किसकी कमी महसूस करते हो तुम? जी हाँ, आज का विषय है नैतिकता। जिसे आगे बढ़ाएँगे मेरे सूत्रधार संस्कार, नैतिकता, मानवता और मूल्य। ये सभी पात्र मानव रूप में दिखाए जाएँगे।

¼lLdkj vkj ufrdrk dk LVt ij io'k½

lLdkj % हाँ तो नैतिकता, तुमसे पूछ रहा था कि कहाँ रही इतने बरसों? दिखाई ही नहीं दी।

ufrdrk % संस्कार! यदि यही प्रश्न मैं आपसे करूँ तो कोई उत्तर होगा आपके पास?

lLdkj % ठीक कहा! मैं, संस्कार और नैतिकता तो जीवन के मूल मंत्र हैं, आधार हैं।

ufrdrk % हम दोनों कुछ वर्षों पहले, हर व्यक्ति के बसते थे शरीर में, आत्मा में।

lLdkj % पता नहीं, कब और क्यों लुप्त हो गए मानव जीवन से। विश्वास करो संस्कार व नैतिकता ही प्रत्येक विचार और व्यवहार के जन्मदाता हैं।

ufrdrk % मैं और मेरा मित्र संस्कार हर पल कड़ी के समान जुड़े रहते हैं, जहाँ मैंने प्रवेश किया और संस्कार विकसित होने लगे...(इधर–उधर देखकर) परंतु...ये मानवता और मूल्य कहाँ रह गए?

¼nljk n';½

¼ekuork vkj eY; dk LVt d nljh vkj l io'k½

(संस्कार व नैतिकता उनको आश्चर्य से देखते हैं तथा मानवता और मूल्य चिंतित भाव से आपस में बातें करते हुए प्रवेश करते हैं)

ufrdrk % ये मानवता और मूल्य इतने चिंतित और व्याकुल क्यों दिखाई दे रहे हैं?

lLdkj % **¼ekuork o eY; l½** हम लोग आप दोनों को ही याद कर रहे थे, क्या हुआ, मूल्य, क्या कारण है तुम्हारी व्याकुलता का और तुम मानवता! अरे तुम तो बहुत क्षीण प्रतीत हो रही हो, क्या हुआ है, कुछ तो बोलिए।

ekuork % नैतिकता! तुम तो भली–भाँति जानती हो कि मैं मानवता और मूल्य, दोनों ही सकारात्मक रूप में, प्रत्येक मानव की आत्मा में बसते हैं।

eY; % और हमारे द्वारा प्रेरित सकारात्मक शक्तियाँ, हर इच्छा, हर स्वप्न, हर ख्वाहिश को आकार देती हैं। उत्तर देती हैं हर समस्या और रुकावटों का, साहस देती हैं आसमानों की उड़ान का।

ekuork % परंतु दुःख है कि आज व्यक्ति और समाज में ये सकारात्मक शक्तियाँ क्षीण होती जा रही हैं। **¼Jkrkvk l iNrh g½** बोलिए, कहाँ गई गर्मजोशी तुम्हारी? कहाँ खो गए सद्‌गुण तुम्हारे? क्यों बर्फानी हुआ उबलता रक्त तुम्हारा, बोलो?

eY; % और इसीलिए हम उपेक्षित तथा क्षीण होते जा रहे हैं।

lLdkj % आप दोनों सही कह रहे हो, आज तो बस चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा है और नकारात्मक पिशाची काया, मानो बस चुकी है, प्रत्येक मानव में **¼Jkrkvk l iNrk g½** बोलो–किसने घोला है, विष जीवन–रस में तुम्हारे? क्यों करुणा बनी क्रूरता तुम्हारी? किसने वीर को पहना दिया मुखोंटा आतंकी का? बोलिए...

ufrdrk % आज मनुष्य विज्ञान के पथ पर प्रगति का हाथ थामे तेजी से दौड़ रहा है। इंसानियत के लिए उसके पास समय कहाँ है?

ekuork % अपने आनंदमय जीवन की सुख–सुविधाओं में इतना खो गया है कि उसे केवल अपने स्वार्थ, लोभ और मोह ही दिखाई देता है...आज तो वह ईर्ष्या, द्वेष व हिंसा के भी अधीन हो गया।

eY; % भोग और विलास की जंजीरों में जकड़ा यह मानव किस दिशा की ओर जा रहा है, कौन कह सकता है?

lLdkj % यह मानव तो भूतकाल से जैसे कुछ सीखना ही नहीं चाहता या यूँ कहो कि वह अपने स्वार्थ के अधीन होकर सभी मानवीय मूल्यों का परित्याग कर देना चाहता है। सामाजिक नियम तथा कर्तव्य तो जैसे उसे अपने पाँव में पड़ी बेड़ियाँ लगते हैं। वह अपना भय तथा आतंक दिखाकर सभी को वश में कर लेना चाहता है।

ufrdrk % आज का मानव तो मानो आतंक के नए–नए स्वरूप विकसित करने में लगा है। लेकिन वह यह भूल गया है कि यह धरती स्वयं विधाता ने उत्पन्न की है तथा इसके पालन का भार भी ईश्वर पर है। इतिहास गवाह है कि जब–जब इस धरती पर अधर्म बढ़ा है, तब–तब अधर्म का नाश करने के लिए स्वयं ईश्वर ने जन्म लिया है। **½uiF; e vkokt vk jgh g&ekjk] ekjk bldkA ;s gh ftEenkj gA blu gh lc dN [kjkc fd;k g] ;s gh g] ekjk ekjkA rHkh ogk ,d vkneh io'k djrk gA mld diM QVs g vkj og ?kk;y gA og LVt ij vkdj lLdkj] ufrdrk] ekuork vkj eY; d lkeu fxj tkrk g vkj mul dgrk g¼**

0;fDr % बचा लो, बचा लो मुझे, ये मुझे मार डालेंगे, खून सवार है इन सभी पर। कहते हैं मैं ही जिम्मेदार हूँ इन सबका।

lLdkj % किन सबका?

0;fDr % मुझ पर आरोप है कि मैंने ही नैतिक मूल्यों को धराशायी किया है। मैंने ही बिगाड़ी है दशा समाज की, मैंने ही तहस–नहस कर दिया अनुशासन, मर्यादा, धर्म और भारतीय संस्कृति...मैंने ही...दया करो, बचा लो मुझो।

ufrdrk % पर तुम हो कौन?

0;fDr % मैं, मैं हूँ एक आम आदमी।

eY; % पर मेरे भाई कोई नाम तो होगा।

0;fDr % आप, मूल्य! आप मेरा नाम पूछते हैं? अरे कितने नाम गिनवाऊँ अपने बोलो...मैं, मैं एक अध्यापक हो सकता हूँ, एक...एक ईमानदार सरकारी नौकर हो सकता हूँ, एक देशभक्त, मैं रामप्रसाद, मुस्तफा, जार्ज कोई भी...मैं एक ईमानदार, आम आदमी हूँ...ईमानदार।

ekuork % अरे, आश्चर्य है, यदि तुम ईमानदार हो तो वे क्यों मार रहे हैं तुम्हें?

lLdkj % कौन हैं ये लोग बोलो। डरो नहीं कौन हैं...।

0;fDr % ये लोग हैं, भ्रष्टाचारी, कट्टरवादी, देशद्रोही, मिलावटखोर और नैतिक पतन के सूत्रधार।

ufrdrk % तो ये तुम्हें ही क्यों मारना चाहते हैं?

0;fDr % क्योंकि मैंने अध्यापक रूप में विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा, चरित्र और देखरेख दी है। शाश्वत काल से मैं अध्यापक इन्हें सही दिशा देता रहा हूँ। परंतु वर्तमान समाज में बसे इन दुर्गुणों से मेरा शिक्षार्थी भ्रमित हो गया है। सही और गलत का भेद खो चुका है।

हम जैसे अनेक राष्ट्रभक्तों ने हमारी सभ्यता, संस्कृति और नैतिक मूल्यों को सींचा है। विश्वास करो मेरा... विश्वास करो। परंतु आज! आज समाज भ्रमित होता जा

रहा है। आज आप सभी को भुला दिया गया है। और यदि कोई भूले से भी आपकी बात करता है, आपको धारण करना चाहता है तो ये भ्रमित लोग उसके पीछे पड़ जाते हैं।

eY; % तो तुम ये कहते हो कि ये लोग नहीं चाहते कि समाज में संस्कार, नैतिकता, मूल्य तथा मानवता का वास हो।

0;fDr % हाँ, और...और, इनकी इस कुचेष्टा के लिए इन सबको दंड मिलना चाहिए।

ekuork % दंड नहीं, आज आवश्यकता है, एक सर्वधर्म समाहित नैतिक शिक्षा की जो भावी पीढ़ी को दिशा दे। आवश्यकता है सामाजिक चेतना की, अच्छे व बुरे के अंतर की। माँग है मजबूत कानून व्यवस्था और अच्छे अनुशासन की जो ऐसी विकृत शक्तियों को (जो ऐसे समाजविरोधी तत्त्वों) दंडित कर सकें और सबसे बड़ी जरूरत है सद्भाव, संस्कार, नैतिकता, मूल्य तथा मानवता, राष्ट्रभक्ति की।

¼lLdkj] ufrdrk] ekuork rFkk eY; ml 0;fDr dk gkFk Fkkedj lxfBr gkdj vkx vk jg ykxk dk ihN [knM nrk g½

eY; % अब बोलो क्या चाहते हो...चलने दें जो घट रहा है या एकजुट होकर समाधान ढूँढ़ें।

lLdkj % तो आइए, हम बालकों को उपहार दें मूल्यों का जिससे वह अपनी महत्ता के साथ मित्र, अपने साथ बंधु तथा बड़ों को महत्त्व देना सीखे। उनके उचित विकास व चरित्र निर्माण के लिए घर में अनुशासन एवं संयम, आनंद एवं उत्साह तथा प्रेम एवं श्रद्धा का ऐसा वातावरण बनाए रखना चाहिए ताकि सद्गुणों का एक संगम बन जाए, जहाँ संस्कार का संवर्धन हो सके।

ufrdrk % हाँ! आज आवश्यकता है वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का पाठयक्रम बनाने की, उसकी प्रभावशाली अध्ययन प्रणाली की, सभी मानवीय रंगों के समावेश की तथा एक ऐसी विषय–वस्तु की जो सभी धर्मों पर आधारित हो। तभी भावी पीढ़ी अंधकार और प्रकाश के बीच के अंतर को समझ सकेगी। सही और गलत का पूरा ज्ञान होगा।

ekuork % समय की माँग है कि हर माता–पिता, शिक्षक वर्ग और संपूर्ण समाज एकजुट होकर, युवक–युवतियों को ऐसे नैतिक मूल्यों से, ऐसे रंगों से रंग दे कि जीवन–भर वे रंग स्वयं और समाज का सही मायनों में विकास करें।

eY; % चलो, नई सुबह का आरंभ करें, नया सूर्य, नया प्रकाश, नई ऊर्जा और नया सप्तरंगी इंद्रधनुष जो सुंदर भारत को प्रकाशित करे।

¼rhljk n`';½

¼lpkyd dk iqu% izos'k½

lpkyd % **¼n'kZdksa ls iNrk g½** तो क्या निर्णय लिया आपने? बोलिये? क्यों संवेदनहीन हो गए हैं आप? किसका भय सता रहा है आपको? इतने सबल, विकासशील देशवासी होने के बावजूद कमजोर हो गए, असहाय हो गए? मात्र मूकदर्शक बन क्यों जीवन व्यतीत कर रहे हो? किसकी प्रतीक्षा में हैं वर्तमान भारत? प्रतीक्षा है कट्टर धर्मपंथियों की जो मेरे प्रिय भारत की आत्मा में बसे धार्मिक सद्भाव को काट–काटकर भारतीय समाज को विक्षिप्त कर दें? प्रतीक्षा है उन सामाजिक विघटनकारी शक्तियों की जो महिषासुर बन संपूर्ण समाज का विनाश कर दें?

प्रतीक्षा कर रहे हो उस वक्त की जहाँ नैतिक मूल्य

धराशायी हो जाएँ और हमारी शांति, हमारी सद्भावना, हमारा विकास और प्रत्येक भारतवासी की विश्व व्याप्त मान प्रतिष्ठा धूल धूसरित हो जाए? बोलिए, क्या आप मेरी सभ्यता, संस्कृति, धर्म और विकास का विध्वंस चाहते हैं? यदि नहीं, तो जागिए, अपनी सुसुप्त अवस्था तोड़िए, चेतना का जागरण करिए। नैतिकता की भावना को हर पल सींचिए, तभी नए संस्कारों का वह सूरज मेरे भारत को 'नव प्रभात' देगा।

राम का जाप करिए,
अल्लाह की इबादत करिए,
गुरुद्वारे साहब में माथा टेकिए,
और ले लीजिए ईसा से सीख,
मुझे विश्वास है कि फिर जागेगा देश मेरा,
फिर नई ऊर्जा का होगा जन्म,
फिर बनेगी नैतिकता और मानवता जीवनशैली मेरी,
फिर जागृत होंगे मूल्य व संस्कार मानव में,
फिर सबल बनेगा देश मेरा,
जयहिंद! जय भारत!

¼ink fxjrk g½

अथश्री दिल्ली कथा

◈ i.kh rk
एस. डी. पब्लिक स्कूल
ताजपुर खुर्द, दिल्ली

पात्र-परिचय

l=ekkj	%	उम्र 45 वर्ष
'kjn	%	पति
lekk	%	पत्नी
vuU;k	%	बेटी
vut	%	बेटा
eV	%	अखबार वाला
njkxk i lkn	%	पड़ोसी

¼igyk n';½

(मंच पर अंधेरा, मंच पर पार्श्व से ट्रैफिक–गाड़ियों का शोर, बच्चों के लड़ने की आवाज मेट्रो के उद्घोषक की आवाज, पड़ोसियों के लड़ने की आवाज। फिर सूत्रधार के मंच पर प्रवेश करते ही आवाज बंद)

l=ekkj % शहर दिल्ली, लालकिला, कुतुब मीनार, इंडिया गेट, जंतर–मंतर, चाँदनी चौक, आई.टी.ओ., सदर बाजार, अजमेरी गेट, पहाड़गंज, सरोजिनी नगर, उत्तम नगर, जनकपुरी, लोटस टैंपल, आया नगर, कटवारिया सराय, बेर सराय, जे.एन.यू., तुर्कमान गेट, आजादपुर, मॉडल

टाउन, तिमारपुर, करावल नगर, बुराड़ी, नार्थ कैंपस, साउथ कैंपस... शहर, दिल्ली...कहते हैं इस शहर का अपना कुछ नहीं, लेकिन हैं सब दिल्लीवाले। बिहारी, जाट, गुर्जर, मद्रासी और मुसलमान, कोई दिल्ली का नहीं, लेकिन हैं सब दिल्ली वाले। शहर दिल्ली, यहाँ जेसिका, सौम्या, शिवानी, नैना और निर्भया तक को मार दिया जाता है। प्याज से सिर्फ आँसू नहीं, सरकार तक गिर जाती है। यह और बात है कि प्याज की न पूछो. ..काजू, किशमिश से भी महँगा सामान है। माफ कीजिएगा मुझे। मैं भी ना! दरअसल मैं दिल्ली वालों के प्यार, दुत्कार, दुलार और बाँकपन ले बड़ी हुई हूँ। नतीजतन दिल्ली मेरी है और मैं दिल्ली की। देश की राजधानी दिल्ली, 15 अगस्त, 26 जनवरी मनाते हैं। कभी मीडिया मैन, कभी मंकी मैन घूमते हैं। गणेश जी दूध पीते हैं... तो लीजिए मैं फिर बहक गई। आज दिल्ली में रोडरेज़, गुस्सा, हिंसा, गाली–गलौच होते देर नहीं लगती। सद्भावना और नैतिकता तो दिल्ली के लिए दूर की कौड़ी है, और तो और दिल्लीवाले कश का धुआँ उड़ाने, शराब की बोतल खोलने का गुमान लिए फिरते हैं ... आज शराब पीना, किसी को दिखाना और अवसरवादी होने में थोड़ा भी अपराध–बोध नहीं स्वीकारते...दिल्ली.. .ओए दिल्ली, ओह दिल्ली...ओए दिल्ली, ओह दिल्ली... ।

¼iLFkku½

lèkk % कितनी मुश्किल हो गई है; आदमी क्या खाए? क्या बचाए? इस महँगाई ने तो जीना हराम कर दिया है? मर्दों का क्या? आते ही माँगेंगे, खाने को कुछ है? खाने में आग लग...

vuU;k % कहाँ आग लगी है, मम्मा?

lèkk % रसोईखाने में।

vuU;k % तो अब क्या करें! फायर स्टेशन फोन करो मम्मा!

lèkk % इत्ती सी जान और अक्ल की खान! अरे नानी, महँगाई की आग लगी है।

vuU;k % महँगाई मीन्स...

lèkk % तू नहीं समझेगी? अभी बच्ची है तू।

¼vuqt dk xqLls esa izos'k½

vuqt % मैं साले का मुँह तोड़ दूँगा।

vuU;k % छिः...अनुज गाली बकता है।

lèkk % क्या हुआ बेटा?

vuqt % मुझे सोनू के साथ नहीं खेलना। साला बेईमान चीट करता है। टॉस मैं जीता, तो बोला नहीं, पहले मैं बैटिंग करूँगा। तो अपने विकेट ग्राउंड से उठा ले गया...साला।

lèkk % बेटा, गाली नहीं निकालते मुँह से। गंदी बात।

vuqt % क्यों गंदी बात! पापा भी तो साला, साला बोलते हैं, उन्हें क्यों नहीं टोकते।

¼nwljk n`';½

¼rHkh njokts dh ?kaVh ctrh gS½

lèkk % आती हूँ। आती हूँ... अरे दरोगा प्रसाद जी, कैसे हैं? कैसे आए? अभी अनुज के पापा ऑफिस से घर नहीं लौटे।

njksxk izlkn % मैं शरद जी से नहीं, आपसे मिलने आया हूँ।

lèkk % हाँ कहिए।

njksxk izlkn % आपके बेटे ने सोनू के सर पर बैट मार दिया! सोनू घायल है। उसके माथे पर बारह टाँके लगे हैं। अपने बच्चे को समझा दीजिए; ये मार–पीट वो भी इस उम्र में ठीक नहीं है।

lqèkk % ओ! तो आप अनुज की शिकायत लेकर आए हैं। देखिए दरोगा प्रसाद जी, बच्चों की लड़ाई में हम बड़ों को नहीं पड़ना चाहिए। आज के बच्चे कोई संत–साधु तो हैं नहीं। गलती दोनों तरफ से रही होगी...खामख्वाह सिर्फ अनुज को दोषी न बनाइए। माना उसे मारपीट नहीं करनी चाहिए लेकिन आपका सोनू भी कोई दूध का धुला नहीं है...हाँ...सोसाइटी में अमन–चैन से रहना है तो मिट्टी डालिए इन बातों पर...बाकी हॉस्पीटल का जितना खर्चा हुआ है, हम दे देंगे...नमस्कार!

njksxk % देखिए मैडम, मेरा मकसद यहाँ अनुज की शिकायत लगाना नहीं था। लेकिन बच्चों की ऐसी हरकतों पर माँ–बाप परदा डालेंगे तो बच्चों में नैतिकता और सद्भावना जैसे गुण कहाँ से आएँगे?

lqèkk % हमने अपने बच्चों को खूब अच्छे संस्कार दिए हैं, आपकी शिक्षा की जरूरत नहीं हमें। अब आप जाएँ।

¼njksxk iz lkn d iLFkku d ckn½

अनुज! तुमने सोनू को बैट मारा?

vuqt % हाँ मम्मा! वो आपको गाली दे रहा था।

lqèkk % **¼FkIiM ekjdj½** मैंने कितनी बार कहा कि सोसायटी के लड़कों के साथ मत खेलो; सारे लोअर क्लास हैं। इनको भी इसी सोसायटी में हार मिली थी। खबरदार अनुज, जो इस सोसाइटी के बच्चों के साथ घुलने–मिलने की कोशिश की। **¼?kaVh ctrh g 'kjn dk iosa'k½**

'kjn % अरे सुधा! मैं ये क्या सुन रहा हूँ; अनुज ने सोनू को बैट से मारकर सर फोड़ दिया।

lqèkk % ओह! अब तो ये खबर आजतक पर भी टेलीकास्ट होगी। राई का पहाड़ बनाना इन सोसाइटी वालों से कोई सीखे। अरे कुछ नहीं; बच्चों का झगड़ा था,

थोड़ी मारपीट हो गई। मैंने अनुज को डाँटा और थप्पड़ भी मारा। अब जान तो नहीं लूँगी इसकी।

'kjn % चलो छोड़ो। ये बताओ खाने को क्या है? बड़ी भूख लगी है।

lèkk % कुछ लाकर रखेंगे तभी तो कुछ रहेगा।

'kjn % अब मूड न खराब करो। कुछ दो। सुबह से शाम तक बॉस की झक–झक सुनो और शाम को मैडम की।

lèkk % चाय लाऊँ या फिर लाए हो?

'kjn % चाय रहने दो, चिप्स तल लो, मैं पी–नट्स लाया हूँ...।

lèkk % मैंने कितनी बार कहा, घर में बच्चे बड़े हो रहे हैं, मत लाओ घर पर।

'kjn % अरे हमारे बच्चे जेनरेशन नेक्सट के बच्चे हैं? और शराब पीना बुरा तब है जब पीकर ड्रामा करो; पत्नी को मारो, बच्चों को पीटो। मैं तो इन्ज्वॉएमेंट के लिए पीता हूँ। मैंने कभी पीकर तुम पर गुस्सा किया? नहीं ना! 'सो चिल्ल स्वीटहार्ट'! शराब पीकर हँगामा 'कैटल क्लास' लोग करते है। अब मूड का सत्यानाश न करो...।

vuU;k % आज आप फिर शराब लेकर घर आए? मेरी मैडम कहती है कि शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

'kjn % बेटा अनन्या, अभी तुम छोटी हो। तुम नहीं जानती शराब पीकर लॉजिकल बातें करना हाई–क्लास को रीप्रजेंट करती है। जाओ तुम पढ़ाई करो।

lèkk % तुम्हारे रोज के इस खर्चे ने घर का बजट बिगाड़ दिया है।

'kjn % बेटा अनन्या! जब अमेरिका मंदी में जा रहा है तो घर का बजट बिगड़ा तो क्या बिगड़ा! देखो! मैं शराब पीने के लिए ऊपरी कमाई करता हूँ, मेहनत का सारा मेहनताना तुम्हें ईमानदारी से देता हूँ...उस पर कभी

शराब की नजर नहीं पड़ने देता हूँ। तुम्हें मालूम है ना, तो प्लीज चिक–चिक न करो। वैसे भी दिल्ली है ये मेरी जान, यहाँ दौलत, शोहरत, हिम्मत, खूबसूरती या शराब किसी नशे में तो जीना पड़ेगा। **¼rHkh uiF; l jku&fpYyku dh vkokt vkrh g½**

'kjn % देखा सुधा! ये शोर–शराबा किस चीज का है?

lèkk % वो दरोगा प्रसाद के यहाँ पुलिस आई है? दरोगा प्रसाद को गिरफ्तार करके ले जा रही है?

'kjn % क्यों भला?

lèkk % वो तो सुबह पता चलेगा; आप जल्दी से खत्म करके। खाना खाकर सो जाओ। कल ऑफिस भी जाना है। मैं बच्चों को खिलाकर सुला देती हूँ। तब तक। जल्दी करना।

¼rhljk n';½

¼lcg dk okrkoj.k] v[kckj oky dk io'k½

eV % **¼v[kckj okyk½** साहब जी, दूध और अखबार।

'kjn % मंटू कल दरोगा बाबू के यहाँ पुलिस क्यों आई थी?

eV % अरे उनका बेटा शराब पीकर गाड़ी चला रहा था; तीन लोगों को ठोक दिया उसने! पुलिस इसलिए दरोगा प्रसाद को ले गई।

'kjn % हूँ...लोगों को भी ना पता नहीं शराब कैसे चढ़ जाती है। टोटली मीडिल क्लास मैंटेलिटी!

eV % तो आपको नहीं चढ़ती शराब!

'kjn % मैं कहाँ पीता हूँ...?

eV % हाँ! शायद भाभी जी पीती होंगी, तभी कूड़े से शराब की बोतलें निकलती हैं।

'kjn % क्या बकवास करता है, साले, कुत्ते कुछ भी बके जा रहा है।

eV % देखो साहब गाली मत दो।

'kjn % ओ! बिहा...की औलाद! कमीने बड़े लोगों से बात करने की तमीज नहीं! नाली का कीड़ा...

eV % साहब बहुत बोल चुके। चुप हो जाओ, वरना...

'kjn % वरना, क्या बे? धमकी किसको देता है...? तेरा बापू हूँ मैं...

¼eV xLlk djrk g] ifyl vkrh g½

l=èkkj % शहर दिल्ली! हालाँकि यह दृश्य भारत के किसी भी शहर का हो सकता है। देश को आजाद हुए 70 साल हो गए। देश बदला; देश का मिज़ाज, शिक्षा, स्वभाव सब बदल गया। अब सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति बीते जमाने के जुमले भर रह गए हैं। दोस्तो, बड़ा सीधा सा हिसाब है–जीवन में नैतिकता नहीं तो सद्भावना निल है; सद्भावना बिना नैतिकता माइनस है और सद्भावना–नैतिकता को नशे की आदत खा जाती है।

राजनीति से नैतिकता गई, सद्भावना दूर की कौड़ी। समाज में नैतिकता और सद्भावना आज हास्यास्पद शब्द हैं। सद्भाव और नैतिकता दामन छोड़ धर्मान्ध हो गई। शहर दिल्ली रोडरेज़, बलात्कार, हिंसा, द्वेष और अत्याचार सबके मूल में सद्भावना और नैतिकता रहित जीवन और नशा सहित खुमारी है। अथश्री दिल्ली कथा जारी है।

¼ink fxjrk g½

समय : एक मूकदर्शक

◈ Hkjr u:y
एन. के. अकादमी
नागपुर, महाराष्ट्र

पात्र-परिचय

le;, 'k[kkl|j] okuj] le; d dkV nl ik=

¼le; d dkV ep ij [kM g] rHkh 'k[kkl|j vkj okuj dk iO'k gkrk gA nkuk xfr l pyr gA rHkh okuj Fkd tkrk g vkj #drk g½

okuj % बस महाराज बस...।

'k[kkl|j % अरे वानर इतने में ही थक गया।

okuj % महाराज पिछले दो युगों से निरंतर तो चल रहे हैं। थकान तो होगी ही। थोड़ा आराम कर लूँ। **¼[kjkV ekjrk g vkj 'k[kkl|j okuj dk ykr ekjrk g½**

'k[kkl|j % **¼g|lrk g vkj okuj dh rjQ n[k dj dgrk g½** अरे वानर, उठ अभी और चलना है।

okuj % लेकिन महाराज हम हैं कहाँ?

'k[kkl|j % अरे वानर हम हैं कलियुग में।

okuj % कलियुग में!

'k[kkl|j % हाँ कलियुग में!

okuj % लेकिन महाराज यहाँ हम करेंगे क्या?

'k[kkl|j % **¼g|lrk g½** अरे वानर, पिछले दो युगों में हमने जैसे आतंक

फैलाया, लोगों को मारने पर मजबूर किया, वैसा ही आतंक, भ्रष्टाचार, अत्याचार अब इस कलियुग में करेंगे। त्रेता युग में राक्षस बनके तो द्वापर युग में कंस–शकुनि बनके और अब इस कलियुग में आया हूँ भ्रष्टचार, अत्याचार, आतंकवाद बनके। **¼tkj l gl rk g½**

okuj % **¼?kcjkrk g!½** तभी उसका ध्यान घड़ी के काँटों की तरफ जाता है और उन्हें गौर से निहारता है। घड़ी के काँटों के साथ खेलने लगता है। तभी झूलते हुए नीचे गिरता है। घबराकर शंखासुर के पास आता है और पूछता है, महाराज ये कौन है?

'k[kklj % ये, ये है समय के काँटे।

okuj % समय के काँटे?

'k[kklj % हाँ–हाँ समय के काँटे और उसे देख वो जो है ना जिसकी गर्दन पिछले दो युगों से झुकी हुई है वह है समय। **¼gl rk g½** देख वानर कैसे पड़ा। अरे, ये देख तो सकता है लेकिन कुछ कर नहीं सकता। अरे वानर इसकी इस दशा का कारण सिर्फ और सिर्फ मैं ही हूँ। **¼gl rk g½**

okuj % महाराज आप!

'k[kklj % हाँ वानर मैं, लेकिन देख कैसे बैठा है और कुछ कर भी तो नहीं सकता, सिर्फ देख सकता है। **¼gl rk g½** अब वानर तू बस देखता जा, मैं कैसे इस कलियुग में हाहाकार मचाता हूँ। कभी भ्रष्टाचार, कभी अत्याचार तो कभी बुरी आदतें बनकर इनको यातना दूँगा। **¼gl rk g] gl r&gl r 'k[kklj vkj okuj ihN tkr g½A**

le; % **¼fujk'k eu l½** देखा आपने, पिछले दो युगों से यह सब देखता आ रहा हूँ। त्रेता युग में राक्षसों द्वारा

नरसंहार, द्वापर युग में राजकारण और संबंधों का हरण और उसमें से निकला असंतोष और अब इस कलियुग में जहाँ–तहाँ फैला हुआ भ्रष्टाचार, अत्याचार सब कुछ मेरे सामने, लेकिन...लेकिन मैं कुछ न कर सका, वैसा ही जैसे त्रेता युग में लाचार था, द्वापर युग में मजबूर था और इस कलियुग में मूक। अब सहन नहीं होता। **¼jksrk gS½** लेकिन **¼FkksMh [kq'kh ds lkFk½---**लेकिन मुझे आज भी याद है त्रेता युग में वो यज्ञ की ध्वनि, मुनियों द्वारा वो वेदों की वाणी, आ हाँ–हाँ वो मधुर ध्वनि, चारों ओर मंगलमय वातावरण। **¼le; ds dkVs viuh fLFkfr cny dj _f"k&eqfu curs gSA pkj yksx ;K ds lehi cSBrs gSA ;K dh èofu e=ksPpkj rHkh jk{kl vkrs gS vkSj ;K dks rgl&ugl djrs gSA ujlagkj djrs gSA ;e vkrk gS vkSj lkeus [kMk gksrk gS vkSj mlds ihNs ejs gq, yksx [kMs gksrs gSA j?kqifr jk?ko jktkjke dh èofu½**

le; % ¼fujk'k gksdj bèkj&mèkj ns[krk gS vkSj viuh ihMk O;Dr djrk gS½ त्रेता युग में ऋषि–मुनियों द्वारा विश्व शांति के लिए यज्ञ की आहूति और इस राक्षस ने कुछ ही क्षणों में सब नष्ट कर दिया। नफरत का जहर, मंथरा की कुटिल राजनीति, रावण की अनैतिकता सब अपने मन में दबाए बैठा है। ये सब कुछ होता रहा लेकिन मैं समय कुछ ना कर सका। लाचार था, मजबूर था, बस देखने के अलावा कुछ न कर सका। सिर्फ देखता रहा एक मूकदर्शक बनके। **¼jksrk gS½A ¼rHkh og gf"kZr gksrk gS vkSj izlUu eu ls dgrk gS½** मुझे आज भी याद है वो द्वापर

युग, कृष्ण की वो लीलाएँ, गोपियों का रास, आ हाँ–हाँ वो कौरवों का और पांडवों का भाईचारा।

¼xkfi;k dk jkl gkrk g vkj dkjok vkj ikMok dk feyu ÑfrLo:iA rHkh 'k[kkl dl vkj 'kdfu dk :i ydj vkrk g vkj foèoal djr g] 'k[kkl lkeu [kMk gkrk gA ihN lHkh ejs g, ykx [kM gkr g] j?kifr jk?ko jktkjke dh èku½

le; % ¼lHkh dk fugkjrk g] fujk'k eu l dgrk g½ काश! मैं अंधा होता। ये देखने से पीड़ा तो नहीं होती। कृष्णावतार में वो आनंद की अनुभूति, कौरवों–पांडवों का आपस में लगाव लेकिन फिर एक बार वही इतिहास दोहराया गया। बुराई की जीत हो गई। कंस के द्वारा विध्वंस और संबंधों की दरार में सब नष्ट हो गया। अनैतिकता तो जैसे चरम सीमा पर थी। चारों ओर मौत का तांडव किया गया...और मैं देखकर भी कुछ न कर सका। यही पीड़ा मन में दबाए रखी है, यह सब कुछ होता रहा लेकिन फिर से एक बार बना मूकदर्शक।

le; % मैंने प्रवेश किया कलियुग में। एक और आनंद की अनुभूति। जहाँ–तहाँ हरियाली यहाँ का हर मानव आनंदित था।

¼tgk Mky&Mky ij lku dh vkj ?kMh d dkV Ñfr djr g½

सुंदर वनों से सज्जित ये वसुंधरा थी। दुःख का तो नामोनिशान न था। खेत में हल चलता। वह किसान और उसके मुख से निकलने वाला वह सुर।

¼ejs n'k dh èkjrh & ?kMh d dkV fdlku cur g & ÑfrLo:i½

le; % देश का हर नौजवान सीमा की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करने वाला था।

¼,s oru] ,s oru] gedks rqjh dle & ?kMh dkVs Ñfr djrs gS½

सुंदर धरा को फिर से नजर लगी इस राक्षस की। इस सुंदर वसुंधरा में भ्रष्टाचार, अत्याचार, नशीली दवा के रूप में जन्म लिया इस महापापी क्रूर ने।

¼fdlku vkRegR;k djrk gSA ukStoku Mªx dk u'kk djrk gSA vR;kpkj djrk gSA lc vkj fouk'k gh fouk'kA 'kk[kkl j vkx vkrk gSA mlds ihNs lHkh ejs g,] ykxA j?kqifr jk?ko èofu½

आज फिर इतिहास ने अपनी दस्तक दी। देखते–देखते सब नष्ट हो गया। मेरे प्रभु ने वसुंधरा की ऐसी कल्पना तो नहीं की थी। मेरी वसुंधरा ऐसी तो नहीं थी। सृष्टि निर्माता ने वसुंधरा का निर्माण किया। इंसान का निर्माण किया था, न कि आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अनैतिकता का। तो फिर इंसान ही इंसान का दुश्मन क्यों बना? मैं हमेशा सुनता हूँ समय के साथ सब बदल जाता है लेकिन नहीं। त्रेता युग के उस पावन वातावरण की मैंने अनुभूति की है। उन मंगलमय क्षणों का मैं साक्षी हूँ, लेकिन अत्याचार की, आतंकवाद की आँधी, मंथरारूपी वह भ्रष्टाचार, रावण रूपी वह आतंकवाद, कंस रूपी वह नरसंहार कैसे भूल जाऊँ। पीड़ा तो होती है। कैकेयी को बहकाने वाली मंथरा, दुर्योधन को बहकाने वाला शकुनि ये तो अपने थे। जनता पर राज करने वाले नेता तो अपने ही हैं। लेकिन स्वार्थ ने इन्हें इतना अंधा कर दिया कि अपनों को ही धोखा दिया। अरे सीमा पार का शत्रु दिखता

तो है, लेकिन घर में बैठा हुआ दुश्मन कैसे पहचाने? हर कोई अपने स्वार्थ के लिए जीता है। नैतिकता की जैसी अर्थी पड़ी हो, सीमा पर लड़ने वाला सैनिक शहीद होता है तो उसकी भी आत्मा रोती होगी कि जिस मातृभूमि के लिए मैंने बलिदान दिया, उस मातृभूमि का इंसान स्वार्थ में इतना डूबा है कि उसे अपनों की भी परवाह नहीं।

le; % **¼le; mBdj [kMk gkrk g vkj ub Åtk d lkFk½** नहीं, अब और नहीं अन्याय सहने वाला। अन्याय करने वाले से ज्यादा दोषी होता सहने वाला। देश को स्वतंत्रता दिलाने वाले बापू ने हमें अहिंसा का पाठ पढ़ाया, नैतिकता की शिक्षा दी। सत्य और अहिंसा की परिभाषा जिसका इंसान अनुसरण करे तो इस देश में भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अनैतिकता का नामोनिशान न हो। शंखासुर जैसे तत्त्व का विनाश करना ही होगा। बापू, मैं आपको आह्वान करता हूँ। मेरे इस संसार को शंखासुर के आतंक से मुक्त कीजिए। हमारी युवा पीढ़ी को दिशा दिखाने आपको फिर से जन्म लेना पड़ेगा। इस संसार को आपकी जरूरत है। **¼lHkh ik= dey d vkdkj dk LVp cukr g vkj mle l xkèkh th idV gkr gA ^o".ko tu rk ru dfg; tk ihM ijk;h tku j* xhr xtu yxrk gA**

¼ink fxjrk g½

जरा सोच-समझकर

◈ **ehu 'kek**
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
अशोक विहार, फेज–4, दिल्ली

पात्र-परिचय

l=èkkj&1	**y[kd**
l=èkkj&2	**fun'kd**
0;fDr&1	**ghjkbu**
0;fDr&2	**lkl**
0;fDr&3	**cgw**

¼igyk n`';½

¼dN ykx eneLr [k'kh l xhr xk jg g½

xhr % मंद हिलौरे लेत बहै पुरवाई...
मेरे भाई मिलकर गाना मेरे भाई...
¼nk l=èkkj io'k djr g½

l=èkkj&1 % खामोश...।
रुक जाओ...।
आगे मत बढ़ो...।
अपने कदमों के नीचे देखो...
क्या दिखा...?

l=èkkj&2 % आदमी...बच्चे...
¼fpYykdj½ आजादी के 70 वर्ष और सवा सौ

करोड़ लोग! ¼èkDdk nrk g½ बड़ी भीड़ है हटो हटो, पीछे हटो...।

l=èkkj&1 % जनसंख्या बढ़ रही है, महँगाई ठहाके लगा रही है। आजाद हिंद में सब कुछ बढ़ रहा है तो...।

l=èkkj&2 % तो कम क्या हो रहा है? सोचो–सोचो, तुम सवा सौ करोड़ हो। ¼lc ,d&nlj dk n[kdj lkpr g½ हाँ अहसास...

तुम्हारे दिलों में नैतिकता का अहसास। सद्भावना का अहसास कम हो रहा है। सब तरफ स्वार्थ। धन कमाने का स्वार्थ। धन बचाने का स्वार्थ। स्वार्थ से पनपती नफरतें।

lHkh % नफरतें...?

l=èkkj&1 % हाँ इंसान को इंसान से नफरत, पड़ोसी को पड़ोसी से नफरत, देश को देश से नफरत।

0;fDr&1 % तो ये नफरतें कम कैसे होंगी?

0;fDr&2 % क्या हम इन नफरतों से डरकर भाग जाएँ?

l=èkkj&2 % भाग नहीं जाएँ, जाग जाएँ। अपने हृदय में नैतिकता के फूल खिलाएँ, सद्भावना से अपने व दूसरों के जीवन में खुशियाँ लाएँ।

0;fDr&3 % वो कैसे?

nkuk

l=èkkj % ऐसे...¼b'kkjk djr g vkj LVt d ihN py tkr g½

¼nlj n';½

¼,d fQYe Mk;jDVj] y[kd o ghjkbu vkr g] ckr dj jg g½

y[kd % बस यूँ समझो कि इस फिल्म के बाद बॉलीवुड में ही नहीं हॉलीवुड तक तुम्हारी डिमांड बढ़ जाएगी।

ghjkbu % वो तो ठीक है पर यह तो एक गरीब किसान की कहानी है। इसमें हिंसा और अश्लीलता की इतनी अधिक भरमार क्यों है?

fun'kd % अरे, किसान की कहानी तो बहाना है। असली मुद्दा तो क्राइम और सैक्स है। अरे, इस फिल्म को देखकर तो पत्थरों में भी जान आ जाएगी। अगर सैंसर कैंची चलाना भी चाहेगा तो पैसे की ताकत से फिल्म को पास करवा लूँगा।

ghjkbu % यानी तुम पैसे के बल पर इस फिल्म को घर–घर में बच्चे–बच्चे तक पहुँचाना चाहते हो। सत्यं शिवम् सुंदरम् कितना सुंदर नाम है। एक सुझाव है सर। हम जीवन के सुंदरतम् सत्य को, नैतिकता और सद्भावना को आधार बनाकर किसान की कहानी में परोपकारी किसान को देवतुल्य दिखाकर अन्न का महत्त्व भी समझा सकते हैं।

fun'kd % **¼tkj ls gl rk g½** माई डियर हीरोइन, मैं पैसा कमाने के लिए फिल्म बनाता हूँ। नैतिकता, सद्भावना से प्रेमचंद को श्रद्धांजलि नहीं दे रहा। तुम एक करोड़ का चैक पकड़ो और समाज सेवा का काम भूल जाओ।

ghjkbu % नहीं...मैं सोने के घड़े में जहर बेचने का काम नहीं करती। **¼pd QkM+ nrh g½** जिस दिन नैतिकता, सद्भावना, मानवीय मूल्यों से भरपूर नैतिक फिल्मी साहित्य की रचना करो तो उस दिन मुझे याद कर लेना।

lHkh % वाह...वाह...क्या बात कही है, हाँ भाई, घर–घर में नैतिक कला साहित्य पहुँचाने का तरीका यही है।

¼lHkh rkfy;k¡ ctkrs gSa½

lw=èkkj&1 % हम भाग्यशाली हैं जो आजाद देश में श्वास ले रहे हैं। आज देश–प्रेम बलिदान देना नहीं बल्कि नैतिक मूल्यों द्वारा कर्तव्य–पालन करके प्रेम व सद्भावना से देश को संभालना है।

lw=èkkj&2 % अपनी कला व कर्मों का नीतिपूर्वक उपयोग करके हम वर्तमान पीढ़ी को श्रेष्ठ उदाहरण दे सकते हैं। उन्हें नैतिकता और सद्भावना से जीने का संदेश दे सकते हैं।

lHkh % पर हम तो आम आदमी हैं। भला ऐसी मिसाल कैसे दे सकते हैं?

lw=èkkj % तो चलो आम आदमी के घर चलते हैं।

¼rHkh nks fL=;k¡ yM+rh gqbZ] izos'k djrh gSa½

lkl ¼L=h&1½ % आए हाय...एक दिन कूड़ा सड़क पर फेंक दिया तो क्या आफत हो गई? तूने क्या मौहल्ले की सफाई का ठेका ले रखा है?

cgw % माँ जी, हर गली, हर मौहल्ला, हमारे देश का हिस्सा है। इसलिए हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने मौहल्ले को साफ रखें तो एक दिन देश स्वयं ही साफ–सुथरा बन जाएगा।

lkl % पर तू बंटी पर भी नाराज हो रही थी, वो तो कूड़ा नहीं फैला रहा था।

cgw % माँ जी, वो पौधे कुचल रहा था। इसीलिए मैं उसे समझा रही थी कि पेड़–पौधे पर्यावरण की रक्षा करते हैं। हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम नए–नए पौधे भी उगाएँ और पौधों, वृक्षों की रक्षा भी करें।

Ikl % हाँ, बात तो सही है। एक स्वस्थ सुरक्षित भविष्य के लिए हमें पहले अपने वर्तमान को सुरक्षित करना चाहिए। यह काम नैतिकता और सद्‌भावना से ही पूरा हो सकता है।

IHkh % वाह–वाह...वाह–वाह क्या बात कही है। हाँ भई, भविष्य बचाने का रास्ता यही है। हम गर्व से कहते हैं–हम भारतीय हैं। नैतिकता, सद्‌भावना से जीना हमारा कर्तव्य है।

IHkh % **¼gkFk tkMdj vkr gA ep ij vkdj ,d IkFk dgr g½** धन्यवाद...।

¼ink fxjrk g½